

Postal Regn. No. C.G./RYP DN/65/2022-24  
रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका  
प्रकाशन तिथि, 1 मई 2023

आर.एन.आई.पंजीयन क्र.  
CHHHIN/2017/72506

# किलोल

वर्ष 7 अंक 5, मई 2023



<http://www.kilol.co.in>



म. नं. 580/1, गली न. 17 बी,  
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर  
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य  
खुदरा 80/-  
वार्षिक 720/-  
आजीवन 10000/-

संपादक- डॉ. रचना अजमेरा

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू,  
नीलेश वर्मा, धारा यादव, डॉ. शिप्रा बेग, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, वाणी मसीह, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

कुन्दन लाल साहू

अपनी बात

प्यारे बच्चों एवं शिक्षक साथियों,

हमारे देश में मई का महीना भीषण गर्मी वाला होता है. जो हमारे लिए एक नया अवसर लेकर आता है, जब हमारे चारों तरफ नदी, तालाब, पोखर सूखने लगते हैं, तब पानी के अभाव में पेड़ पौधों सूख जाते हैं. ऐसे समय में हमें अपनी सूझ-बूझ का उपयोग करते हुए छोटे-छोटे जीव जंतुओं की रक्षा करने का संकल्प लेकर उन्हें दाना पानी देने की आदत विकसित करना होगा.

बच्चों, गर्मी की अधिकता के कारण हमारे विद्यालयों में लगभग एक डेढ़ माह का अवकाश रहता है. भीषण गर्मी से अपने आप को बचाकर रखें.

अपने घर पर ही रह कर अपनी रुचि अनुसार कुछ नई चीज सीख सकते हैं- जैसे गीत, संगीत, अभिनय, पेंटिंग, खेल, आस-पास के कामगारों के कार्य जो हमारे लिये जीवकोपार्जन साधन बन सकें.

मुझे विश्वास है आप इस तरह से अपनी छुट्टियों का उपयोग सार्थक रूप से करेंगे. और हाँ, किलोल के प्रति अपना प्यार बनाएँ रखें. नियमित अपनी रचनाएँ भेजें व किलोल पढ़ें.

आपकी अपनी  
डॉ. रचना अजमेरा

संस्थापक- डॉ. आलोक शुक्ला

मुद्रक कीरत पाल सलूजा तथा प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा

विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में.

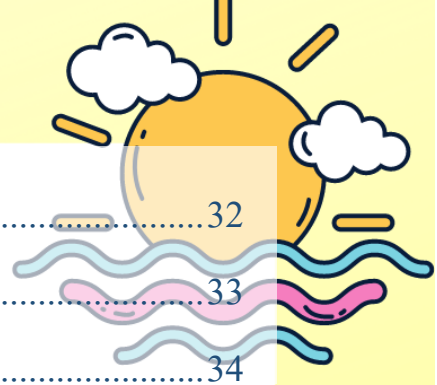
सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित  
तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित,  
संपादक डॉ. रचना अजमेरा.

## अनुक्रमाणिका



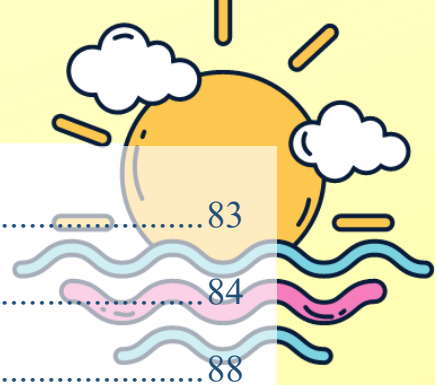
हाथी .....	8
मेरा डॉगी .....	9
फिर गर्मी आ गई .....	10
पंचतंत्र की कहानी .....	12
धूम मचाते आम .....	14
बंदर गया बाल कटाने .....	15
तोता .....	17
अधूरी कहानी पूरी करो .....	18
सच्ची सुंदरता .....	18
आस्था तंबोली, कक्षा 3, जांजगीर द्वारा पूरी की गई कहानी .....	19
सतीश "बब्बा", उत्तर – प्रदेश द्वारा पूरी की गई कहानी .....	19
मनोज कुमार पाटनवार, बिलासपुर द्वारा पूरी की गई कहानी .....	21
संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी .....	21
अगले अंक के लिए अधूरी कहानी .....	23
राजा की बीमारी .....	23
दादा जी .....	24
चिड़िया प्यारी .....	26
काकभगोड़ा .....	27
चित्र देख कर कहानी लिखो .....	29
संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी .....	30
स्कूल के दिन .....	30
अनन्या तंबोली, कक्षा सातवीं द्वारा भेजी गई कहानी .....	31
श्रीमती रामेश्वरी सीके जलहरे, बलौदा बाजार द्वारा भेजी गई कहानी .....	32





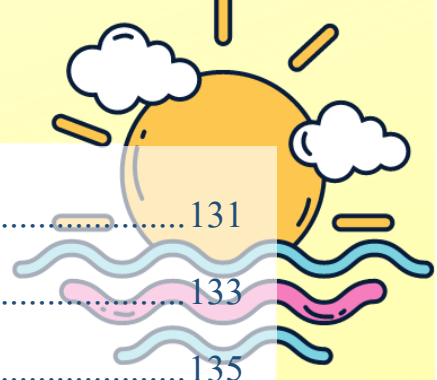
दोस्तों संग आम का मज़ा.....	32
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र.....	33
जीवन चक्र.....	34
पैदा क्यों होते नहीं, भगत सिंह से लाल .....	36
हाथी की दावत .....	38
बाल पहेलियाँ.....	39
त्यौहार .....	41
है वादा.....	44
लकड़ी उड़ चली .....	46
शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला कोलिहापुरी दुर्ग के बच्चों द्वारा भेजी गयी कहानियाँ .....	48
शब्द बाण .....	57
22 मार्च जल दिवस .....	58
हमर नवां साल हा .....	61
बताओ उसका नाम .....	62
आदतें बदलिए पानी बचाइए.....	63
भटके मानव .....	66
मैं रंग बिरंगी फुलवारी हूँ.....	67
ऐ मौसम, क्यों डराते हो.....	69
दुनिया माने .....	71
बस यही तो खूबसूरत खेल है.....	72
प्रकृति .....	74
गरमी .....	76
पर्यावरण संरक्षण .....	78
महिलाएँ: सामाजिक परिवर्तन की अग्रदूत .....	80





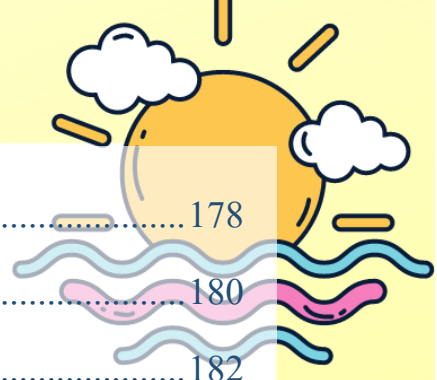
दिखावे का नकाब .....	83
खुशहाली और अखंड सुहाग का पर्व: 'गणगौर' .....	84
वृक्ष .....	88
भारत अब फिर बनेगा, सोने की खान .....	89
अच्छे और बुरे वक्त .....	90
20 मार्च: विश्व गौरैया दिवस .....	92
पेड़ .....	95
लड़किया लीडर बनेगी तभी उनकी दुनिया बदलेगी .....	97
बाल पहेली .....	99
जनऊला .....	101
रंग .....	104
कभी न छोड़े काम अधूरे .....	106
घर .....	108
विचार .....	110
पानी का मूल्य और मानव को समझना है .....	111
भूकंप की तैयारी .....	113
गौरैया .....	116
छत्तीसगढ़ी बाल कविता .....	117
सबक .....	119
पतंग .....	121
गुमशुदा रोहित और उसकी टोपी .....	123
साठ की उम्र में भी फिट .....	125
बाल पहेलियाँ .....	127
शिक्षा का महत्व .....	129



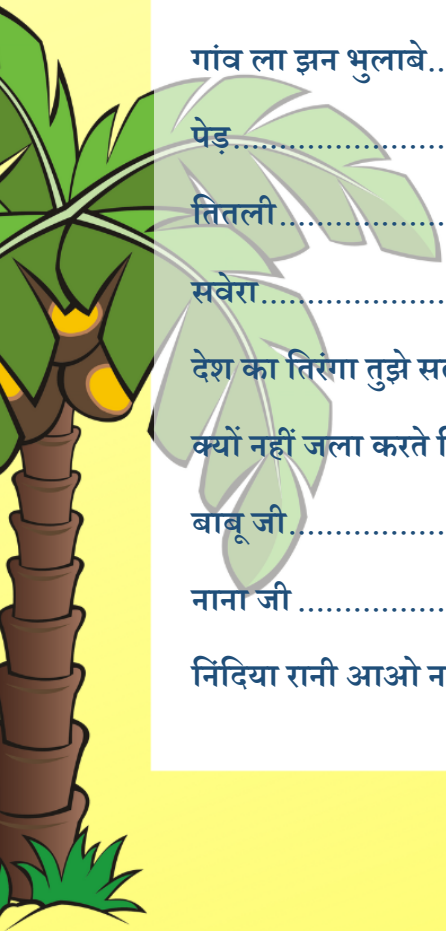


शादी का विज्ञापन.....	131
बिटिया रानी जिज्ञासा .....	133
स्कूली यादें .....	135
माँ.....	137
पढ़ई तुंहर दुआर.....	139
बंदर करने चला शादी.....	141
हमको बस पढ़ना है.....	143
पुरस्कारों का बाजार .....	145
पापा .....	148
जीत-जीत सोच .....	149
सब विषयों में मेरिट पाई .....	151
पर्यावरण .....	153
पोखर सा रहना सीखें .....	155
नन्हीं सी आशा .....	157
मैं मैं का विकार अज्ञान का ढारा है .....	159
नाव.....	160
मेरी मृत्यु के बाद.....	162
याचना .....	164
कहां कोई रोक पाता .....	166
सील अऊ लोढ़ा .....	168
अक्षर ज्ञान .....	169
एकता अखंडता भाईचारा दिखाना है.....	171
मनखे के जिनगी मा सिक्का .....	173
बाल पहेलियाँ.....	176





हाइकु .....	178
दस्तक गर्मी की .....	180
सेहत का राजा टमाटर .....	182
क्यों ना आती चिड़िया.....	184
किताबें हैं वरदान .....	186
हमर बबा .....	188
पनही .....	190
नरवा .....	192
चिरईजाम के रूख .....	193
मेरा गाँव सबसे प्यारा है .....	194
आओ-आओ प्यारे बच्चों .....	196
ग्रीष्म ऋतू आई है.....	197
चलो करें पढ़ाई अब .....	198
मैं परिदा हूँ.....	199
छत्तीसगढ़ के बासी .....	201
गांव ला झन भुलाबे.....	203
पेड़.....	205
तितली .....	206
सवेरा.....	207
देश का तिरंगा तुझे सलाम .....	208
क्यों नहीं जला करते चिराग अंधेरो में.....	210
बाबू जी.....	211
नाना जी .....	212
निंदिया रानी आओ न .....	213



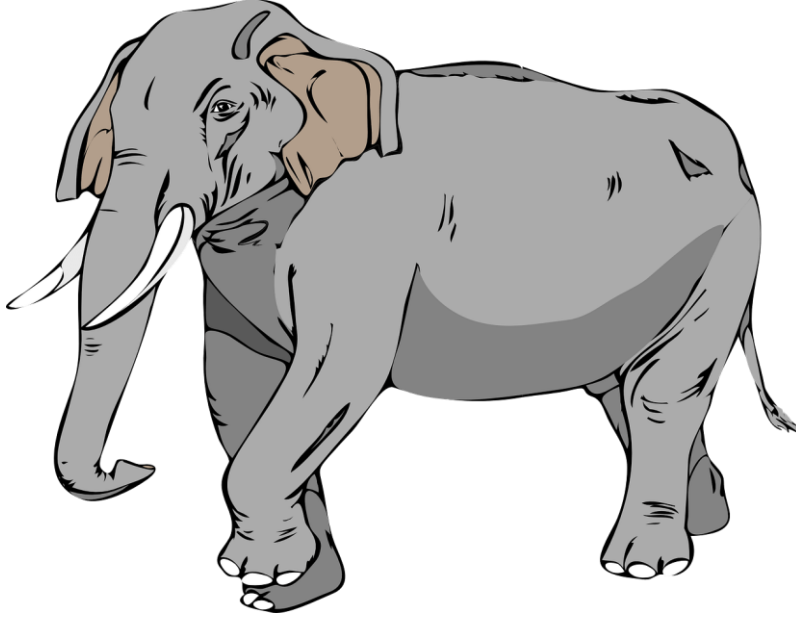


1 मई मजदूर दिवस .....	214
चिड़िया रानी .....	216
मीठा आम .....	217
चिड़िया रानी .....	219
भारत और भूटान .....	221
रसीले आम .....	224
गर्मी आई .....	225
आखिर क्यों .....	227
भोर .....	228
काला ताजमहल .....	230
डॉ. बाबासाहब अंबेडकर .....	232
बेंदरा पिला .....	234
नवा जतन .....	236
मोटर गाड़ी मेरे यार .....	238
अब मेहनत की बारी है .....	240
मुस्कान .....	242
गरमी काबर आथे .....	244
मेहनत की कमाई .....	246
मन को सदा लुभाती तितली .....	248
गुडहरिया अउ सांप .....	249
<u>भाखा जनऊला</u>	



## हाथी

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



हाथी जी भारी-भरकम.  
चलते हैं ये धम्मक-धम्म.

मोटे खंभे जैसे पाँव.  
बैठे बड़े पेड़ की छाँव.

लंबी सूंड है, रूप निराला.  
गठुर भर गन्ना खा डाला.

सर्कस में ही खेल दिखाते.  
हौदे पर हैं मुझे बिठाते.

\*\*\*\*\*



## मेरा डॉगी

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल



भों-भों सुर में गीत सुनाता,  
मेरा डॉगी सबको भाता.

सुबह-शाम जब करे वो सैर,  
दूजे कुत्तों पे गुर्गता.

बॉल-बॉल वो खूब खेलता,  
झट से बॉल उठा के लाता.

घर की करे सुरक्षा यारो,  
चोरों को वो तनिक न भाता.

मै जब भी बाहर से आता,  
मेरा डॉगी खुशी मनाता.

\*\*\*\*\*



## फिर गर्मी आ गई

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



जाड़ा गया पहाड़ पर  
गर्मी फिर आई.  
धूप की उजली चादर  
धरती पर बिछ गई भाई.

गर्मी से देखो फिर  
आने लगा पसीना.  
तेज धूप से सबका  
मुश्किल हो गया जीना.

गर्म हवा बहने लगी  
बदन लगा खुजलाने.  
गर्मी का मौसम देखो  
लगा है दिल दुखाने.

देख कर गर्मी का दिन  
मन लगा अकुलाने.  
पंखा कूलर एसी का  
हवा लगा है खाने

\*\*\*\*\*



## पंचतंत्र की कहानी

### धूर्त बिल्ली का न्याय



बहुत पुरानी बात है, एक जंगल में एक बहुत बड़े पेड़ के तने में एक खोल था. उस खोल में कपिंजल नाम का एक तीतर रहा करता था. हर रोज वह खाना ढूँढने खेतों में जाया करता था और शाम तक लौट आता था.

एक दिन खाना ढूँढते-ढूँढते कपिंजल अपने दोस्तों के साथ दूर किसी खेत में निकल गया और शाम को नहीं लौटा. जब कई दिनों तक तीतर वापस नहीं आया, तो उसके खोल को एक खरगोश ने अपना घर बना लिया और वहीं रहने लगा.

लगभग दो से तीन हफ्तों बाद तीतर वापस आया. खा-खाकर वह बहुत मोटा हो गया था और लंबे सफर के कारण बहुत थक भी गया था. लौट कर उसने देखा कि उसके घर में खरगोश रह रहा है. यह देख कर उसे बहुत गुस्सा आ गया और उसने झल्लाकर खरगोश से कहा, “ये मेरा घर है. निकलो यहां से.”

तीतर को इस तरह चिल्लाते हुए देख खरगोश को भी गुस्सा आ गया और उसने कहा, “कैसा घर? कौन सा घर? जंगल का नियम है कि जो जहां रह रहा है, वही उसका घर है. तुम यहां रहते थे, लेकिन अब यहां मैं रहता हूं और इसलिए यह मेरा घर है.”

इस तरह दोनों के बीच बहस शुरू हो गई. तीतर बार-बार खरगोश को घर से निकलने के लिए कह रहा था और खरगोश अपनी जगह से टस से मस नहीं हो रहा था. तब तीतर ने कहा कि इस बात का फैसला हम किसी तीसरे को करने देते हैं.



उन दोनों की इस लड़ाई को दूर से एक बिल्ली देख रही थी. उसने सोचा कि अगर फैसले के लिए ये दोनों मेरे पास आ जाएं, तो मुझे इन्हें खाने का एक अच्छा अवसर मिल जाएगा.

यह सोच कर वह पेड़ के नीचे ध्यान मुद्रा में बैठ गई और जोर-जोर से ज्ञान की बातें करने लगी. उसकी बातों को सुनकर तीतर और खरगोश ने बोला कि यह कोई ज्ञानी लगती है और हमें फैसले के लिए इसके ही पास जाना चाहिए.

उन दोनों ने दूर से बिल्ली से कहा, “बिल्ली मौसी, तुम समझदार लगती हो. हमारी मदद करो और जो भी दोषी होगा, उसे तुम खा लेना.”

उनकी बात सुनकर बिल्ली ने कहा, “अब मैंने हिंसा का रास्ता छोड़ दिया है, लेकिन मैं तुम्हारी मदद जरूर करूंगी. समस्या यह है कि मैं अब बूढ़ी हो गई हूं और इतने दूर से मुझे कुछ सुनाई नहीं दे रहा है. क्या तुम दोनों मेरे पास आ सकते हो?”

उन दोनों ने बिल्ली की बात पर भरोसा कर लिया और उसके पास चले गए. जैसे ही वो उसके पास गए, बिल्ली ने तुरंत पंजा मारा और एक ही झपट्टे में दोनों को मार डाला.

कहानी से सीख: इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें झगड़ा नहीं करना चाहिए और अगर झगड़ा हो भी जाए, तो किसी तीसरे को बीच में आने नहीं देना चाहिए.

\*\*\*\*\*





## धूम मचाते आम

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल



हरे, गुलाबी, पीले, आम,  
पर होते शरमीले आम.

हर महफिल में रंग जमाते,  
दें खुशियां महकीले आम.

मेंगो शेक बुझाते प्यास,  
लगते हैं अलबेले आम.

हाट- बाजार में धूम मचाते,  
बिकते भर-भर ठेले आम.

होते सदा सीधे मन के,  
करते नहीं झमेले आम.

\*\*\*\*\*



## बंदर गया बाल कटाने

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", बालोद



बंदर गया पास के सेलून,  
अपने बाल कटाने.

कैची-छूरा देख लिया,  
फिर खूब लगा घबराने.

कुर्सी पर शीशे के आगे,  
जब नाई ने उसे बिठाया.

अपने आगे एक बंदर,  
नजर उसे फिर आया.

खो-खो करके बड़े क्रोध से,  
बन्दर फिर चिल्लाया.



और लगा मारने शीशे पर,  
हाथ में जो भी आया.

तोड़-फोड़ मचाकर बंदर,  
भागा सेलून के बाहर.

रोने लगा बेचारा नाई,  
आज अपने किस्मत पर.

\*\*\*\*\*



## तोता

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



चाचा जी ने पाला तोता,  
वह पिंजड़े में रहता बंद.

रटकर बातें दोहराता है  
मुझको यह सब नहीं पसंद.

भूखा-प्यासा भले न रहता  
लेकिन वह आजाद नहीं.

वह भी खुलकर उड़े दूर तक  
क्या घर आता याद नहीं.

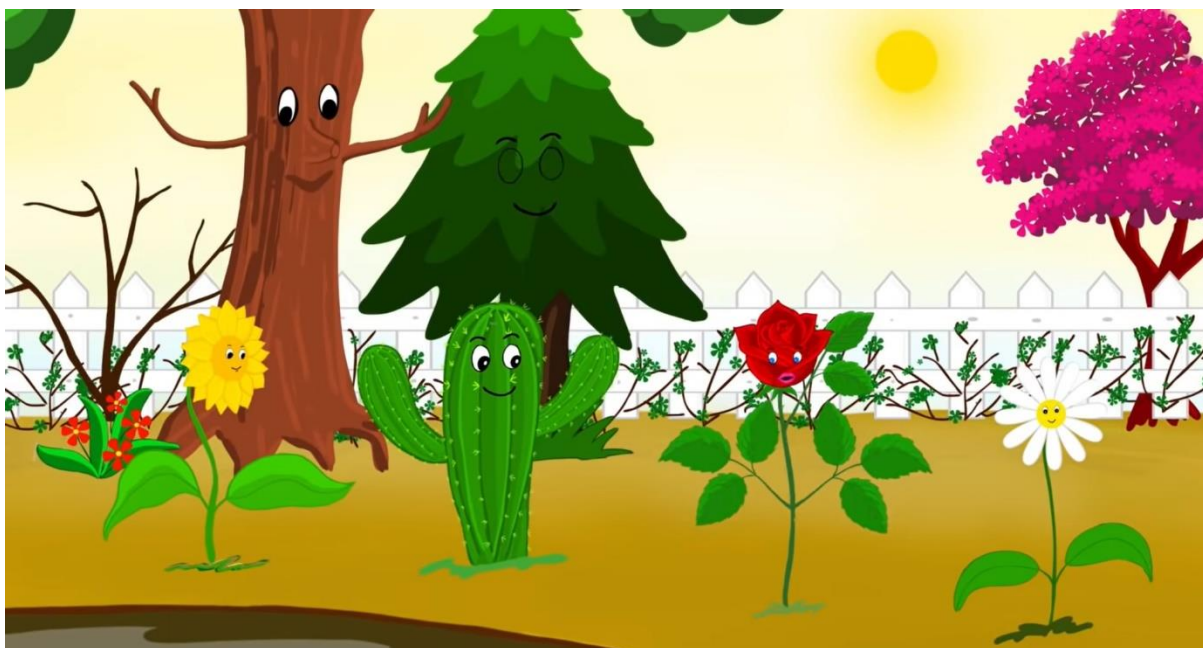
\*\*\*\*\*



## अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी—

### सच्ची सुंदरता



बहुत पुराने समय की बात है. एक बड़े से समुद्र के बीचों-बीच एक छोटा-सा सुंदर टापू था. पूरे टापू पर बहुत सारे पेड़-पौधे थे. मैदानों में हरी-हरी घास थी और हर रंग के सुंदर फूल वहाँ उगते थे.

फूलों की महक से सारा वातावरण महकता रहता था. वहाँ एक बहुत ही अच्छा राजा राज्य करता था. सभी की खुशी में वह खुश होता था और सबके दुखों को बाँटकर कम करता था.

हर वर्ष वहाँ राज्य के कुलदेवता की पूजा की जाती थी और उसके लिए बगीचे के सबसे सुंदर फूल को चुना जाता था.

यह चुनाव राजा करता था. उस भाग्यशाली फूल को कुलदेवता के चरणों में चढ़ाया जाता था. पिछले कई वर्षों से बागीचे के सबसे सुंदर लाल गुलाब के फूलों को इसके लिए चुना जा रहा था. इसलिए गुलाब का पौधा बहुत ही घमंडी हो गया था. उसे लगता था कि वही एक है, जो सब फूलों में सबसे सुंदर हैं. घमंड के कारण वह तितलियों और मधुमक्खियों को अपने फूलों पर बैठने भी नहीं देता था.



यहाँ तक कि पक्षियों को अपनी डालियों के पास भी आने नहीं देता था. उसके ऐसे व्यवहार के कारण कोई तितली या पक्षी उसके पास आना ही नहीं चाहते थे.

हर वर्ष की तरह एक बार फिर वह दिन आने वाला था, जब कुलदेवता की पूजा की जानी थी.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

### आस्था तंबोली, कक्षा 3, जांजगीर द्वारा पूरी की गई कहानी

हर वर्ष की तरह एक बार फिर वह दिन आने वाला था. जब कुलदेवी की पूजा की जानी थी. इस बार फिर गुलाब का फूल खुश हो रहा था उसे लग रहा था कि हर बार की तरह उसे चुना जाएगा लेकिन इस बार राजा ने उसे नहीं चुना क्योंकि राजा समझ गया था कि हर बार लाल गुलाब को चुनने से उसके अंदर बहुत घमंड आ गया है. गुलाब को लगता था कि वह सबसे सुंदर फूल है इस बाग में तभी तो मुझे ही कुलदेवी के ऊपर चढ़ाया जाता है गुलाब अपने घमंड के कारण तितलियों और मधुमक्खियों को अपने फूलों पर बैठने भी नहीं देता था यहां तक कि पक्षियों को अपनी डालियों के पास भी आने नहीं देता इसके ऐसे व्यवहार के कारण कोई तितलियां पक्षी उसके पास आना नहीं चाहते थे. राजा इस बार गुलाब को कैसे चुन लेता राजा तो बहुत समझदार था वह सबको साथ लेकर चलने वाला था गुलाब का व्यवहार अच्छा नहीं लगा. इसलिए राजा ने सोचा कि जिसके मन में घमंड आ जाए वह सबसे सुंदर कैसे हो सकता है सच्ची सुंदरता तो मन की होनी चाहिए.

दूसरों के प्रति दया,सहयोग,क्षमा का भाव होना चाहिए. तभी उनकी सुंदरता बनी रहती है. यदि हम अपनी सुंदरता के कारण घमंड में आ जाते हैं तो हमारे व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है. और इसी परिवर्तन के कारण गुलाब को इस बार नहीं चुना गया. इस बार गुलाब के जगह मंदार को चुना गया क्योंकि मंदार सभी तितलियों पक्षियों मधुमक्खियों को आश्रय देने का काम कर सभी का सहयोग कर रही थी.राजा उसके व्यवहार से खुश हुआ. इस बार मंदार को कुलदेवी में चढ़ाया गया क्योंकि उसका मन साफ था उसे किसी चीज का कोई घमंड नहीं था.



## सतीश "बब्बा", उत्तर – प्रदेश द्वारा पूरी की गई कहानी



जैसे - जैसे कुलदेवता के पूजा की तारीख नजदीक आ रही थी, वैसे - वैसे लाल गुलाब का सीना तनता जा रहा था, अभिमान से.

उस द्वीप के पक्षी, भौरै, तितलियाँ गुलाब से दूरियाँ बढ़ाती गईं.

उसी द्वीप में एक ऐसा फूल भी था गेंदा का, जिसमें अधिक खुशबू तो नहीं थी लेकिन वह सदा हंसता - मुस्काता था. उसने किसी को छूने के लिए मना नहीं किया था. अभिमान नाम की चीज भी उसके पास नहीं थी.

लाल गुलाब उस धरती को भी भूल गया था, जिसमें से उसका सब कुछ था.

धरती ने उस अभिमानी से अपनी खुशबू निकाल लिया. भौरा और मधुमक्खी ने पराग लेना बंद कर दिए. जिससे लाल गुलाब कुरूप हो गया.

आखिर नियत दिन आ ही गया. और राजा फूल का चयन करने के लिए आया. लेकिन राजा ने लाल गुलाब की ओर देखा तक नहीं.

राजा गेंदा के फूल को तोड़ने के लिए बढ़े.

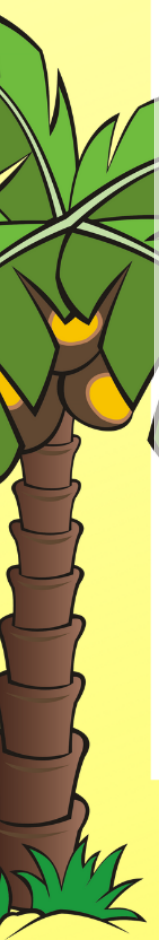
लाल गुलाब जोर - जोर से रो पड़ा. पड़ोसी गुलाब के आँसू देखकर गेंदा ने कहा, "भाई, रोओ मत. अपनी धरती माता से तथा सभी साथियों से, इस द्वीप के निवासियों से क्षमा माँग लो और अब कभी भी अभिमान नहीं करना."

गेंदा ने राजा से हाथ जोड़कर कहा कि, "महाराज, आप गुलाब का ही चयन कीजिये."

पृथ्वी सहित सभी ने गुलाब को माफ कर दिया गेंदा के कहने से. और वह फिर से सुगंधित हो गया.

लेकिन राजा ने गेंदा से कहा, "असली सुंदरता तो तुममें है. क्योंकि तुममें अभिमान नहीं क्षमा है."

राजा ने गेंदा के फूल को ही कुलदेवता को अर्पित किया. राजा के निर्णय और सूझबूझ से कुलदेवता बहुत प्रसन्न हुए.



## मनोज कुमार पाटनवार, बिलासपुर द्वारा पूरी की गई कहानी



गुलाब के पौधे को पूरा विश्वास था कि राजा आएँगे और हर वर्ष की तरह उसी को चुनेंगे.

गुलाब के पौधे के पीछे मिटटी के ढेर पर एक पौधा अपने आप उग आया था.छोटा-सा, नाजुक-सा. उस पर चमकदार पीले रंग के छोटे-छोटे फूल उगे थे.वह एक जंगली पौधा था, इसलिए कभी कोई उसकी ओर ध्यान ही नहीं देता था.उसके फूल छोटे थे, लेकिन बेहद सुंदर थे.घंटी के आकार के उन फूलों की पंखुड़ियाँ किनारों पर गहरे लाल रंग की थी.वह जानता था कि उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता है फिर भी वह बड़े प्यार से सभी तितलियों और पतंगों को अपने पास बुलाकर अपना रस पीने देता था.पक्षी उसकी डालियों पर बैठ कर खुश होते थे.यह सब देखकर पौधे को खुशी होती थी कि वह किसी के काम तो आ सका.

और फिर वह दिन आया, जब राजा बगीचे में फूल चुनने आए. माली उन्हें सीधा गुलाब के पौधे के पास ले गया. इस बार तो गुलाब और भी सुंदर और बड़े खिले हैं महाराज! वह बोला.

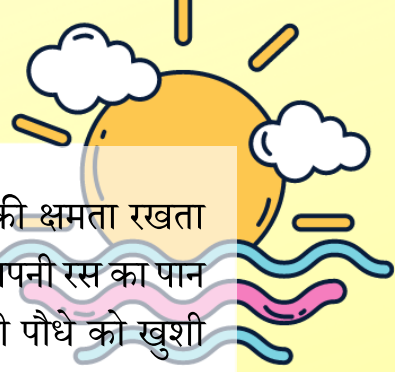
उसने सबसे बड़ा गुलाब तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन महाराज ने रोक लिया वे किसी और सुंदर फूल को ढूँढ़ रहे थे.वापिस जाने के लिए जैसे ही घूमे, उनकी निगाह पीले रंग के फूल पर पड़ी.उन्होंने घूमकर देखा तो उनको वह पीले फूलों वाला जंगली पौधा दिखाई दिया.उसके आस-पास अनेक तितलियाँ और पतंगे घूम रहे थे.जबकि गुलाब का पौधा अकेला, अलग खड़ा था. राजा धीरे से जंगली पौधे के पास गए और बोले - यह वह पौधा है जो बिना खाद-पानी के उग आया है. बाकी सभी पौधों का माली विशेष ध्यान रखते हैं.समय से पानी देते हैं, खाद डालते हैं, काट-छाँट करते हैं, इसलिए वे इतने सुंदर हैं. लेकिन यह वह पौधा है, जो अपनी हिम्मत से खड़ा है, फिर भी कितना स्वस्थ है, सुंदर है. सबसे अच्छी बात यह है कि इसके अच्छे स्वभाव के कारण सभी तितलियाँ उसके पास आकर बेहद खुश हैं.यही है सच्ची सुंदरता इसलिए कुलदेवता की पूजा के लिए मैं इस जंगली फूल को चुनता हूँ.

सीख - कभी घमंड नहीं करना चाहिए. सर्व हितार्थ काम करते रहना चाहिए.

## संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी

गुलाब के पौधे को घमंड था कि इस वर्ष भी राजा आएँगे और उसी को चुनेंगे.गुलाब के पौधे के कुछ ही दूर में कचरे के ढेर पर एक पौधा अपने आप उग आया था.वह एक जंगली पौधा था.इसलिए कभी कोई उसकी ओर ध्यान ही नहीं देता था.छोटा सा,नाजुक सा,उस पर चमकदार पीले रंग के छोटे-छोटे फूल खिले थे.उसके फूल छोटे थे लेकिन बहुत ही सुंदर थे.बगीचा के सभी





फूलों से उनकी अलग पहचान था.जो अपनी ओर लोगों को आकर्षित करने की क्षमता रखता था.वह बड़े प्यार से तितलियों, मधुमक्खियों,पतंगों एवं भंवरो को पास बुलाकर अपनी रस का पान कराते थे.पक्षी उनकी डालियों पर बैठकर चहचहाते थे.यह सब देख कर जंगली पौधे को खुशी होती थी कि वह किसी के काम तो आ सका.

यह सब देखकर गुलाब के पौधे को जंगली पौधे से ईर्ष्या होने लगा. उसे डर हो गया था कि इस बार राजा साहब जंगली पौधे के फूल का चुनाव न कर ले.

कुछ छड़ पश्चात वह दिन आ ही गया जब राजा बगीचे में फूल चुनने आए.माली उन्हें सीधा गुलाब के पौधे के पास ले गया.इस बार गुलाब और भी सुंदर और बड़े खिले हुए थे.माली ने उस गुलाब को तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाया लेकिन महाराज ने रोक दिया.वे किसी और सुंदर फूल की तलाश में थे.जैसे ही राजा आगे बढ़ा,उसकी निगाह पीले रंग के फूल पर पड़ी.वहाँ जाकर देखा तो वह पीले फूलों वाला जंगली पौधा दिखाई दिया.

उसके आसपास अनेक तितलियाँ,मधुमक्खियाँ, पतंगे और भंवरे मंडरा रहे थे.पक्षी उनकी डालियों पर बैठे थे.राजा उस पौधे को देखकर मोहित हो गया और मन ही मन सोचने लगा.यह जंगली पौधे में गुलाब की अपेक्षा अधिक गुण व सुंदर है यह वह पौधा है जो बिना खाद पानी के उग आया है.बाकी सभी पौधे का माली विशेष ध्यान रखते हैं.समय-समय में पानी देना, खाद-मिट्टी डालना,काट-छांट करना आदि कार्य करते हैं.जिसके कारण वे इतने सुंदर है.लेकिन यह पौधा है जो अपने हिम्मत से खड़ा है.फिर भी कितना स्वस्थ और सुंदर है.इसके अच्छे स्वभाव के कारण सभी जीव बहुत खुश है. यही है-"सच्ची सुंदरता" इसलिए कुल देवता पूजा के लिए,मैं इसी जंगली पौधे की फुल को चुनता हूँ. गुलाब का पौधा अपने कर्म के कारण अकेला खड़ा हुआ था और उसके फूल अपने किए हुए कार्य पर शर्मिन्दा हुआ.

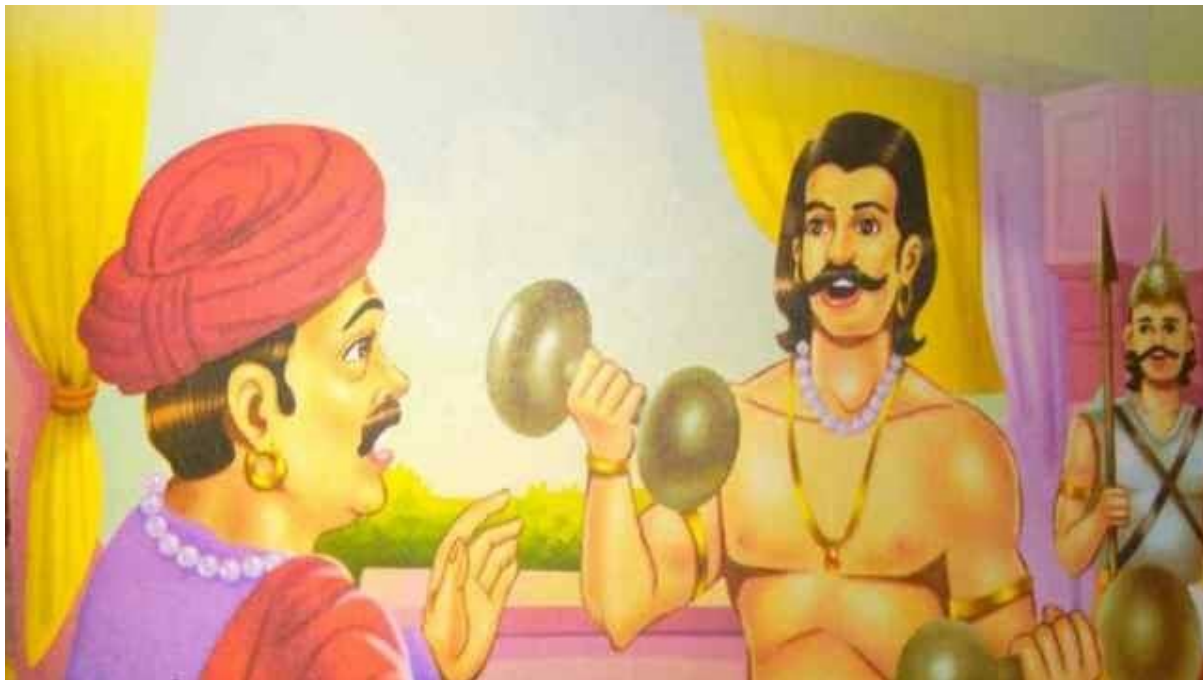
बच्चों इस कहानी से हमने समझा कि गुलाब की तरह जो भी व्यक्ति घमंड करता हैं. वह अकेला रह जाता है और अपने किए हुए कार्यों पर शर्मिन्दा होते हैं. इसके विपरीत जंगली पौधे की तरह जो भी व्यक्ति अपने आसपास लोगों से प्यार, नम्र स्वभाव, सहयोग की भावना व मिलनसार आदि होते हैं. वह सुख प्राप्त एवं खुशी से जीवन व्यतीत करते हैं.

अंत में यही कहना चाहता हूँ कि-"बच्चों जीवन में बगीचे या गमले के पौधे की तरह ना होना.जिससे कि एक दिन पानी ना मिले तो मुरझा जाए. बनना है तो,उस जंगली पौधे की तरह बनना-जो कई दिन तक पानी न मिले तो भी हरा भरा रहता है.



## अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

### राजा की बीमारी



एक आलसी राजा था. वह कोई भी शारीरिक क्रिया नहीं करता था. परिणामस्वरूप वह बीमार पड़ गया. उसने राजवैद्य को बुलाया और कहा, “मुझे शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ के लिए कुछ औषधियाँ दे दीजिए.”

वैद्य जानता था कि राजा की बीमारी का कारण उसका आलसीपन है. इसलिए वैद्य ने उसे दो वजनी डम्बल देते हुए कहा, “महाराज, यदि आप इन जादुई डम्बलों को प्रतिदिन एक-एक घंटा सुबह-शाम इस प्रकार घुमाएँगे तो जल्दी ही आपको स्वास्थ्य लाभ होगा.”

इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें [kilolmagazine@gmail.com](mailto:kilolmagazine@gmail.com) पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

## दादा जी

रचनाकार- सावित्री शर्मा “सवि”, उत्तराखंड



दादा जी जब घर हैं आते  
नई नई बात सिखलाते

सुबह सबेरे सैर कराकर  
सूरज को प्रणाम कराते

आँख मिचौली संग संग खेले  
जाते साथ साथ हम मेले

स्कूल से जब घर हम लौटें  
मिलकर होमवर्क कर लेते

लूडो कैरम खूब खिलाते  
योग प्राणायाम सिखाते



मोबाइल की याद ना आती  
नई कहानी चुटकुले सुनाते

दादी मेरी बड़ी सयानी  
सुनाती परियों की कहानी

रगुल्ला रबड़ी खूब मिलता  
मीठी बानी खूब सुनाती

\*\*\*\*\*



## चिड़िया प्यारी

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल



छोटी छोटी चिड़िया प्यारी,  
डोल रही है क्यारी क्यारी.

अपनी चीं चीं वाले सुर से,  
गीत सुनाना रखती जारी.

जीत की सदा बिगुल बजाती,  
कभी किसी से कभी न हारी.

काँटों से बच बच के चलती,  
फूलों से है उसकी यारी.

बन ठन के वो सबको भाती,  
खुशी लुटाती चिड़िया प्यारी.

\*\*\*\*\*



## काकभगोड़ा

रचनाकार- श्रीमती सुचित्रा सामंत सिंह, जगदलपुर



खेतों में चहचहाती पंछी,  
फसलों पर मडराती है,  
इस डाली से उस डाली पर,  
झूला झूले जाती हैं.

कभी बैठे पक्के अमरूद पर,  
कभी रसालों पर मडराती,  
कभी चोच लगाए फलों पर,  
कभी फुदक-फुदक धरा पर चलती.

जैसे ही पंछी ने देखा,  
नीले काले कपड़ो वाला,  
मटके जैसे मुख वाला,  
बिहंग जरा घबराती है.



कौन है लम्बे हाथ फैलाए,  
ना ये दौड़े ना ये भागे  
ना कुछ बोले ना कुछ सुनता  
ना दिन-रात की परवाह करता

ना दिन की गर्मी सताती  
ना बारिश में छाता लेता  
एक जगह निश्चिंत खड़ा है  
मानो यह मुझे घूर रहा है.

यह है एक काकभगोड़ा,  
खेतों का पहरा देनेवाला,  
लम्बा चौड़ा भोला भाला,  
कानों में रुई, मुँह में ताला.

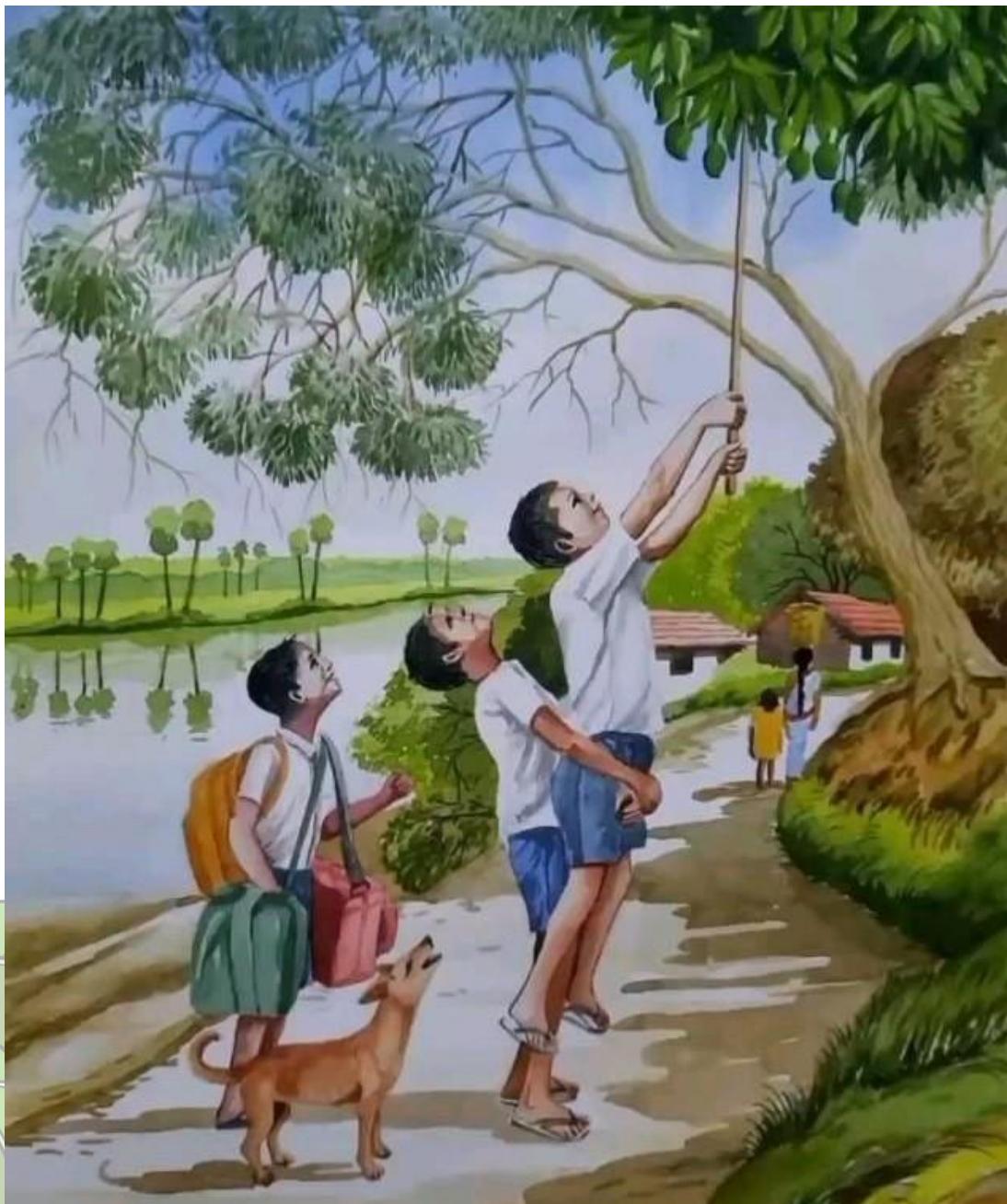
देख इसे चिड़िया घबराई,  
अपने पंखों को सहलाई,  
छोड़ पके बालियाँ धान की,  
चिड़िया फुर से उड़ जाती हैं.

\*\*\*\*\*



## चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी—



हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

## संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

### स्कूल के दिन



बच्चों आप सब लोग समझते होंगे की जीवन में विद्यालय का एक विशेष महत्व है.विद्या,कला,कविता,साहित्य और धन आदि को प्राप्त करने वाले ज्ञान का स्रोत है-विद्यालय.

यहाँ पर मन लगाकर पढ़ने पर आप जिस भी विषय में रुचि रखते हैं.चाहे साहित्य,इतिहास, संगीत,गणित,भाषा आदि कोई भी विषय क्यों ना हो आपको उसमेंअद्भुत सिद्धि प्राप्त होती है.

यहीं पर हम जानवर्धक व्याख्यानों को सुनकर आचरण की उपयोगिता को समझते हैं तथा सत्य मार्ग पर चलना,नम्रता, दया,प्रेम और उदारता का भाव, माता के बाद यदि हमें कोई सिखाता है तो वे विद्यालय ही है.

विद्यालय कोई एक पत्थर से बना कोई घर नहीं है.विद्यालय का वास्तविक अर्थ है-विद्या का घर, विद्यालय यदि विशाल वृक्ष है,तो अनुशासन इनकी जड़े हैं. ज्ञान और आचरण तना है.शाखाएं अध्यापक है.विनम्रता,विवेक, सौम्य भाव और एकता टहनियाँ हैं और छात्रा इसमें लगे हुए पत्ते की भांति है. यदि इसमें कोई एक नहीं है तो,वह विद्यालय नहीं है.

बच्चों इस कारण से अपनी पढ़ाई जीवन में यह सभी बातों को समझकर पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए.हमारे द्वारा कुछ ऐसा कार्य ना हो जाए जिसके कारण हमारे जीवन में संकट आ जाए.विद्यार्थी जीवन ही ऐसा जीवन है जिसमें कोई चिंता नहीं होता.और ना ही यह जीवन बार-बार आता है. माता-पिता दुःख सहकर हमारे लिए जो भी आवश्यकता हो,उसे पूर्ण करते हैं. इस कारण हमारा भी कर्तव्य है कि हम अपने मां-बाप, गुरुओं और देश का नाम रोशन करें.

स्कूल जाने के उद्देश्यों को छोड़कर संगति के प्रभाव में या कम उम्र होने के कारण समझदारी के अभाव में,जाने- अनजाने गलती हो जाती है. जिसके कारण किसी की जान भी जा सकती है और हमें अपने जीवन में पश्चाताप की अग्नि में जलना पड़ सकता है.

आओ हम,एक कहानी के माध्यम से इसे और अच्छे से समझते हैं.

जय,अजय और विजय पूर्व माध्यमिक विद्यालय के छात्र थे.तीनों में गहरी दोस्ती थी.जहाँ भी जाते थे,ये तीनों साथ रहते थे. सभी साथी मौज मस्ती करते हुए कभी इमली के पेड़ पर,तो कभी कदम के पेड़ पर और कभी आम के पेड़ पर चढ़कर धमाचौकड़ी मचाते हुए फल तोड़ते थे.जो बच्चे पेड़ पर नहीं चढ़ सकते,वे पत्थर और डंडा के माध्यम से आम को तोड़ते थे.जैसे ही आम गिरता



था, सभी साथी आम को पाने के लिए दौड़ लगाते थे. जो भी हो, उद्देश्य यही रहता है कि आम केवल और केवल मुझे ही मिले. इसी चक्कर में अनचाही दुर्घटना भी हो सकता है. इसका बच्चों को अंदाजा नहीं था.

रोज की तरह सभी साथी आज भी विद्यालय समय के आधे घंटे पूर्व स्कूल जाने के लिए निकल गए. बीच रास्ते में हरे-हरे आम के फल को देखकर मन ललचाने लगा. जय ने डंडा की व्यवस्था किया. अजय और विजय ने डंडे से आम तोड़ने के लिए उसका सहयोग किया. वही हुआ जिसका जो डर था. हम सबको पता नहीं था कि हमारे ही द्वारा पेड़ पर मारा हुआ पत्थर जो है आम की डाली पर लटका हुआ है. जय, आम तोड़ने में व्यस्त था. आम की डाली हिलने के कारण लटका हुआ पत्थर, अचानक जय के सिर पर आ गिरा. सिर पर चोट लग गई जिसके कारण जय खून से लथपथ हो गया. हम सबको समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें. तभी अजय ने घर से उसके पिताजी को बुलाकर लाया. हम सब डर से कांपने लगे. क्योंकि हम लोगों को कई बार हमारे माता-पिता, शिक्षक एवं आम की रखवाली करने वाले ने चेतावनी दिया था कि आम के पास ना जाए. लेकिन उसकी बातों पर हमने अमल नहीं किया.

उसके पिताजी ने जय को वैद्य के पास ले जाकर इलाज कराया. वैद्य जी ने ध्यान पूर्वक उसका नियमित इलाज किया. जिसके कारण कुछ ही दिनों में जखम तो ठीक हो गया. लेकिन सिर में गहरी चोट आने की वजह से, मस्तिष्क रोग विशेषज्ञ डॉक्टर से पुनः इलाज कराया. इलाज करने के बाद भी जय के मानसिक स्थिति ठीक नहीं हुआ. और उसने अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाया. अजय और विजय को अपने दोस्त जय की पढ़ाई बीच में छोड़ने पर बहुत दुःखी हुआ. तब हम सबको समझ में आया कि अपने माता-पिता एवं शिक्षकों के कहे हुए बातों को ध्यान से समझकर कार्य करना चाहिए. "स्कूल के वे दिन" को आज भी सभी साथी भूल न पाए.

बच्चों हमने कहानी में देखा कि एक छोटी सी गलती के कारण उसके साथी का जीवन बर्बाद हो गया. अतः आप लोग भी इस प्रकार की गलती ना करें. अंत में यही कहना चाहता हूँ.

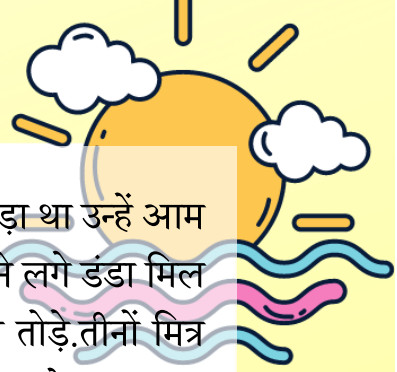
स्वस्थ रहो, सुरक्षित रहो.

पढ़ो लिखो, आगे बढ़ो.

### अनन्या तंबोली, कक्षा सातवीं द्वारा भेजी गई कहानी

अतुल, आयुष, अक्षत तीनों एक ही क्लास में पढ़ते हैं. तीनों में काफी अच्छी दोस्ती है. तीनों एक साथ स्कूल जाते और आते हैं. गर्मी का दिन था टामी को साथ लेकर जब वे स्कूल जा रहे थे, रास्ते में उन्हें आम का पेड़ दिखाई दिया पेड़ में बहुत सारे कच्ची कैरियां लगी हुई थी. उसे देखकर उनके





मुंह में पानी आ गया और वे उसे तोड़ने का प्रयास करने लगे लेकिन पेड़ बहुत बड़ा था उन्हें आम नहीं मिल पा रहा था उन्होंने एक उपाय सोचा और झट से आसपास में डंडा ढूंढने लगे डंडा मिल जाने पर आम तोड़ने के लिए आयुष, अक्षत को गोदी में उठा लिया और आम तोड़े. तीनों मित्र मिलकर आम का मजा लेते हुए स्कूल की ओर आगे बढ़ गए. वास्तव में देखा जाए तो यह आदत सभी बच्चों में देखने को मिलती है पहले के समय में तो यह कार्य और बहुत अधिक होता था सारे दोस्त मिलकर गर्मी के दिनों में आम इमलियां खाने जाते थे तेज धूप में खेलना, पेड़ों पर चढ़ना, तालाब में तैरना, डंडे मार कर आम गिराना बच्चों की आदत थी. छुट्टियों में यह सारे काम करते थे स्कूल के दिनों में रास्ते में मिल जाने वाले पेड़ के फलों को डंडा मारते हुए आगे बढ़ते थे. लेकिन वर्तमान समय में यह सब बहुत कम ही नजर आता है. दो चार ग्रामीण बच्चे ही हैं जो पेड़ों पर चढ़ने पके फल खाने की कोशिश करते हैं. बाकी बच्चे तो घर में बैठे हुए ही मार्केट के फलों को ही ताजा समझते हैं और उन्हें ही खाना पसंद करते हैं. पहले जैसे दोस्ती और खेल का मजा अब नहीं आता. धीरे-धीरे बच्चों का बचपना अब कम होते नजर आ रही है. सारे लोग अपने घरों में ही सिमट कर रह जा रहे हैं. बच्चे बाहर के खेलों को भूलकर मोबाइल में खेलने में व्यस्त रहते हैं जिससे उनका शारीरिक विकास सही ढंग से नहीं हो पा रहा है.

### श्रीमती रामेश्वरी सीके जलहरे, बलौदा बाजार द्वारा भेजी गई कहानी

#### दोस्तों संग आम का मज़ा

चंदू, पृथ्वी और अंजय तीनों एकदम अच्छे दोस्त थे. तीनों एक ही स्कूल में पढ़ते थे और एक साथ ही स्कूल आते जाते थे. स्कूल के रास्ते में तालाब के किनारे आम का पेड़ था. जब वे तीनों स्कूल जाते तो उसी पेड़ के नीचे आराम करते. गर्मी की शुरुआत हो गयी है. स्कूल की छुट्टी होने के बाद घर जाते वक़्त चंदू ने आम के पेड़ पर लगे फल को देखा. हरे- हरे आम को देखकर उसे आम खाने की इच्छा हुई. उसने कहा चलो आम तोड़ते हैं. उन्होंने कहीं से एक डण्डा लाया और आम तोड़ने लगे. पर आम बहुत उपर में होने के कारण आम नहीं टूटे. अब अंजय ने अपना और चंदू का बस्ता पृथ्वी को पकड़ाया और चंदू को उठाया. चंदू ने अब अपने डण्डे से बहुत सारे आम गिराए. वे तीनों आम खाते खाते घर गए. उन्हें मिलकर आम तोड़ने में बड़ा मज़ा आया. बचे हुए आम को घर ले जाकर हरे और कच्चे आम की चटनी बनाकर खाने के साथ भी खाया.

सीख- मिलजुल काम करने से काम आसान हो जाता है और सफलता अवश्य मिलती है.



## अगले अंक की कहानी हेतु चित्र



अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल [kilolmagazine@gmail.com](mailto:kilolmagazine@gmail.com) पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

## जीवन चक्र

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद



जीवन एक गणित है प्यारे, सीखो तुम इसमें जीना.  
गुणा-भाग कर आगे आओ, और रखो ताने सीना.

छोटी-छोटी सी खुशियों को, आहिस्ता से तुम जोड़ो.  
बढ़े एकता भाईचारा,  
इनसे कभी न मुँह मोड़ो.

आड़े-तिरछे, रिश्ते-नाते,  
अमर बेल कहलाते हैं.  
विषम समय चलता मानव का, चुपके से घट जाते हैं.  
अलग रीत है इस दुनिया की, समझ नहीं हम पाते हैं.  
घूम रहे हैं एक वक्र में,  
आकर फिर मिल जाते हैं.



नहीं समांतर कोई होते,  
ना कोई सीधी रेखा.  
शेष बचे वे रोते रहते,  
एक दर्द मैंने देखा.

मुँह में राम बगल में छूरी,  
वाणी को तरसाते हैं.  
कैसी-कैसी रीत जगत की, समझ नहीं हम पाते हैं.

\*\*\*\*\*



## पैदा क्यों होते नहीं, भगत सिंह से लाल

रचनाकार- डॉ. सत्यवान सौरभ, हरियाणा



भगत सिंह, सुखदेव क्यों, खो बैठे पहचान.  
पूछ रही माँ भारती, तुम से हिंदुस्तान.

भगत सिंह, आजाद ने, फूँका था शंखनाद.  
आज़ादी जिनसे मिले, रखो हमेशा याद.

बोलो सौरभ क्यों नहीं, हो भारत लाचार.  
भगत सिंह कोई नहीं, बनने को तैयार.

भगत सिंह, आज़ाद से, हो जन्मे जब वीर.  
रक्षा करते देश की, डिगे न उनका धीर.



मरते दम तक हम करे, एक यही फरियाद.  
भगत सिंह भूले नहीं, याद रहे आज़ाद.

मिट गया जो देश पर, करी जवानी वार.  
देशभक्त उस भगत को, नमन करे संसार.

भारत माता के हुआ, मन में आज मलाल.  
पैदा क्यों होते नहीं, भगत सिंह से लाल.

तड़प उठे धरती, गगन, रोए सारे देव.  
जब फांसी पर थे चढ़े, भगत सिंह, सुखदेव.

भगत सिंह, आजाद हो, या हो वीर अनाम.  
करें समर्पित हम उन्हें, सौरभ प्रथम प्रणाम.

\*\*\*\*\*

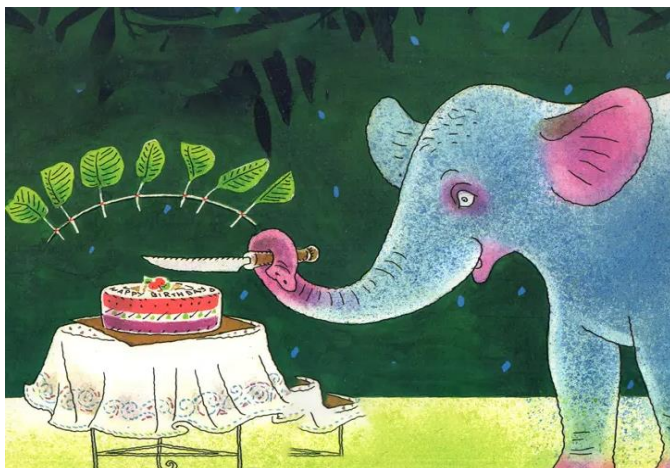


## हाथी की दावत

रचनाकार- श्रीमती श्वेता तिवारी, बिलासपुर



हाथी सुबह से बहुत खुश था.आज उसका जन्मदिन है. उसकी मां ने उसे नहला धुला कर खूब अच्छे कपड़े पहनाए है और वह जंगल में अपने सभी मित्रों को बुलाने निकल पड़ा. सबसे पहले वह जंगल के राजा शेर के पास गया जाकर कहता है शेर दादा आज मेरा जन्मदिन है आप शाम को



आइएगा. चूहा के पास गया, भालू के पास, खरगोश, गिलहरी, मोर ,बंदर सब के पास हाथी ने जाकर अपने जन्मदिन के लिए न्योता दिया. सभी जानवर बहुत खुश थे कि आज शाम को तो हमें हाथी के जन्मदिन में जाना है हाथी बहुत खुशी से झूम उठा था. वह शाम को अपनी मां के साथ बाजार से केक लेकर आया टॉफी और सभी जानवर के लिए गिफ्ट लेकर आया शाम होते ही सारे लोग जंगल में जन्मदिन मनाने के लिए पहुंच गए पर हिरण दूर पेड़ के नीचे बैठ कर रो रहा थी क्योंकि उसे हाथी ने अपने जन्मदिन पर नहीं बुलाया था. सारे जानवर हंसी खुशी से जंगल में मंगल कर रहे थे तब खरगोश ने देखा कि हिरण बैठे बैठे रो रहा है. उसने जाकर पूछा हिरण तुम क्यों रो रहे हो तब हिरण ने खरगोश से कहा कि मुझे हाथी ने अपने जन्मदिन पर नहीं बुलाया है. यह सुनकर खरगोश बहुत दुखी हुआ. शेर को पता चला तो वह सभी जानवरों के साथ हिरण को लेने गए. हिरण सभी जानवर को अपने पास आते देखकर बहुत खुश हुआ और शेर ने कहा चलो हम सब मिलकर हाथी का जन्मदिन मनाएंगे तुम रो नहीं और फिर हाथी ने आकर उसे बहुत ही सुंदर प्यारा गिफ्ट दिया हिरण बहुत खुश हो गया कि आज हाथी का जन्मदिन है गिफ्ट मैं देता पर मुझे ही गिफ्ट मिल रहा है. हिरण जल्दी से हाथ मुंह धो कर तैयार हो गया और वह भी जानवरों की टोली में जाकर जंगल में मंगल करने लगा. सब ने खूब मजा किया. हाथी की मां ने खूब बड़ा केक मंगाया था. सभी ने केक खाया टॉफी खाई और फिर मोर ने खूब अच्छा नृत्य किया. कोयल ने गाना सुनाई और सब हंसी खुशी से अपन अपने घर को लौट आए.

\*\*\*\*\*

## बाल पहेलियाँ

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा – 7, सेजेस तारबहर बिलासपुर



1. मेरे बिना प्रकृति कहाँ,  
हरा भरा मैं दिखता  
फल, फूल और शुद्ध हवा,  
मैं ही तो देता?

2. सात रंगों का हूँ मैं संगम,  
वर्षा ऋतु में मैं आता  
इस कोने से उस कोने तक,  
गगन की शोभा बढ़ाता?





3. हानिकारक किरणों से,  
सूरज के मैं तुम्हें बचाऊँ  
कभी तो मैं हो जाता साफ,  
कभी मेघों से भरा रहूँ?

4. सर्वत्र हूँ मैं व्यप्त,  
पर किसी को दिखता नहीं  
मुझे सब करते महसूस,  
पर कोई छू सकता नहीं?

5. परदर्शी मैं दिखता हूँ,  
बहता हूँ मैं निरंतर  
मेरा पान करके ही,  
सब रह पाते हैं जिंदा?

उत्तर: 1.वृक्ष, 2.इंद्रधनुष, 3.आसमान, 4.वायु, 5.जल

\*\*\*\*\*





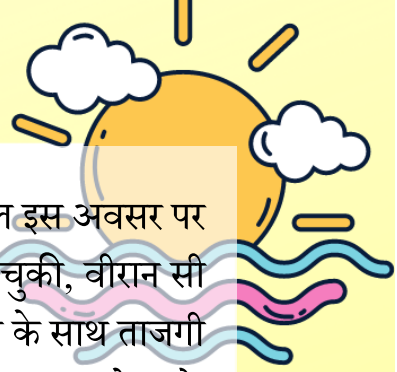
## त्यौहार

रचनाकार- डॉ. सत्यवान सौरभ, हरियाणा



हिंदुस्तान त्योहारों का देश है। त्योहार हमको सामाजिक और सांस्कारिक रूप से जोड़ने का काम करते हैं। हमारी साँस्कृतिक और सांस्कारिक एकता ही भारत की अखंडता का मूल आधार है। “व्रत -त्योहारों के दिन हम देवताओं का स्मरण करते हैं, व्रत, दान तथा कथा श्रवण करते हैं, जिससे व्यक्तिगत उन्नति के साथ सामाजिक समरसता का संदेश भी समाज में पहुँचता है। इसमें ही भारतीय संस्कृति के बीज छिपे हैं। ” हमारे सामाजिक जीवन में कुछ ऐसे दिन आते हैं जिनसे मात्र एक व्यक्ति, या परिवार ही नहीं वरन पूरा समाज आनंदित और उल्लसित होता है। भारत को यदि पर्व-त्योहारों का देश कहा जाए तो उचित होगा। यहाँ भोजपुरी भाषा में एक कहावत है- ‘सात वार नौ त्यौहार’।

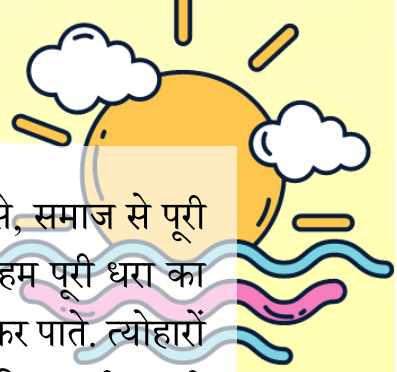
कृषि प्रधान होने के कारण प्रत्येक ऋतु - परिवर्तन हँसी-खुशी मनोरंजन के साथ अपना-अपना महत्व रखता है। इन्हीं अवसरों पर त्योहार का समावेश किया गया है, जो उचित है। प्रथम श्रेणी में वे व्रतोत्सव , पर्व-त्योहार और मेले हैं, जो साँस्कृतिक हैं और जिनका उद्देश्य भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों और विचारों की रक्षा करना है। इस वर्ग में हिन्दूओं के सभी बड़े पर्व-त्योहार आ जाते हैं, जैसे - होलिकोत्सव, दीपावली, बसन्त, श्रावणी, संक्रान्ति आदि। संस्कृति की रक्षा इनकी आत्मा है। दूसरी श्रेणी में वे पर्व आते हैं, जिन्हें किसी महापुरुष की स्मृति में बनाया गया है। जिस महापुरुष की स्मृति के ये सूचक हैं, उसके गुणों, लीलाओं, चरित्र, महानताओं का स्मरण करने के लिए इनका विधान है। इस श्रेणी में रामनवमी, कृष्णाष्टमी, भीष्म पंचमी, हनुमान जयंती, नागपंचमी आदि त्योहार रखे जा सकते हैं।



यानि यहाँ हर दिन में एक त्योहार अवश्य पड़ता है. अनेकता में एकता की मिसाल इस अवसर पर देखी जाती है. रोजमर्रा की भागती-दौड़ती, उलझनों से भरी हुई ऊर्जा प्रधान हो चुकी, वीरान सी बनती जा रही जिंदगी में ये त्यौहार व्यक्ति के लिए सुख, आनंद, हर्ष एवं उल्लास के साथ ताजगी भरे पल लाते हैं. यह मात्र हिंदू धर्म में ही नहीं वरन् विभिन्न धर्मों, संप्रदायों पर लागू होता है. वस्तुतः ये पर्व विभिन्न जन समुदायों की सामाजिक मान्यताओं, परंपराओं और पूर्व संस्कारों पर आधारित होते हैं. सभी त्यौहारों की अपनी परंपराएँ, रीति-रिवाज होते हैं. ये त्योहार मानव जीवन में करुणा, दया, सरलता, आतिथ्य सत्कार, पारस्परिक प्रेम, सद्भावना, परोपकार जैसे नैतिक गुणों का विकास कर मनुष्य को चारित्रिक एवं भावनात्मक बल प्रदान करते हैं. भारतीय संस्कृति के गौरव एवं पहचान ये पर्व, त्यौहार सामाजिक, धार्मिक, साँस्कृतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण हैं.

सामाजिक त्योहार और अंतर-विद्यालय साँस्कृतिक कार्यक्रम बच्चों के आत्मविश्वास और पारस्परिक कौशल के निर्माण में सहायता करने के लिए अद्भुत अवसर प्रदान करते हैं. पारस्परिक कौशल में दूसरों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने और बातचीत करने की क्षमता शामिल है और आत्मविश्वास स्वयं और स्वयं की क्षमताओं में विश्वास है, जो दोनों दूसरों के साथ सकारात्मक संबंध बनाने के लिए आवश्यक हैं. इस लेख में, हम कुछ तरीकों पर गौर करेंगे कि ये आयोजन बच्चों के आत्मविश्वास और पारस्परिक कौशल को बनाने में कैसे मदद करते हैं. सामाजिक त्योहार विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं के संपर्क में लाते हैं, जो उनके क्षितिज को व्यापक बना सकते हैं और उन्हें दूसरों के प्रति सहानुभूति और समझ विकसित करने में मदद कर सकते हैं. नए दोस्त और संपर्क बना सकते हैं, जो समुदाय से अधिक जुड़ाव महसूस करने और अपनेपन की भावना विकसित करने में मदद कर सकते हैं. ये आयोजन इसे विकसित करने का एक शानदार तरीका है क्योंकि वे बहुत सारे लोगों को एक साथ लाते हैं, और इस तरह एकता और भाईचारे की भावना पैदा करते हैं. ये जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के प्रति अधिक स्वीकार्य, सहिष्णु और समावेशी होना सिखाते हैं.

बाजारीकरण ने सारी व्यवस्थाएँ बदल कर रख दी है . हमारे उत्सव-त्योहार भी इससे अछूते नहीं रहे . शायद इसीलिए प्रमुख त्योहार अपनी रंगत खोते जा रहे हैं और लगता है कि अब त्योहार सिर्फ औपचारिकता के लिए मनाये जाते हैं. किसी के पास फुरसत ही नहीं है कि इन प्रमुख त्योहारों के दिन लोगों के दुख दर्द पूछ सकें. सब धन कमाने की होड़ में लगे हैं. गंदी हो चली राजनीति ने भी त्योहारों का मजा किरकिरा कर दिया है . हम सैकड़ों साल गुलाम रहे . लेकिन हमारे बुजुर्गों ने इन त्योहारों की रंगत कभी फीकी नहीं पड़ने दी. आज इस अर्थ युग में सब कुछ बदल गया है . कहते थे कि त्योहार के दिन न कोई छोटा और न कोई बड़ा. सब बराबर. लेकिन अब रंग प्रदर्शन



भर रह गये हैं और मिलन मात्र औपचारिकता. हम त्योहार के दिन भी अपनो से, समाज से पूरी तरह नहीं जुड़ पाते . जिससे मिठाइयों का स्वाद कसैला हो गया है . बात तो हम पूरी धरा का अँधेरा दूर करने की करते हैं, लेकिन खुद के भीतर व्याप्त अँधेरे तक को दूर नहीं कर पाते. त्योहारों पर हमारे द्वारा की जाने वाली यह रस्म अदायगी शायद यही इशारा करती है कि हमारी पुरानी पीढ़ियों के साथ हमारे त्योहार भी विदा हो गये.

हमारे पर्व त्योहार हमारी संवेदनाओं और परंपराओं का जीवंत रूप हैं जिन्हें मनाना या यूँ कहें की बार-बार मनाना, हर साल मनाना हर समाज बंधु को अच्छा लगता है . इन मान्यताओं, परंपराओं और विचारों में हमारी सभ्यता और संस्कृति के अनगिनत सरोकार छुपे हैं. जीवन के अनोखे रंग समेटे हमारे जीवन में रंग भरने वाली हमारी उत्सवधर्मिता की सोच मन में उमंग और उत्साह के नये प्रवाह को जन्म देती है. हमारा मन और जीवन दोनों ही उत्सवधर्मी है. हमारी उत्सवधर्मिता परिवार और समाज को एक सूत्र में बाँधती है. संगठित होकर जीना सिखाती है . सहभागिता और आपसी समन्वय की सौगात देती है . हमारे त्योहार, जो हम सबके जीवन को रंगों से सजाते हैं, सामाजिक त्योहार एक अनूठा मंच प्रदान करते हैं इनमे साथियों के साथ सहयोग करने, मिलने और सामूहीकरण करना, अपनी प्रतिभा दिखाने और विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं के बारे में सिखाने और सीखने की क्षमता होती है. ये कौशल हमारे जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा हैं और अक्सर हमारे जीवन के लगभग सभी पहलुओं के मूल में होते हैं.

इसलिए, वर्तमान समय में इनकी प्रासंगिकता का जहाँ तक प्रश्न है, व्रत -त्योहारों के दिन हम उक्त देवता को याद करते हैं, व्रत, दान तथा कथा श्रवण करते हैं जिससे व्यक्तिगत उन्नति के साथ सामाजिक समरसता का संदेश भी दिखाई पड़ता है. इसमें भारतीय संस्कृति के बीज छिपे हैं. ”पर्व त्योहारों का भारतीय संस्कृति के विकास में अप्रतिम योगदान है. भारतीय संस्कृति में व्रत , पर्व - त्योहार उत्सव , मेले आदि अपना विशेष महत्व रखते हैं. हिंदुओं के ही सबसे अधिक त्योहार मनाये जाते हैं , कारण हिन्दू ऋषि - मुनियों के रूप में जीवन को सरस और सुन्दर बनाने की योजनाएं रखी है. प्रत्येक पर्व - त्योहार , व्रत , उत्सव , मेले आदि का एक गुप्त महत्व हैं. प्रत्येक के साथ भारतीय संस्कृति जुड़ी हुई है. वे विशेष विचार अथवा उद्देश्य को सामने रखकर निश्चित किये गये हैं. मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठा के लिए मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया है. मूल्यपरक शिक्षा आज समय की मांग बन गई है. अतः इसे शीघ्रतिशीघ्र लागू करने की आवश्यकता है. वर्तमान डिजिटल युग में लोग अपनी सभ्यता-संस्कृति को भूलते जा रहे हैं. इसके कारण व्रत तथा त्योहार का महत्व बढ़ जाता है.

\*\*\*\*\*



## है वादा

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे, राजस्थान



पढ़ो पर लिखो ज्यादा,  
बोलो पर सोचो ज्यादा,  
खेलो पर पढ़ो ज्यादा,  
आप सफल होंगे है वादा.

खाओ पर चबाओ ज्यादा,  
रोइए कम हंसिये ज्यादा,  
सोओ पर जगो ज्यादा,  
आप स्वस्थ रहोगे है वादा.

मांगो कम से कम दो ज्यादा,  
रूठो कम मनाओ ज्यादा,  
आराम करो पर मेहनत ज्यादा,  
स्वाभिमान बना रहेगा है वादा.



नफरत ना करे प्रेम हो ज़्यादा,  
आज़ा दो पर मानो ज़्यादा,  
गुस्सा कम पर समझो ज़्यादा,  
जीवन सुकून से गुजरेगा है वादा.

\*\*\*\*\*



## लकड़ी उड़ चली

रचनाकार- श्रीमती रजनी शर्मा बस्तरिया रायपुर



सुनो सुनो हुआ एक अजूबा,  
सबको हो गया बड़ा अचंभा.

लकड़ी उड़ी बाबा रे बाबा,  
कागज भी संग था सादा-सादा.

पहले लड़ते थे दोनो खूब ज्यादा,  
नहीं निभाते थे वे अपना वादा.

समझाया किसी ने बन कर दादा,  
साथ रहने में है सबका फायदा.

कागज जो था सादा-सादा,

लकड़ी कमची बन हुई आधा.

हवा ने भी डोर का साथ निभाया  
बनी जब पतंग सबके मन भाया.

\*\*\*\*\*



## शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला कोलिहापुरी दुर्ग के बच्चों द्वारा भेजी गयी कहानियाँ



टिंकू और पिकू

(7)

एक घने जंगल था। जंगल में एक बंदर और हाथी रहते थे। बंदर का नाम था पिकू और हाथी का नाम था टिंकू वे दोनों दोस्त थे। एक दिन वो दोनों धुम रहे थे। तो उन्हें एक केले का पेड़ मिला। टिंकू ने कहा → "धनो हम इसे खा लेंगे है।" पर पिकू बोला → "नहीं हम इसे नहीं खाएंगे हमें इसे पक्के के लिए सत्र करना होगा।" फिर वो चले गए फिर वो हर दिन केले को देखने के लिए आते थे। एक ही महीने बीत गए पिकू और टिंकू एक दिन फिर केले को देखने आए तो केला का फूल था वो केला बन गया था वो दोनों दोस्त बहुत खुश हो गए। फिर पिकू और टिंकू दूसरे दिन गए तो उन्होंने देखा कि केले का रंग थोड़ा-सा पक्का जैसा पीला हो गया था।

दूसरे दिन पिकू और टिंकू केले को देखने गए तो वो केला पुरा पीला हो गया था। केला पक गया था। उसे देखके वे दोनों खुश हो गए। टिंकू ने कहा → "धनो हम इसे खा लेंगे है।" फिर पिकू ने कहा → "हैं चलो हम इसे खा लेंगे है।" पिकू केले के पेड़ पर चढ़ गया और हाथी को पेड़ के ऊपर से केला खिलाने लगा और वो भी केला खाने लगा।

सीख: सब का फल मीठा होता है।

नाम - तारु राहु

कक्षा - 6वीं

स्कूल - शा. प्र. मा.

शाला कोलिहापुरी

शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला  
कोलिहापुरी नि.व./जिला-दुर्ग  
दुर्ग कोड 22100703602



## टिंकू और पिंकू

(5)

एक गाँव में एक बंदर रहता था। जिसका नाम टिंकू था वह पेड़ पे चढ़कर केला खाता था। उसी गाँव में के पास जंगल है। जंगल में एक छड़ी रहता था जिसका नाम पिंकू था। पास के जंगल में एक दिन टिंकू पेड़ पे चढ़कर केले खा रहा था तभी पिंकू वहाँ पर आ गया। और टिंकू पिंकू को केले दिया पिंकू ने केला खाया। वैसे ही टिंकू और पिंकू दोस्त बन गए। वे रोज अलग-अलग पेड़ पर चढ़कर वे दोनों केले खाया करते थे। अगर एक पेड़ के केले खत्म हो जाते तो वे एक महीना रुकते उन दोनों में बहुत गहरी दोस्ती हो गई एक अगर एक महीना में केले पक जाते तो वे केले खाते बनसे पहले टिंकू खाता फिर पिंकू को देता था।

शिक्षा: - हमें हमेशा अपने दोस्तों के साथ मिलकर रहना चाहिए कभी भी दोस्ती नई देना चाहिए

प्रमाणित  
राष्ट्रीय प्रारंभिक शिक्षा  
कोलिकापुरी वि. ज. म. म. शा. दुर्ग  
ग्रुप काउ 22100703602

नाम	- नोहा साहू
वर्ग	- छठवी
स्कूल	- शास. प्र. मा. शा. कोलिकापुरी

## कहानी

### बंदर और हाथी

(4)

एक घना जंगल था। जंगल में हाथी और बंदर भी रहते हैं। हाथी का नाम डबलु और बंदर का नाम डबलु। एक दिन डबलु जंगल में टहल रहा था। तभी उसे डबलु दिखाई पड़ा बंदर ने पूछा → कि तुम कौन हो हाथी बोला → मेरा नाम डबलु है मैं दूसरे जंगल से आया हूँ हाथी ने पूछा तुम्हारा नाम क्या है।

बंदर ने बोला → मेरा नाम डबलु है। हाथी बोला → तुम मेरा दोस्त बनो तो बंदर ने बोला → हाँ मैं तुम्हारा दोस्त बनूंगा बंदर एक कैले के पेड़ पर झट चढ़ गया लेकिन उसमें कैले नहीं थे। फिर बंदर ने बोला → जब कैले के पेड़ से कैले आ जाएंगे तब हम दोनों आरोग्य 2-3 दिन ठाढ़ फिर हाथी और बंदर आए हाथी बोला → मैं तो पेड़ पर नहीं चढ़ सकता फिर बंदर ने बोला → तु नहीं चढ़ सकते लेकिन मैं तो चढ़ सकता हूँ फिर बंदर पेड़ पर चढ़ गया और कैले तोड़ने लगा हाथी बोला → मुझे भी दो कैले बंदर बोला → मैं पहले मैं फल खाऊंगा फिर तुम्हें दूंगा हाथी बोला → ठीक है तुम पहले खाओ फिर मुझे दो फिर हाथी और बंदर कैले खाकर चले गए।

सीख:- दोस्त ही दोस्त के काम आता है।

प्रधानाध्यापक

राष्ट्रीय पूर्व माध्यमिक शाला  
कोलिहापुरी वि.जं./जिला-दुर्ग  
पिन कोड 22100703602

## टिंकू और पिंटू

31/10/23

एक जंगल में हाथी और बंदर रहते थे। हाथी का नाम पिंटू था। बंदर का नाम टिंकू था। दोनों बहुत अच्छे दोस्त थे। वो दोनों जंगल जाकर केखाते टिंकू पेड़ पर चढ़ता और केले को पिंटू को देता और खुद भी खाता।

फिर एक दिन टिंकू और पिंटू दोनों जंगल गए केले तोड़ने देखा कि पेड़ पर एक बंदर नहीं था। फिर दूसरे केले के पेड़ में गए वहाँ भी केले नहीं थे। फिर रात हो गयी। दोनों पहरा देने लगे। वहीं पर एक कुँदा

केला रख दिये थे। फिर थोड़ी देर बाद टिंकू निंद में चले जा रहा था और केले के बहुत बड़े गोदाम में पहुँच गए और वे दोनों गोदाम में गिर गए।

टिंकू निंद से जाग गया और बोला- "पिंटू तुम केला चोरी कर रहे थे?" "नहीं, मैं नहीं चोरी कर रहा था।" फिर पिंटू ने बताया- "तुम निंद में चल रहे थे और

तुमने ये सब किया है।" फिर टिंकू ने बोला- "मुझे माफ कर दो मुझसे गलती हो गयी थी।"

सीख- कभी भी जाने समझे बिना कुछ भी नहीं बोलना चाहिए।  
जु. संगीता साहू - हलुकी



कक्षा - 6 वी

# बबलु और मोरा भाई

श्रीकांत

एक जंगल था। उसमें बहुत सारे जानवर रहते थे। जानवर बहुत एकठा से रहते थे उनमें एक हाथी और एक बंदर रहते थे बंदर का नाम बबलु और हाथी का नाम मोरा भाई था। एक दिन बबलु बंदर धुम रहा था। वहीं मोराभाई हाथी आया और उन में बातचीत हुई वे दोनों बहुत अच्छे मित्र थे। उन दोनों की पसंद भी एक जैसे थे उनके बहुत जोरों से झुंझ लगी, वे दोनों फल की तलाश में धुम रहे थे तभी उन्हें एक केला का पेड़ मिला अहेकेला बहुत पसंद थे। लेकिन केला पुरा पका हुआ नहीं था उनमें बस फल लगे हुए थे। बंदर ने सोचा अच्छा-खासा यह केले का पेड़ मिला था। यह भी पुरा पका हुआ नहीं है। बंदर बोला, सुनो मोराभाई हाथी चलो अभी तो केला पुरा पका हुआ नहीं है एक सप्ताह बाद आएंगे। हाथी बोला चलो बबलु बंदर भाई, वे दोनों अपने-अपने घर चले गए वे दोनों एक दिन फिर से मिले और केला के पेड़ को देखने गए उन्होंने केले के पेड़ को देखा तो उनमें फल आ गए वह भी बहुत कच्चा था। वे दोनों फिर उदास होकर अपने घर लौटे एक सुबह - सुबह का वक़्त था। उन्होंने कहा एक सप्ताह बाद फिर जाएंगे, मोरा भाई ने कहा ठीक है बबलु बंदर भाई वे एक सप्ताह होने के बाद केले पेड़ के पास पहुँचे उनकी आँखें कटी-की-फटी रह गईं केला बहुत पका हुआ था वे दोनों उस केले को मजे मजे से खाया।

मीत्र - अगर हमारा दोस्त अच्छा हो तो हम को बहुत काम भी कर सकते हैं।

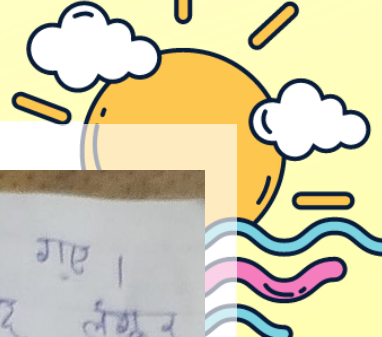




लंगूर और मंगूर (6)

एक घना जंगल था। जंगल में एक बंदर रहता था। बंदर का नाम लंगूर था और हाथी का नाम मंगूर था। एक दिन मंगूर घुमते-घुमते एक शिकारी के जाल में फस गया। हाथी ने जोर-जोर से चिल्लाया बचओ-बचओ तभी वहाँ से लंगूर गुजर रहा था। लंगूर ने बचावों-बचावों की आवाज सुनी और उस आवाज का पीछा करते लगा तभी उसको हाथी दिखाई दिया। लंगूर ने शिकारी के जाल को खींचा मंगूर ने लंगूर को सन्याताद कहा तभी से लंगूर और मंगूर बहुत अच्छे दोस्त बन गए। एक दिन लंगूर और मंगूर को कैले खाने का बहुत मत हुआ दोनो कैले के पेड़ को दूधने निकल गए थोड़ी देर चलने के बाद उसे एक कैले का पेड़ दिखाई दिया, पर कैले पेड़ ~~हल~~ हल नहीं थे मंगूर ने कहा कि हमें कुछ महलें इत्तार करना होगा फिर लंगूर और मंगूर पर लोट गए। फिर कुछ महलें इत्तार करने के बाद लंगूर और मंगूर कैले के पेड़ के पास गए लंगूर और मंगूर ने देखा कि अच्छी कैला तो ~~हल~~ अच्छे से पका हुआ नहीं है मंगूर ने कहा कि ~~हम~~ फिर से कुछ महलें इत्तार करना





होगा । फिर लंगूर और मंगूर घर लौट गए ।  
फिर कुछ महीने और इत्तार करने के बाद लंगूर  
और मंगूर पेड़ के पास गए लंगूर और  
मंगूर ने देखा कि अब केला पूरा पक  
चुका है। यह देखकर लंगूर और मंगूर बहुत  
खुश हुए। लंगूर पेड़ पर चढ़ा और केले तोड़  
कर लाया फिर लंगूर और मंगूर मजे से  
केले खाए ।

सीख :- इत्तार का फल मीठा होता है ।

नाम - गानेश्वरी साहू

कक्षा - 6वीं

स्कूल - शा. प्र. मा. शाला कोलिहापुरी

प्रमाणित  
राजकीय पूर्व माध्यमिक शाला  
कोलिहापुरी वि.सं./जिला-दुर्ग  
पाइस कोड 22100703602

## बंदर और हाथी

एक गांव के पास एक घना जंगल था। जंगल में एक बंदर और एक हाथी रहता था। हाथी का नाम मींकू और बंदर का नाम मींकू था।

मींकू बड़ा ही शरारती था और एक दिन मींकू घने जंगल में खरों-खरों निकलकर खरों-खरों ऐसे भूख लगी वह भोजन की तलाश में घूमने लगा। उसने देखा कि नदी के पास एक केले का पेड़ है। और उसमें बहुत से केले के फल लगे हैं।

इतने में ही मींकू आया और उस पेड़ पर चढ़ गया उसे भी केले भव्यधिक पसंद थे। मींकू पेड़ पर जब चढ़ा तब उसने देखा कि नीचे हाथी क्यों खड़ा है?

मींकू ⇒ हाथी तुम्हारा नाम क्या है और तुम इस पेड़ के नीचे क्यों खड़े हो?

मींकू ⇒ "मेरा नाम मींकू है मुझे बहुत भूख लगी है इसलिए मैं नीचे खड़ा हूँ।"



मीलूँ ⇒ क्या तुम्हें केबे चाहिए ।" Is

रिंछू ⇒ हाँ ।"

मीलूँ ⇒ पर केबे तो भस्मी पेके नहीं है  
तुम्हें सब करना पड़ेगा ।

रिंछू ⇒ ठीक है ।"

रिंछू ⇒ ओह ! मैं तुम्हें बचाना तो छूब गया तुम्हारा  
नाम क्या है ?

मीलूँ ⇒ मेरा नाम मीलूँ है ।

ऐसे ही दोनों बात करते रहे और इनमें  
गहरी दोस्ती हो गई । बात करने के बाद वे चले  
गये, और रेल के किले देखने भोले कल थोड़ा पकू  
पुफर उसका रंग गहरा हुआ फिर उसमें मोठस भाई  
और कुछ दिन बाद रिंछू और मीलूँ देखे देखने  
भाये वे केला वरी तरह से पकू पकू था । रिंछू  
रिंछू और मीलूँ मेले से मोठे फल खाने लगे  
नीति :- सब का फल मीठा होता है ।

नाम ⇒ बहाली देशमुख

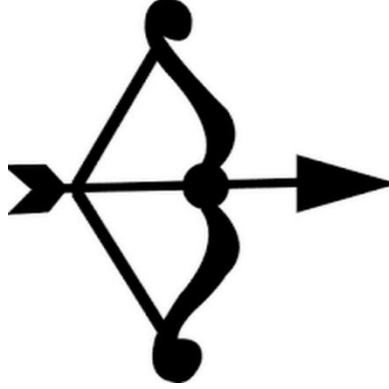
कक्षा ⇒ छठवीं

शाला ⇒ शा. पु. माध्य. शाला कैलियापुर

मध्याह्निक शाला  
कैलियापुरी वि. जं. जिला-बुर्ज  
मोबा. नं० 922109703602

## शब्द बाण

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली



शब्द ही तो बाण है जो कर दे किसी को घायल,  
सुन किसी के शब्द को कोई हो जाता है कायल.  
कह दे कोई ढाई अक्षर का शब्द हो जाता है प्यार,  
शब्द ना मिले ना ही मन मिले तो होता है इंकार.  
मधुर शब्दों से बन जाता है किसी का बिगड़े काम,  
एक शब्द से ही जग में हो जाता है किसी का नाम.  
शब्द जाल फैला कवि करता है कविता की रचना,  
कल्पनाओं की उड़ान भर दिन में देखता है सपना.  
शब्दों से ही शांति, धन, यश और मिलता है सम्मान,  
शब्दों से ही द्वेष, युद्ध, सर्वनाश और होता है अपमान.  
प्रकृति की आकर्षक शब्द ध्वनि मुग्ध करती भरपूर,  
वृक्षों की कलियाँ खिल जाती है बीज होते हैं अंकुर.  
शब्दों से ही नाटक, कहानी, गीत, संगीत और धुन बने,  
शब्द ही काट खाता है शरीर को जब शब्द घुन लगे.  
गूँज रही ओम शब्द ध्वनियाँ देव की सत्ता ब्रह्मांड में,  
जन्म लेकर मर रहे मानव जले शब्द अग्निकांड में.

\*\*\*\*\*

## 22 मार्च जल दिवस

रचनाकार- सत्यवान 'सौरभ', हरियाणा



अगर बचानी जिंदगी, करें आज संकल्प.  
जल का जग में है नहीं, कोई और विकल्प.

जैसे-जैसे जनसंख्या और अर्थव्यवस्था बढ़ती है, वैसे-वैसे पानी की माँग भी बढ़ती है. सीमित पानी और प्रतिस्पर्धी जरूरतों के साथ, पेयजल प्रबंधन चुनौतीपूर्ण हो गया है. अन्य कठिनाइयाँ, जैसे भूजल की कमी और अनियमित वर्षा. इन कठिनाइयों ने ग्रामीण आबादी को तनाव में डाल दिया है, जो पारंपरिक ज्ञान और जल ज्ञान के साथ अपनी पानी की जरूरतों को पूरा करती है. जब स्वास्थ्य की बात आती है, तो ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को पाइप से पानी की आवश्यकता होती है. पानी और ऊर्जा के संबंध को बनाये रखने के लिए जल संरक्षण को बढ़ाने और प्राकृतिक जल स्रोतों को बचाने पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए क्योंकि यह भावी ऊर्जा उत्पादन के लिए भी बहुत जरूरी है.

हममें से ज्यादातर लोग यह सोचते हैं कि पानी बचाने के लिए एक अकेला आदमी क्या कर सकता है. इस तरह के विचार से हम लोग रोज पानी नष्ट कर देते हैं. आज की दुनिया में सभी लोग इस दौड़ में लगे हैं कि हम अपने घरों में बड़े-बड़े गुसलखाने बनाये, लेकिन हम यह भूल जाते हैं कि पानी के बिना वे सब बेकार हैं. हम अपनी जरूरत से ज्यादा पानी का इस्तेमाल करते रहते हैं. कम से कम हममें से हर व्यक्ति अपने घरों और कार्यस्थलों में पानी का उचित इस्तेमाल तो कर ही सकता है. कई बार ऐसा देखा जाता है कि सड़क किनारे लगे हुए नलों से पानी बह रहा है और बेकार जा रहा है, लेकिन हम वहाँ से गुजर जाते हैं और नल को बंद करने की चिंता नहीं करते.



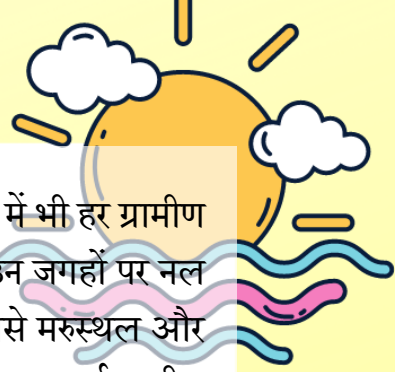
हमें इन विषयों पर सोचना चाहिए और अपने रोज के जीवन में जहां तक संभव हो पानी बचाने की कोशिश करनी चाहिए.

भारत की बात की जाए तो यहाँ प्रचुर मात्रा में बारिश होती है लेकिन आबादी बढ़ने के कारण देश में पानी की कमी महसूस की जा रही है. आबादी बढ़ने के कारण प्राकृतिक संसाधनों का अधिक इस्तेमाल होता है. जल स्रोत, स्थानीय तालाब, ताल-तलैया, नदियाँ और जलाशय प्रदूषित हो रहे हैं और उनका पानी कम हो रहा है. इस समय देश की बढ़ती आबादी को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध नहीं है. इसके अलावा भारत में खेती भी बारिश के भरोसे ही होती है. भारत में खेती की सफलता पानी की उपलब्धता पर ही निर्भर है, जिसमें बारिश के पानी की अहम भूमिका होती है. अच्छी वर्षा का मतलब अच्छी फसल होता है. वर्षा जल को बचाने की बहुत जरूरत है और यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि इसमें कोई तेजाबी तत्व न मिलने पाये क्योंकि इससे पानी और उसके स्रोत प्रदूषित हो जाएंगे.

तभी तो जल जीवन मिशन राष्ट्रीय जल जीवन कोष की नींव है. 15 अगस्त 2019 को भारत के माननीय प्रधान मंत्री ने एक सरकारी कार्यक्रम के बारे में एक बड़ी घोषणा की. जल जीवन मिशन का मुख्य उद्देश्य 2024 तक कार्यात्मक घरेलू नल कनेक्शन के माध्यम से प्रत्येक ग्रामीण परिवार को प्रति व्यक्ति प्रति दिन 55 लीटर पानी की आपूर्ति करना है. वर्षा जल संचयन और जल संरक्षण भी मिशन के सबसे महत्वपूर्ण पहलू हैं. पुनर्नवीनीकरण पानी और रिचार्जिंग संरचनाओं का उपयोग करना, जलमार्ग का विकास, पेड़ लगाने पर ध्यान दे रहे हैं. पारंपरिक और अन्य जल निकायों का जीर्णोद्धार किया जा रहा है.

यह मिशन नल कनेक्शनों को काम में लाकर नल के पानी के कनेक्शन की कमी को दूर करेगा. यह स्थानीय प्रबंधन पर आधारित है कि कितना पानी उपयोग किया जाता है और कितना उपलब्ध है. यह मिशन पानी की कटाई, पानी को सीधे धरती में डालने और घरेलू अपशिष्ट जल का प्रबंधन करने जैसी चीजों के लिए स्थानीय बुनियादी ढाँचे का निर्माण करेगा ताकि इसे फिर से इस्तेमाल किया जा सके. 2024 तक ग्रामीण घर के प्रत्येक व्यक्ति को एक नल कनेक्शन से प्रतिदिन 55 लीटर पानी मिल सकेगा. मिशन समुदाय को पानी के लिए एक योजना के साथ आने में मदद करता है जिसमें बहुत सारी जानकारी, शिक्षा और संचार शामिल है. इस योजना में 3 लाख करोड़ रुपये की राशि दी गई. इस मिशन में हर कोई पानी के लिए जन आंदोलन को सर्वोच्च प्राथमिकता देने में मदद करता है. हिमालयी और उत्तर पूर्वी राज्यों के लिए, फंड को केंद्र और राज्य के बीच 90:10, बाकी राज्यों के लिए 50:50 और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए 100% विभाजित किया गया है.





जल जीवन मिशन के तहत, तमिलनाडु और महाराष्ट्र के एससी/एसटी बहुल गाँवों में भी हर ग्रामीण परिवार को नल का पानी दिया जाता है, ताकि "कोई भी छूट न जाए." साथ ही, उन जगहों पर नल के पानी को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है, जहां पानी की गुणवत्ता खराब है, जैसे मरुस्थल और सूखा प्रभावित क्षेत्र, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति बहुसंख्यक गाँव, सांसद आदर्श ग्रामीण योजना गाँव, इत्यादि. पानी समितियों की योजना में गाँव की जलापूर्ति प्रणाली भी अच्छी स्थिति में है, जिसमें वे व्यवस्था को व्यवस्थित तरीके से संचालित करते हैं. इनमें से कम से कम आधे संघों में 10 से 15 सदस्य हैं, जिनमें से कम से कम आधी महिलाएँ हैं. अन्य सदस्य स्वयं सहायता समूहों, मान्यता प्राप्त सामाजिक और स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं, आँगनवाड़ी शिक्षकों और अन्य स्थानों से आते हैं. समितियों ने अपने सभी संसाधनों का उपयोग करने वाले गाँव के लिए एकमुश्त कार्य योजना तैयार की हैं.

राष्ट्रीय ग्रामीण जल आपूर्ति और स्वच्छता मिशन को अमल में लाने में कुछ समस्याएँ हैं जिसमें प्रमुख विश्वसनीय पेयजल स्रोतों की कमी है. जल-तनावग्रस्त, सूखा-प्रवण और उपोष्णकटिबंधीय जैसे क्षेत्रों में, भूजल, असमान इलाके और बिखरी हुई ग्रामीण बस्तियों में स्थान-विशिष्ट संदूषकों की उपस्थिति है तो साथ ही, गाँव में जलापूर्ति के बुनियादी ढाँचे के प्रबंधन और संचालन के लिए स्थानीय ग्राम समुदायों की अक्षमता आड़े आती है. कुछ राज्यों में, विशेष रूप से कोविड -19 महामारी के बाद, मैचिंग स्टेट शेयर जारी करने में देरी भी इस मिशन की सफलता के रास्ते में बाधा बन रही है. जल जीवन मिशन में अब तक की प्रगति देखे तो जिस समय जल जीवन मिशन की घोषणा की गई थी, उस समय 18.93 करोड़ ग्रामीण परिवारों में से 17.1% के पास नल के पानी के कनेक्शन थे. इसका मतलब यह हुआ कि 3.23 करोड़ ग्रामीण घरों में नल के पानी के कनेक्शन थे.

जेजेएम के तहत अब तक 5.38 करोड़ (28%) ग्रामीण घरों में नल के पानी के कनेक्शन स्थापित किए जा चुके हैं. इसलिए, देश के 19.22 बिलियन ग्रामीण परिवारों में से 8.62 बिलियन (या 44.84 प्रतिशत) पीने योग्य नल का पानी है. गोवा, तेलंगाना, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह और पुडुचेरी जैसे राज्यों के ग्रामीण इलाकों में नल से बहते पानी वाले घरों की संख्या 100% तक पहुंच गई है. "हर घर जल" हर किसी की सर्वोच्च प्राथमिकता बन गया है. मिशन का प्राथमिक उद्देश्य जितना हो सके कम से कम बर्बाद करते हुए पानी की बचत करना है. इस समय पृथ्वी ग्रह पर जीवन को बचाये रखने के लिए सबसे बड़ी जरूरत पानी को बचाने की है; यह सुनिश्चित करने के लिए जल संसाधनों का प्रबंधन करके किया जाएगा कि देश में सभी को समान मात्रा में पानी मिले.

जल से धरती है बची, जल से है आकाश ! जल से ही जीवन जुड़ा, सबका है विश्वास !!

\*\*\*\*\*



## हमर नवां साल हा

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", बालोद



लाल लाल फूल के मारे,  
लथरत हावै,  
सेम्हर परसा के डाल हा.  
धनहा डोली मा,  
मउर कस फभथे  
खड़े गहूं के बाल हा.  
चांदी के मौर पहिरे,  
तरिया के जम्मो आमा हे,  
डारा मा बासुरी बजावथे  
जिहां नंदलाल हा.  
हवा , पानी, जीव पौधा,  
सब मा नवां जोश हे,  
खुशी के रंग लेके आवथे,  
हमर नावां साल हा.

\*\*\*\*\*



## बताओ उसका नाम

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", बालोद



रोज मुंडेर पर आता है,  
जोर-जोर से चिल्लाता है.  
काला काला जिनका रंग,  
बच्चों को करता है तंग.  
रोटी हाथ से छिनता है,  
अन्न दानों को बिनता है.  
भले ही तन का काला है,  
अनेक सूचना देने वाला है.  
करता रहता है काँव-काँव.  
तो चलो बताओ उनका नाम.

\*\*\*\*\*



## आदतें बदलिए पानी बचाइए

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा

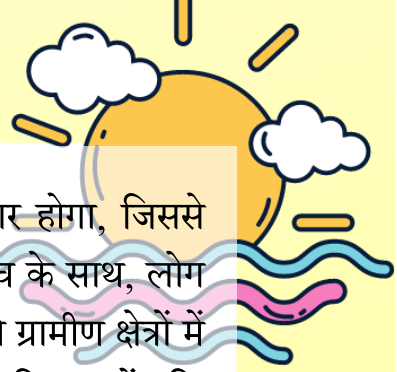


जल से जीवन है जुड़ा, बूँद-बूँद में सीख  
नहीं बचा तो मानिये, मच जाएगी चीख

नीति आयोग की 2018 की एक रिपोर्ट के अनुसार, 600 मिलियन भारतीय अत्यधिक जल संकट का सामना कर रहे हैं और सुरक्षित पानी तक अपर्याप्त पहुँच के कारण हर साल लगभग दो लाख लोगों की मौत हो जाती है. 2030 तक, देश की पानी की माँग उपलब्ध आपूर्ति से दोगुनी होने का अनुमान है, जो लाखों लोगों के लिए गंभीर पानी की कमी और देश के सकल घरेलू उत्पाद में ~ 6% की हानि का संकेत है. अध्ययनों से यह भी पता चलता है कि 84% ग्रामीण घरों में पाइप से पानी की सुविधा नहीं है, देश का 70% से अधिक पानी दूषित है.

जल जीवन मिशन ने 2024 तक कार्यात्मक घरेलू नल कनेक्शन के माध्यम से प्रत्येक ग्रामीण परिवार को प्रति व्यक्ति प्रति दिन 55 लीटर पानी की आपूर्ति की परिकल्पना की है. यह जल शक्ति मंत्रालय के अधीन है. इसे 2019 में लॉन्च किया गया था. यह 2024 तक हर ग्रामीण घर में पीने का पानी उपलब्ध कराने के लिए सरकार के जल जीवन मिशन का एक घटक है. यह योजना एक अनूठे मॉडल पर आधारित है, जहाँ ग्रामीणों की पानी समितियाँ यह तय करेंगी कि वे अपने द्वारा उपभोग किए जाने वाले पानी के लिए क्या भुगतान करेंगी. .

इस पहल का भारत में ग्रामीण और शहरी समुदायों पर महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक प्रभाव है जैसे बेहतर स्वास्थ्य के लिए स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल की उपलब्धता से लोगों के स्वास्थ्य में काफी सुधार हो सकता है. उचित स्वच्छता और साफ पानी की आपूर्ति के अभाव में जलजनित



रोग फैल सकते हैं. नल से जल पहल से सुरक्षित पेयजल तक पहुँच में सुधार होगा, जिससे जलजनित रोगों की घटनाओं में कमी आ सकती है. सुरक्षित पेयजल तक पहुँच के साथ, लोग उत्पादक गतिविधियों पर अधिक समय व्यतीत कर सकते हैं, जैसे कि खेती, जो ग्रामीण क्षेत्रों में कई लोगों के लिए आजीविका का मुख्य स्रोत है. इससे उत्पादकता और आर्थिक विकास में वृद्धि हो सकती है. इस पहल से सुरक्षित और स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराकर ग्रामीण परिवारों के स्वास्थ्य और स्वच्छता में सुधार की उम्मीद है, जिससे जलजनित रोगों की घटनाओं में कमी आएगी.

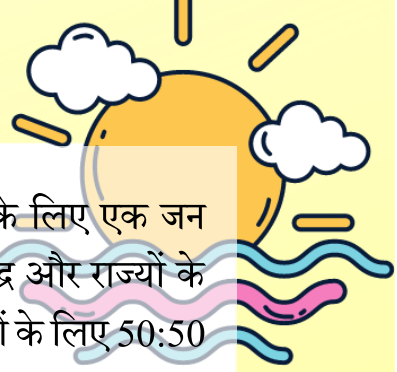
पाइप द्वारा जल आपूर्ति तक पहुँच ग्रामीण परिवारों, विशेषकर महिलाओं के लिए समय और प्रयास की बचत करेगी, जो परंपरागत रूप से दूर के स्रोतों से पानी एकत्र करने के लिए जिम्मेदार हैं. स्वच्छता तक पहुँच में वृद्धि: इस पहल से स्वच्छता सुविधाओं की पहुँच भी बढ़ेगी, क्योंकि घरेलू शौचालयों के लिए पाइप जलापूर्ति का उपयोग किया जा सकता है. पहल भूजल स्रोतों पर निर्भरता को कम करेगी, जो भूजल संसाधनों के संरक्षण में मदद करेगी और समग्र पर्यावरणीय स्थिरता में योगदान देगी.

नल से जल पहल, जिसका उद्देश्य 2024 तक हर घर में पाइप से पानी की आपूर्ति करना है, कई चुनौतियों का सामना करती है. नल से जल पहल को लागू करने में सबसे बड़ी चुनौती कई क्षेत्रों में बुनियादी ढाँचे की कमी है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में. पाइप वाली जल आपूर्ति प्रणाली के निर्माण के लिए बुनियादी ढाँचे में महत्वपूर्ण निवेश की आवश्यकता होती है, जिसमें पाइप, पंप और उपचार संयंत्र शामिल हैं. पहल के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचे के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण फंडिंग की आवश्यकता होती है, और सरकार को इस पहल के लिए पर्याप्त फंडिंग हासिल करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है.

पहल की सफलता स्थानीय स्तर पर योजना को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित करने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति और प्रशासनिक क्षमता पर भी निर्भर करती है. पानी की आपूर्ति की गुणवत्ता सुनिश्चित करना एक महत्वपूर्ण चुनौती है, क्योंकि जल स्रोतों के संदूषण और प्रदूषण से स्वास्थ्य को खतरा हो सकता है और पहल की प्रभावशीलता कम हो सकती है. पहल की सफलता पानी के उपयोग, संरक्षण और स्वच्छता प्रथाओं के संदर्भ में लोगों के व्यवहार को बदलने पर भी निर्भर करती है. कुछ राज्यों में जल संसाधनों के बंटवारे को लेकर अंतर्राज्यीय विवाद हो सकते हैं, जो पहल की प्रगति को बाधित कर सकते हैं.

जलवायु परिवर्तन जल संसाधनों की उपलब्धता को प्रभावित कर सकता है, और इसलिए, पहल की स्थिरता मिशन पानी के लिए सामुदायिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इसमें मिशन के प्रमुख



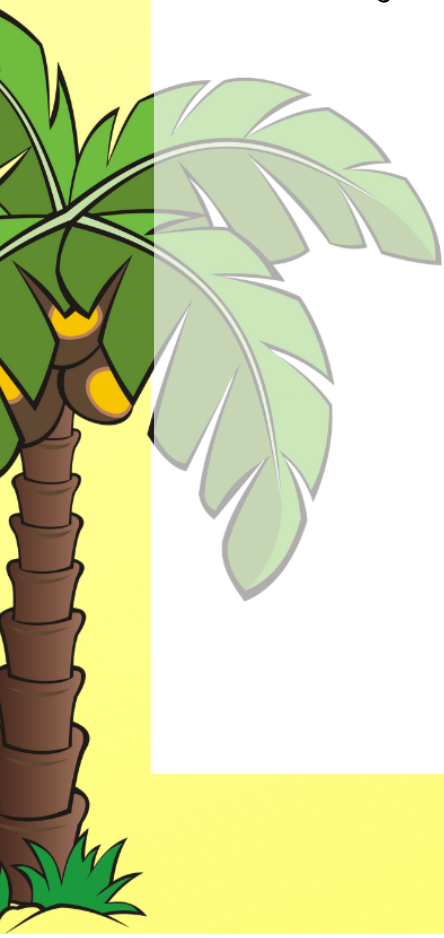


घटक के रूप में व्यापक सूचना, शिक्षा और संचार शामिल है. जेजेएम पानी के लिए एक जन आंदोलन बनाना चाहता है, जिससे यह हर किसी की प्राथमिकता बन जाए. केंद्र और राज्यों के बीच फंड शेयरिंग पैटर्न हिमालयी और पूर्वोत्तर राज्यों के लिए 90:10, अन्य राज्यों के लिए 50:50 और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए 100% है.

आजादी के 70 साल बाद भी, लगभग 50% भारतीय लोग पीने के पानी तक पहुंच नहीं पाते हैं. केंद्र और राज्य स्तर पर अलग-अलग सरकार ने इसके लिए काम किया है, लेकिन वास्तविकता एक ही है कि देश के लोगों, विशेषकर महिलाओं को पीने के पानी के लिए मीलों पैदल चलना पड़ता है. इसलिए लाल किले से पीएम मोदी ने जल जीवन मिशन की घोषणा की थी. जल जीवन मिशन जल शक्ति मंत्रालय द्वारा राज्यों के साथ साझेदारी में लागू किया जाता है. इसका उद्देश्य 2024 तक देश के प्रत्येक ग्रामीण परिवार को नियमित और दीर्घकालिक आधार पर निर्धारित गुणवत्ता का पर्याप्त पेयजल उपलब्ध कराना है.

केंद्रीय सरकार ने पीएम जल जीवन मिशन के तहत 3.6 लाख करोड़ रुपये का आवंटन किया है. पीएम ने भारत को पूरी तरह से खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) बनाने पर भी भरोसा जताया है. यह मिशन सेवा वितरण पर केंद्रित है न कि आधारभूत संरचना निर्माण पर. प्रधानमंत्री मोदी ने विभिन्न राज्यों, गांवों और स्थानीय निकायों को इसके प्रति एक मजबूत अभियान बनाने का श्रेय दिया है. नल से जल पहल का उद्देश्य 2024 तक ग्रामीण भारत में हर घर में पाइप से पानी की आपूर्ति करना है. इस पहल का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव है, और यह पानी और स्वच्छता तक सार्वभौमिक पहुंच के व्यापक लक्ष्य में योगदान देता है.

\*\*\*\*\*





## भटके मानव

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", राजिम



कैसा जमाना आ गया, करते नहीं सम्मान हैं.  
नीचा दिखाने में तुले, लेने लगे अब जान हैं.  
छोटे बड़े ना देखते, दुश्मन बने बैठे यहाँ.  
ईश्वर स्वयं कहने लगे, मानव कि क्या पहचान है.

पापी बड़े जग में यहाँ, सत राह को सब छोड़ते.  
उपदेश देना जानते, वे ग्रंथ से मुँह मोड़ते.  
ईर्ष्या भरे मन में जहाँ, गलती नहीं स्वीकारते.  
भटके मनुज हर राह से, नाता सभी से तोड़ते.

हम एक माटी के बने, इक दूसरे से प्रीत है.  
मधुरस भरे वाणी रहें, हर कदम में संगीत है.  
है जन्म मानव का लिए, खेलें धरा की गोद में.  
गर द्वेष मन से त्याग दें, प्रतिदिन हमारी जीत है.

\*\*\*\*\*



## मैं रंग बिरंगी फुलवारी हूँ

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण



मैं रंग-बिरंगी पुष्पों की फुलवारी हूँ  
मैं वसुधा को बनाती सुंदर प्यारी हूँ.

मैं नीत-नीत नूतन बहार लाती हूँ  
मैं प्रकृति को पुष्पों से सजाती हूँ.

मैं हवा को सुरभित कर जाती हूँ  
मैं सब के तन-मन को महकाती हूँ.

मैं तरुओं को हरा-भरा बनाती हूँ  
मैं पुष्प-कली में रंग भर जाती हूँ.

मैं भ्रमर, तितलियों को लुभाती हूँ



मैं पंछी, कोयल को कुक लगवाती हूँ.

मैं मोर, पपीहरा को मोहित करती हूँ  
मैं झूम-झुम, मस्त-मगन हो जाती हूँ.

मैं भोर में रवि का स्वागत करती हूँ  
मैं सुरभित पुष्प का अर्पण करती हूँ.

\*\*\*\*\*



## ऐ मौसम, क्यों डराते हो

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", बालोद



सुन ऐ काले काले बादल,  
बिन मौसम क्यों आते हो.  
छाते, रैन शूट सब अंदर हैं,  
सहसा आके हमें भिगाते हो.

बेमौसम ये पानी कीचड़,  
बिल्कुल नहीं सुहाता है.  
नाक कान बहने लगता है,  
तबियत बिगड़ जाता है.

हल्की सर्दी और खांसी से,  
दिल अपना डर जाता है.  
कोविड को सोचकर के,



तन मन सिहर जाता है.  
मुश्किल से उबरे हैं उससे,  
तुम क्यों और डराते हो.  
बिन मौसम क्यों आते हो.

\*\*\*\*\*



## दुनिया माने

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल



मोटू भैया बड़े सयाने,  
आते हरदम खुशी लुटाने.

गरम समोसा, लड्डू, पेड़ा,  
खाने के हैं वो दीवाने.

मोटू और मुटल्ला कहके,  
सब देते हैं उनको ताने.

कभी नहीं वो दौड़ लगाते,  
जब बोलो तो करें बहाने.

दस बच्चे एक साथ उठाते,  
उनकी ताकत दुनिया माने.

\*\*\*\*\*



## बस यही तो खूबसूरत खेल है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



दुख भी शरमा जाएंगे  
यह कैसा माहौल है  
जियो अगर दुखों को खुशी से  
जिंदगी में यह सबसे यह अनमोल है

कभी ढेरों खुशियां आती है  
कभी गम आते बेमिसाल है  
घबरा जाए तो चुनौतियां से  
वह भी क्या इंसान है

जीना सिखा दे बुरे वक्त में  
वही असल इम्तिहान है





इम्तिहानो से भरी जिंदगी यही  
खूबसूरत मिसाल है

सिर्फ सुख या सिर्फ दुख ही  
जीवन में यह सरासर बेमेल है  
जिंदगी में उतार-चढ़ाव होते रहें  
बस यही तो खूबसूरत खेल है

जिंदगी सुखों और दुखों का  
बहुत ही खूबसूरत मेल है  
जिंदगी में उतार-चढ़ाव  
बस एक खूबसूरत खेल है

जिस प्रकार दो पहियों से  
पटरी पर दौड़ती रेल है  
बस उतार-चढ़ाव जिंदगी के  
खूबसूरत खेल है

\*\*\*\*\*



## प्रकृति

रचनाकार- आशा उमेश पांडेय



मखमली हरियाली.  
लगे मन आली आली.  
शैल गिरी की शोभा को.  
सब ही निहारे है.

बादलों की ये छटाएं.  
काली काली है घटाएं.  
मन को लुभाती यह.  
प्रकृति नजारे है.

हरा भरा ये नजारा.  
लगता है अति प्यारा.  
प्रकृति की गोद में तो.  
खेलती बहारें है.



हृदय उमंग भरे.  
जैसे बागों फूल झरे.  
जीव-जगत सब ही.  
प्रभु के सहारे है.

\*\*\*\*\*



## गरमी

रचनाकार- कलेश्वर साहू, बिल्हा बिलासपुर



तातेतात गरमी लेके,  
सुरुज भईया आथे.  
कभू लकलक ले घाम,  
त कभू झाँझ चलाथे.

तावा बरोबर भुइयाँ जरथे,  
रुख-राई घलो सुखाथे.  
थरथर थरथर पछीना बोहाय,  
गरमी जउँहर जनाय.

ठंडा जिनिस जम्मो ल भाय,  
गुल्फी, पेप्सी मन ल ललचाय.  
रुख-राई के छाँव सुख देथे,



गरमी ले जम्मो ल बचाय.

पंखा, कुलर गरमी ले,  
राहत कुछू देवाथे.  
भनभन करथे मच्छर,  
पीरा अड़बड़ पहुँचाथे.

तातेतात गरमी लेके,  
सुरुज भईया आथे.  
कभू लकलक ले घाम,  
त कभू झाँझ चलाथे.

\*\*\*\*\*

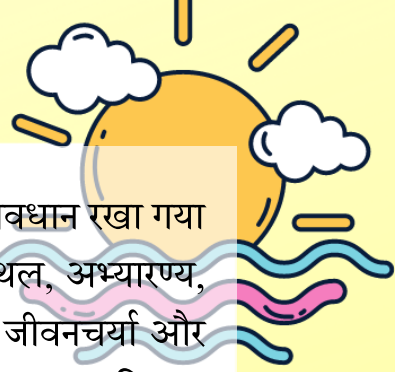


## पर्यावरण संरक्षण

रचनाकार- पूजा गुप्ता, मिर्जापुर



भौतिक विकास के पीछे दौड़ रही दुनिया ने जरा ठहरकर साँस ली तब उसे अहसास हुआ कि चमक-दमक की क्या कीमत चुकाई जा रही है. आज ऐसा कोई देश नहीं है जो पर्यावरण संकट पर मंथन न कर रहा हो. भारत भी चिंतित है, लेकिन जहाँ दूसरे देश भौतिक चकाचौंध के लिए अपना सबकुछ लुटा चुके हैं, वहीं भारत के पास आज भी बहुत कुछ बचा हुआ है. पश्चिम के देशों ने प्रकृति को हद से ज्यादा नुकसान पहुँचाया है. पेड़ काटकर कांक्रीट के जंगल खड़े करते समय उन्हें अंदाज नहीं था कि इसके क्या गंभीर परिणाम होंगे. प्रकृति को नुकसान पहुँचाने से रोकने के लिए पश्चिम में मजबूत परंपराएँ भी नहीं थीं. प्रकृति संरक्षण का कोई संस्कार अखण्ड भारतभूमि को छोड़कर अन्यत्र देखने में नहीं आता है, जबकि सनातन परम्पराओं में प्रकृति संरक्षण के सूत्र मौजूद हैं. हिन्दू धर्म में प्रकृति पूजन की मान्यता है. भारत में पेड़-पौधों, नदी-पर्वत, ग्रह-नक्षत्र, अग्नि-वायु सहित प्रकृति के विभिन्न रूपों के साथ मानवीय रिश्ते जोड़े गए हैं. पेड़ की तुलना संतान से की गई है तो नदी को माँ स्वरूप माना गया है. ग्रह-नक्षत्र, पहाड़ और वायु देवरूप माने गए हैं. हमें विश्व का सबसे बड़ा तथा श्रेष्ठ लोकतंत्र होने का गौरव प्राप्त है. इसके बावजूद आज हम परिधान से लेकर खान-पान, ज्ञान से लेकर सम्मान, उत्पादन से लेकर उपभोग, और समझने से लेकर विचारने तक हर चीज में पश्चिमी तौर-तरीकों से प्रभावित हैं. भारतीय संस्कृति पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण तथा सकारात्मक भूमिका रखती है. मानव तथा प्रकृति के बीच अटूट रिश्ता कायम किया गया है, जो पूर्णतः वैज्ञानिक तथा संतुलित है. हमारे शास्त्रों में पेड़, पौधों, पुष्पों, पहाड़, झरने, पशु-पक्षियों, जंगली-जानवरों, नदियाँ, सरोवर, वन, मिट्टी, घाटियों यहाँ तक कि पत्थर भी पूज्य हैं और उनके प्रति स्नेह तथा सम्मान की बात कही गई है. हमारा यह चिन्तन पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त रखने



के लिये सार्थक तथा संरक्षण के लिये बहुमूल्य है. तीर्थों की यात्रा के पीछे यह प्रावधान रखा गया कि मानव विभिन्न जगहों की भौगोलिकता, पर्यावरण का ज्ञान, मनोरंजन के स्थल, अभ्यारण्य, अरण्य, सरोवर, झीलों के शुभ दर्शन कर सकते हैं. इससे लोगों के रहन-सहन, जीवनचर्या और जीवन-यापन करने के तौर-तरीकों का बोध होता है और अनेकता में एकता का आभास मिलता है. साथ ही मानव नैसर्गिक सौन्दर्यता से प्रभावित होता है और उसे मानसिक शान्ति की अनुभूति होती है.

हमारी संस्कृति पर्यावरण संरक्षण प्रधान रही है, जो प्रदूषण पर विराम लगाती है और आध्यात्मिक मनोविज्ञान को स्वीकार करती है और स्पष्ट करती है कि मानव के प्राणों की सुरक्षा तथा पवित्रता की सुरक्षा प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा पर निर्भर करती है. भारतीय संस्कृति के अनुसार जिस मनुष्य को आध्यात्मिक अनुभूति हो जाती है तो वह अल्प साधनों से अपने हितों की पूर्ति कर सकता है, वह हर तरह से सामाजिक तथा आर्थिक बंधनों से मुक्त हो जाता है. ऊँच-नीच के भेदभाव से ऊपर उठ जाता है. आज जरूरत इस बात की है कि मानव अपनी शक्ति को देशहित में सुदृढ़ बनाए और नैतिक मूल्यों को समझे तथा नैतिक अनुशासन से नियमबद्ध हो, तभी उसकी भौतिकतावादी प्रवृत्ति पर अंकुश लग सकता है. हमारे प्राचीन शास्त्रों में इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं कि इस तरह के कार्य को सम्पन्न करने के लिये किसी विशेष अध्ययन तथा चिन्तन की आवश्यकता नहीं होती है. हमारी संस्कृति पर्यावरण के संरक्षण में नियमबद्ध तथा वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी का सूत्र प्रदान करती है. इसमें कहीं भी संकीर्णता, धर्मान्धता, घृणा, पृथक्ता आदि दुर्गुणों के लिये कोई स्थान नहीं है. आवश्यकता इस बात की है कि हमें निष्ठापूर्वक नैतिक अनुशासन की समस्त जन समुदाय को शिक्षा देनी चाहिए, जिससे पर्यावरण के प्रति प्रेम तथा उत्साह की भावना को प्रबल बनाया जा सके. हमारे शास्त्र किसी भी उद्देश्य को ध्यान में रखकर क्यों न रचे गए हों, एक बात स्पष्ट है कि आज यह व्यवस्था खास तौर पर पर्यावरण संरक्षण के लिये एक नयी दिशा तथा प्रदूषण से उत्पन्न चुनौतियों को जड़ से समाप्त करने में सक्षम है. पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा बचपन से ही आरम्भ की जाए और लोगों के मन में विश्वास कायम किया जाए, जब एक अबोध बालक अपने आस-पास की नैसर्गिक सुन्दरता से अति प्रसन्न होता है, तो एक परिपक्व मस्तिष्क उसके विनाश की बात क्यों सोचता है? इसलिए हमें यह प्रयास करना चाहिए कि हम लोगों को ज्यादा से ज्यादा प्राकृतिक सुन्दरता का अनुसरण कराएँ और इससे सम्बन्धित ज्ञान दें और उन्हें इस बात से परिचित कराएँ कि हम चारों ओर से पर्यावरण के द्वारा प्रदान किये गये सुरक्षा कवच से घिरे हैं तो हमें इस कवच में सुराख करने का कभी भी नहीं सोचना चाहिए, अपितु उसे मजबूती प्रदान करनी चाहिए.

\*\*\*\*\*



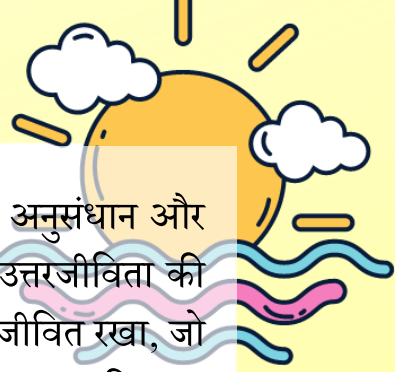
## महिलाएँ: सामाजिक परिवर्तन की अग्रदूत

रचनाकार- सलिल सरोज, नयी दिल्ली



हमें सर्वप्रथम अपने आप पर विश्वास होना चाहिए. हमें विश्वास होना चाहिए कि जो चीज़ हमें उपहार में दी गई है, उसे प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार होना चाहिए. - मैडम क्यूरी

शिक्षा एक आवश्यक मानवीय गुण है. शिक्षा अच्छे समाज को आकार देने वाली और सामाजिक संरचना में अंतिम व्यक्ति के लिए स्वतंत्रता सुनिश्चित करने वाली सबसे गहन शक्तियों में से एक है. शिक्षा पर अपने विचार व्यक्त करते हुए स्वामी विवेकानंद ने टिप्पणी की: "शिक्षा मनुष्य में पहले से मौजूद पूर्णता की अभिव्यक्ति है." शिक्षा न केवल हमें सफल होने का मंच देती है बल्कि सामाजिक आचरण, साहस, चरित्र और मानवता के उत्थान की क्षमता का ज्ञान भी देती है. पूरे इतिहास में, मानवता को प्रकृति के उतार-चढ़ाव से लड़ना पड़ा और मानवता को असंख्य चुनौतियों के समक्ष जीवित रहने और जीवन को व्यवस्थित करने के लिए नवाचार करना पड़ा. अनुसंधान और विकास का उपयोग जीवन और पर्यावरण के लिए खतरों को रोकने, समाप्त करने या कम करने और सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तकनीकी विकल्प बनाने के लिए किया गया है. प्राचीन युग में लोग खानाबदोश शिकारी और संग्राहक के रूप में भोजन के लिए पर्यावरण में पाए जाने वाले जानवरों और पौधों का उपयोग करते थे, फिर उन्होंने, रचनात्मकता को संसाधित करके अपनी खाद्य आपूर्ति का विस्तार करना सीखा. लेकिन अब, कृषि उत्पादकता, परिवहन, अंतरिक्ष अन्वेषण से कृत्रिम बुद्धिमत्ता में सुधार ने मानव जाति के

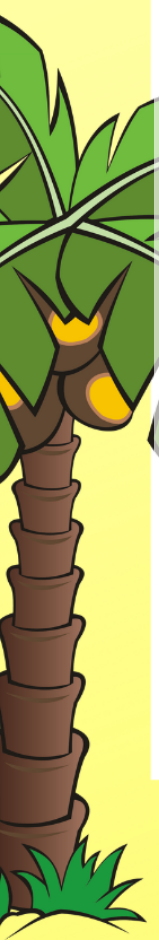


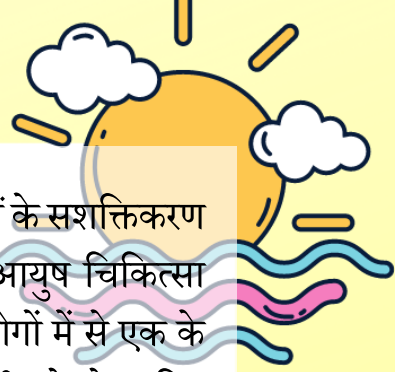
इतिहास में अभूतपूर्व तरीके से मानव जाति की नियति को बदल दिया है और अनुसंधान और विकास गतिविधियों के पीछे मूलभूत नैतिक मुद्दों को उठाया है. योग्यतम की उत्तरजीविता की अवधारणा ने मनुष्य को तर्क करने की क्षमता और वैज्ञानिक स्वभाव के कारण जीवित रखा, जो मानव जाति के विकास का आधार है. आवश्यक प्रश्न जो हमेशा उठता था वह यह था कि क्या मानव जाति विज्ञान और प्रौद्योगिकी का उपयोग मानव प्रगति के लिए एक उपकरण के रूप में कर रही है या अपने स्वयं के स्वार्थी जुनून की मरहम बन रही है? मानवता की पूर्णता की ओर इस अग्रसर मार्च में समाज के हर वर्ग विशेष रूप से महिलाओं की भागीदारी हमेशा विभिन्न हितधारकों के सशक्तिकरण के लिए एक प्रमुख विषय रही है.

इस प्रकार अनुसंधान और विकास का विचार मनुष्य के जीवन को हर संभव आयाम में प्रभावित करता है, मनुष्य को एक किसान चरवाहा आदमी से निर्जीव ऊर्जा द्वारा समर्थित मशीनों के जोड़ तोड़ में बदल देता है. महिलाओं के सशक्तिकरण के असंख्य आयाम हैं जैसे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, शिक्षा आदि. महिलाओं के जीवन के हर पहलू में, अनुसंधान और विकास भीतर की शक्ति को उजागर करने में एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं. इसके अलावा, अनुसंधान और विकास में महिलाओं की भागीदारी से जिज्ञासा और वैज्ञानिक सोच का एक दृष्टिकोण विकसित होता है जो महिलाओं और मानव जाति को उन्नत बनाता है.

21वीं सदी में महिलाओं का सशक्तिकरण मानव अधिकारों के महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है. यदि विकास समान नहीं है तो विकास टिकाऊ नहीं है. और यदि लैंगिक अंतरों का समाधान नहीं किया जाता है तो समानता प्राप्त नहीं की जा सकती है. प्रत्येक महिला के मानवाधिकारों और क्षमता को बनाए रखना राष्ट्रों का कर्तव्य है.

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और संस्कृति और सूचना तक पहुँच के साथ महिलाओं का सशक्तिकरण स्कूल की बेंचों पर शुरू होता है. लैंगिक समानता में साक्षरता और विज्ञान तक पहुँच शामिल है. लड़कियों के लिए अपनी खुद की सूचित पसंद करने की वास्तविक संभावनाएँ इसका अभिन्न अंग हैं. लैंगिक समानता भी मानव अधिकारों, स्वास्थ्य और सतत विकास के लिए एक पूर्व-आवश्यकता है. भारत में, 1986 में नई शैक्षिक नीति के अनुवर्ती के रूप में दसवीं कक्षा तक के सभी छात्रों के लिए विज्ञान को अनिवार्य बनाने का निर्णय लिया गया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी लड़कियाँ विज्ञान पढ़ सकेंगी. इस प्रकार, शिक्षा और लिंग पर नारीवादी विमर्श में महिलाओं की अनुशासनात्मक पसंद महत्वपूर्ण रही है. उच्च शिक्षा को सकारात्मक भेदभाव के लिए संवैधानिक प्रावधानों के संरक्षण की जिम्मेदारी सौंपी गई.





उच्च शिक्षा और अनुसंधान और विकास में संभावनाओं के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण के पहलू में विज्ञान और प्रौद्योगिकी, मानव संसाधन विकास, स्वास्थ्य और आयुष चिकित्सा प्रणाली से संबंधित विभिन्न आयाम हैं. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को उन कुछ लोगों में से एक के रूप में जाना जाता है जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित किया-उन्हें महिला मुक्ति के एक दुर्लभ प्रवर्तक के रूप में चिह्नित किया. महात्मा गांधी के शब्दों में, "महान समस्या (समाज में महिलाओं की भूमिका) में मेरा योगदान जीवन के हर क्षेत्र में सत्य और अहिंसा की स्वीकृति के लिए मेरी प्रस्तुति में निहित है, चाहे वह व्यक्तियों के लिए हो या राष्ट्रों के लिए. मैंने इस आशा को गले लगाया है कि इसमें यह, महिला निर्विवाद नेता होगी और इस प्रकार मानव विकास में अपना स्थान पाकर, अपनी हीन भावना को त्याग देगी."

ऐसी असंख्य समस्याएँ हैं जिनका सामना महिलाएँ समकालीन व्यवस्था में करती हैं. यह महत्वपूर्ण है कि वे उच्च शिक्षा, स्वास्थ्य और वैज्ञानिक अनुसंधान तक पहुँच और अनुसंधान और नौकरी के अवसरों के लिए एक गैर-भेदभावपूर्ण वातावरण का सामना करें. उन महिला वैज्ञानिकों को मुख्यधारा में वापस लाने के प्राथमिक उद्देश्य को वापस लाने की आवश्यकता महसूस की गई, जिनका पारिवारिक दायित्वों और अन्य सामाजिक-साँस्कृतिक जिम्मेदारियों के कारण कैरियर में ब्रेक था. इसके अलावा, उच्च शिक्षा प्रणाली को उन नीतियों और प्रक्रियाओं के माध्यम से संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है जो महिलाओं की समानता और विविधता को पहचानती हैं और उनकी उपलब्धि को सुगम बनाती हैं. उच्च शिक्षा में समानता की चिंता भी उच्च शिक्षा, अनुसंधान और विकास के मूलभूत सिद्धांतों में से एक के रूप में स्थापित की गई है. इस प्रकार, मानवाधिकारों को शिक्षा के केंद्र में रखने और मानव अधिकारों, मानव कर्तव्यों और मानव मूल्यों के बारे में जागरूकता के कार्यक्रमों के माध्यम से संतुलित मानव विकास का प्रश्न महत्व प्राप्त करता है. अनुसंधान और विकास में महिलाओं के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का संज्ञान लेते हुए, यह माना जा सकता है कि यह महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को आगे बढ़ाने और महात्मा गांधी के आदर्शों की कल्पना करने के लिए नीति निर्माण और नीति कार्यान्वयन के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है, जैसा कि उन्होंने कहा..." उनका मानना है कि सशक्तिकरण का लक्ष्य तीन गुना पुनर्मूल्यांकन पर निर्भर करता है: पहला, उनके जीवन में बदलाव के लिए; दूसरा उनके जीवन में बदलाव लाने की प्रक्रिया को सक्रिय करने के लिए; और तीसरा, सामाजिक संरचना को बदलने के लिए.

\*\*\*\*\*



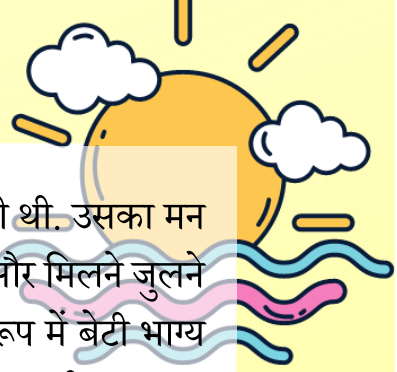
## दिखावे का नक्राब

रचनाकार- पिकी सिंघल, दिल्ली



पोती का पहला जन्मदिन बहुत बहुत मुबारक हो सुलभा बहन जी.

बर्थडे पार्टी में तो आपने जी भर कर पैसा खर्च किया है. कितना सुंदर आयोजन, वाह!! सचमुच रौनक लगा दी आज तो आपने! बहुत किस्मत वाली है आपकी बहू जिसे रंजीत जैसा सुंदर, समझदार, कामयाब पति और आप जैसे सास-ससुर मिले; जो लड़का लड़की में कोई अंतर नहीं करते और बहू को भी अपनी बेटी मानते हैं. आज के जमाने में आप जैसे अच्छे लोग होते ही कहाँ हैं? जो आजकल की मॉडर्न विचारों वाली नकचढ़ी बहुओं के सारे नाज़ नखरे उठाते हैं, उनकी हर छोटी बड़ी ख्वाहिश पूरा कर उनको हाथोंहाथ रखते हैं और उनके अनुसार ही खुद को ढाल लेते हैं. ज़रूर पिछले जन्म में आपकी बहू ने मोती दान किए होंगे जो इस जन्म में आप जैसे गुणी परिवार में बहू बनकर आने का सौभाग्य उसे प्राप्त हुआ. और फिर आप लोग अनोखी (पोती का नाम) को भी तो अपने जिगर का टुकड़ा समझ कितने नाज़ों से पालते हैं. आज के समय में इतना प्यार और लाड़ तो लोग लड़कों का भी नहीं करते जितना आप अपनी पोती का करते हैं. सच में धन्य हैं आप लोग!! काश कि, सभी लड़कियों को आप जैसा भरा-पूरा, सभ्य और संस्कारी परिवार मिले तो ये धरती स्वर्ग से कम नहीं रहेगी. परंतु आज की नई पीढ़ी की बहुओं को कहाँ ये संस्कार की बातें पल्ले पड़ती हैं, उनको तो हर बात में बहस कर सिर्फ़ खुद को सही साबित करना होता है. सास ससुर चाहे बहू के लिए कितना भी अच्छा सोच लें, कर लें, यहाँ तक कि उसके लिए अपना स्वाभिमान तक भूल जाएँ, परंतु फिर भी उनमें कमी ही नज़र आती है. उन्हें पति को काबू में रखने के अलावा किसी और चीज़ से कोई मतलब नहीं होता. सास ससुर तो आज की बहुओं को फूटी आँख नहीं भाते. हे ईश्वर ! आज की बहुओं को सद्बुद्धि दीजिए.



सुलभा तारीफों के समुद्र में लगातार गोते खा रही थी और खुद पर गुमान कर रही थी. उसका मन खुशी से फूला नहीं समा रहा था. फिर भी बनावटी लहजे में वह सभी रिश्तेदारों और मिलने जुलने वालों की वाह-वाही लूटने के उद्देश्य से बार बार यही कह रही थी कि, बहू के रूप में बेटी भाग्य वालों को ही मिलती हैं, परंतु बेटियाँ तो सौभाग्य वालों के घर जन्म लेती हैं. चाहे हमारी बहू काम करने में कम होशियार है, परंतु आखिर वह है तो हमारे परिवार की ही सदस्य. ईश्वर जानता है कि मैंने अपनी बेटियों और बहू शिविका में कभी कोई फ़र्क नहीं किया. बेटियाँ तो माँ-बाप के जिगर का टुकड़ा होती हैं.

सभी मेहमान सुलभा और उसके परिवार की तारीफ़ करते नहीं थक रहे थे और बर्थडे पार्टी क आनंद ले रहे थे सिवाय शिविका के, जिसका पार्टी में बिलकुल भी मन नहीं लग रहा था. वह मानो अंदर ही अंदर रो रही थी और लगातार भगवान से प्रार्थना कर रही थी कि आज की ये रात कभी खत्म ही न हो. वह 3 माह के गर्भ से थी और मन ही मन बहुत घबराई हुई थी क्योंकि अगली सुबह उसे स्त्रीरोग विशेषज्ञ के पास जाना था.

दुनिया के सामने अच्छा बनने का भरपूर दिखावा करने वाली, भलमनसाहत का नक्राब पहनने वाली उसकी सास सुलभा जी और दब्बू पति रंजीत उसको जबरन गर्भपात के लिए डॉक्टर के पास ले जाने वाले थे.

शिविका की कोख में फिर से एक कन्या जो पल रही थी.

\*\*\*\*\*



## खुशहाली और अखंड सुहाग का पर्व: 'गणगौर'

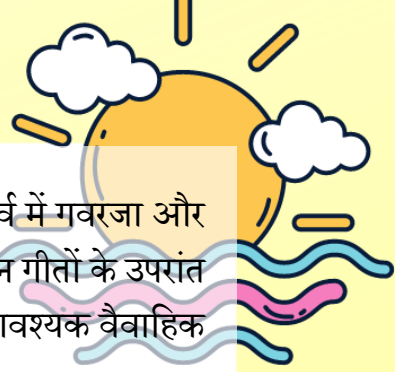
रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा



गणगौर राजस्थान का प्राचीन पर्व हैं। हर युग में कुँआरी कन्याओं एवं नवविवाहिताओं का अपितु संपूर्ण मानवीय संवेदनाओं का गहरा संबंध इस पर्व से जुड़ा रहा है। यद्यपि इसे साँस्कृतिक उत्सव के रूप में मान्यता प्राप्त है किन्तु जीवन मूल्यों की सुरक्षा एवं वैवाहिक जीवन की सुदृढ़ता में यह एक सार्थक प्रेरणा भी बना है। यह पर्व साँस्कृतिक, पारिवारिक एवं धार्मिक चेतना की ज्योति किरण है। इससे हमारी पारिवारिक चेतना जाग्रत होती है, जीवन एवं जगत में प्रसन्नता, गति, संगति, सौहार्द्र, ऊर्जा, आत्मशुद्धि एवं नवप्रेरणा का प्रकाश परिव्याप्त होता है। यह पर्व जीवन के श्रेष्ठ एवं मंगलकारी व्रतों, संकल्पों तथा विचारों को अपनाने की प्रेरणा देता है।

गणगौर राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के निमाड़, मालवा, बुंदेलखण्ड और ब्रज क्षेत्रों का एक त्यौहार है जो चैत्र महीने की शुक्ल पक्ष की तृतीया को आता है। इस दिन कुँवारी लड़कियाँ एवं विवाहित महिलाएँ शिवजी (इसर जी) और पार्वती जी (गौरी) की पूजा करती हैं। पूजा करते हुए दूब से पानी के छींटे देते हुए "गोर गोर गोमती" गीत गाती हैं। इस दिन पूजन के समय रेणुका की गौर बनाकर उस पर महावर, सिन्दूर और चूड़ी चढ़ाने का विशेष प्रावधान है। चन्दन, अक्षत, धूपबत्ती, दीप, नैवेद्य से पूजन करके भोग लगाया जाता है। गण (शिव) तथा गौर (पार्वती) के इस पर्व में कुँवारी लड़कियाँ मनपसन्द वर पाने की कामना करती हैं। विवाहित महिलाएँ चैत्र शुक्ल तृतीया को गणगौर पूजन तथा व्रत कर अपने पति की दीर्घायु की कामना करती हैं।

होलिका दहन के दूसरे दिन चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से चैत्र शुक्ल तृतीया तक, 18 दिनों तक चलने वाला त्यौहार है गणगौर। यह माना जाता है कि माता गवरजा होली के दूसरे दिन अपने पीहर आती हैं तथा अठारह दिनों के बाद ईसर (भगवान शिव) उन्हें लेने आते हैं, चैत्र शुक्ल तृतीया को उनकी विदाई होती



है. गणगौर की पूजा में गाये जाने वाले लोकगीत इस अनूठे पर्व की आत्मा हैं. इस पर्व में गवरजा और ईसर की, बड़ी बहन और जीजाजी के रूप में गीतों के माध्यम से पूजा होती है तथा उन गीतों के उपरांत अपने परिजनों के नाम लिए जाते हैं. राजस्थान के कई प्रदेशों में गणगौर पूजन एक आवश्यक वैवाहिक रीति के रूप में भी प्रचलित है.

गणगौर का पवित्र त्योहार बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है त्योहार के अंतिम दिन प्रत्येक गाँव में भंडारे का आयोजन होता है तथा माता की विदाई की जाती है गणगौर पूजन में कन्याएँ और महिलाएँ अपने लिए अखण्ड सौभाग्य, अपने पीहर और ससुराल की समृद्धि तथा गणगौर से प्रतिवर्ष फिर से आने का आग्रह करती हैं. अक्सर यह बात कही जाती है कि, चैत्र शुक्ला तृतीया को राजा हिमाचल की पुत्री गौरी का विवाह शंकर भगवान के साथ हुआ था. उसी की याद में यह त्योहार मनाया जाता है. कामदेव की पत्नी रति ने भगवान शंकर की तपस्या कर उन्हें प्रसन्न कर लिया तथा उन्हीं के तीसरे नेत्र से भष्म हुए अपने पति को पुनः जीवन देने की प्रार्थना की. रति की प्रार्थना से प्रसन्न हो भगवान शिव ने कामदेव को पुनः जीवित कर दिया तथा विष्णुलोक जाने का वरदान दिया. उसी की स्मृति में प्रतिवर्ष गणगौर का उत्सव मनाया जाता है.

गणगौर राजस्थान एवं मध्यप्रदेश का प्रसिद्ध लोक नृत्य है. इस नृत्य में कन्याएँ एक दूसरे का हाथ पकड़े वृत्ताकर घेरे में गौरी माँ से अपने पति की दीर्घायु की प्रार्थना करती हुई नृत्य करती हैं. इस नृत्य के गीतों का विषय शिव-पार्वती, ब्रह्मा-सावित्री तथा विष्णु-लक्ष्मी की प्रशंसा से भरा होता है. उदयपुर जोधपुर बीकानेर और जयपुर को छोड़कर राजस्थान के कई नगरों की प्राचीन परम्परा है. गणगौर नृत्य मध्य प्रदेश के निमाड़ अंचल का प्रमुख नृत्य है.

गणगौर एक ऐसा त्यौहार है, जो जन मानस की भावनाओं से जुड़ा है. ग्राम्य जीवन की वास्तविकताओं के दर्शन है इसमें. देवी देवताओं और धार्मिक आस्था से जुड़े ये त्यौहार जीवन की वास्तविकताओं से परिचित करवाते हैं. गणगौर का त्यौहार ऐसे समय में आता है जब फसल कटकर आ चुकी है. कृषक वर्ग फुरसत में है. आर्थिक रूप से भी हाथ मजबूत है. ऐसे में माहौल और खुशमिजाज हो जाता है.

लोगों की धार्मिक आस्था भी मजबूत हो जाती है. दुगुने जोश खरोश से जिंदगी चलने लगती है. एक नई ऊर्जा पैदा हो जाती है. एक और खास बात धर्म के माध्यम से, मीठे मीठे गीतों के जरिये बेटियों को जीवन जीने की उचित शिक्षा मिल जाती है. वो भी बिना कुछ कहे. क्योंकि बेटियाँ यह सब देख सुनकर अपने आप को उसी रंग में ढालने लग जाती हैं. हर माता पिता चाहते हैं कि बेटियों को अच्छा घर परिवार मिले और सुखी रहे.

नाचना और गाना तो इस त्यौहार का मुख्य अंग है ही. घरों के आंगन में, सालेड़ा आदि नाच की धूम मची रहती है. परदेश गए हुए इस त्यौहार पर घर लौट आते हैं. जो नहीं आते हैं उनकी बड़ी आतुरता से प्रतीक्षा की जाती है. आशा रहती है कि गणगौर की रात को जरूर आयेंगे. झुंझलाहट, आह्लाद और



आशा भरी प्रतीक्षा की मीठी पीड़ा को व्यक्त करने का साधन नारी के पास केवल उनके गीत हैं. ये गीत उनकी मानसिक दशा के बोलते चित्र हैं.



गौर गौर गोमती  
गौर गौर गोमती ईसर पूजे पार्वती  
पार्वती का आला-गीला, गौर का सोना का टीका  
टीका दे, टमका दे, बाला रानी बरत करयो  
करता करता आस आयो वास आयो  
खेरे खांडे लाडू आयो, लाडू ले बीरा ने दियो  
बीरो ले मने पाल दी, पाल को मै बरत करयो  
सन मन सोला, सात कचौला, ईशर गौरा दोन्यू जोड़ा  
जोड़ ज्वारा, गेंहू ग्यारा, राण्या पूजे राज ने, महे पूजा सुहाग ने  
राण्या को राज बढ़तो जाए, म्हाको सुहाग बढ़तो जाय,  
कीड़ी- कीड़ी, कीड़ी ले, कीड़ी थारी जात है, जात है गुजरात है,  
गुजरात्यां को पाणी, दे दे थाम्बा ताणी  
ताणी में सिंघोड़ा, बाड़ी में भिजोड़ा  
म्हारो भाई एम्ल्यो खेमल्यो, सेमल्यो सिंघाड़ा ल्यो  
लाडू ल्यो, पेड़ा ल्यो सेव ल्यो सिंघाड़ा ल्यो  
झर झरती जलेबी ल्यो, हर-हरी दूब ल्यो गणगौर पूज ल्यो  
इस तरह सोलह बार बोल कर आखिरी में बोलें : एक-लो, दो-लो .....सोलह-लो.

भोगवादी भागदौड़ की दुनिया में गणगौर का पर्व दुःखों को दूर करने एवं सुखों का सृजन करने का प्रेरक है. यह पर्व दाम्पत्य जीवन के दायित्वबोध की चेतना का संदेश हैं. इसमें नारी की अनगिनत जिम्मेदारियों के सूत्र गुम्फित होते हैं. यह पर्व उन चैराहों पर पहरा देता है जहां से जीवन आदर्शों के भटकाव की संभावनाएं हैं, यह उन आकांक्षाओं को थामता है जिनकी गति तो बहुत तेज होती है पर जो बिना उद्देश्य बेतहाशा दौड़ती है. यह पर्व नारी को शक्तिशाली और संस्कारी बनाने का अनूठा माध्यम है. वैयक्तिक स्वार्थों को एक ओर रखकर औरों को सुख बाँटने और दुःख बटोरने की मनोवृत्ति का संदेश है. गणगौर संपूर्ण मानवीय संवेदनाओं को प्रेम और एकता में बाँधने का निष्ठासूत्र है. इसलिए गणगौर का मूल्य केवल नारी तक सीमित न होकर सम्पूर्ण मानव के मनों तक पहुँचे, तभी इस पर्व को मनाने की सार्थकता है.

\*\*\*\*\*





## वृक्ष

रचनाकार- नंदिनी राजपूत, कोरबा



वृक्ष हमें देते प्राणवायु, जिससे बढ़ती जीवन आयु,  
पथिको को आराम दिलाती, छाया इसकी खूब लुभाती.  
शीतल हवा जब मंद- मंद चलती, मतवाला मन खुशी से है उमड़ती.

रंग बिरंगी फूल जब खिलती, लोगों को आकर्षित करती,  
रस इसका चूसने को, मन भौंरा खुशी से झूमती.

मीठे फल जब मुँह में घुलती, बुद्धि, बल तन को मिलती.  
वनौषधि ने ऐसी जादू चलाई, त्रेता युग में लक्ष्मण की जान बचाई.

प्रदूषण जिससे हारी है, शुद्ध वायु लाभकारी है.  
इसे ना काटो तुम, ये बहुत परोपकारी है.

\*\*\*\*\*



## भारत अब फिर बनेगा, सोने की खान

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



भारत देश है बुद्धिजीवीयों प्रबुद्ध नागरिकों की खान  
कोरोना वैक्सीन बना कर, दी नई पहचान  
कोरोनावारियर्स बनकर उभरे भारत की शान  
अब फिर बनेगा, भारत सोने की खान

भारत देश महान, मेरी आन बान शान  
धर्मनिरपेक्षता हैं, भारत की पहचान  
हर धर्म त्यौहार संस्कृति का, भारत में सम्मान  
अनेकता में एकता, हैं भारत विश्व में बलवान

आत्मनिर्भर भारत, बनेगा हर क्षेत्र की जान  
हर नागरिक को डालना होगा, इस सोच में जान  
सोच में ही छुपा है, कुछ कर गुजरने का ज्ञान  
भारत देश महान, मेरी आन बान शान-3

\*\*\*\*\*



## अच्छे और बुरे वक्त

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



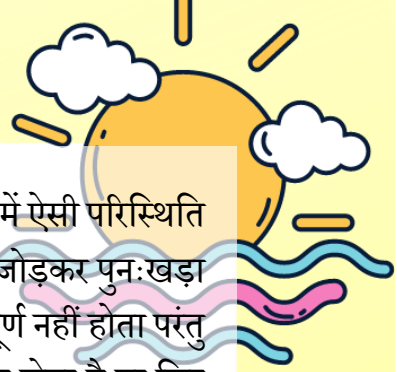
खुशियों या सकारात्मक परिस्थितियों में तो हर व्यक्ति जीवन जीने को आतुर रहता है, परंतु सृष्टि का नियम है कि समय का चक्र घूमता रहता है. यदि आज सकारात्मक परिस्थितियाँ हैं तो कल नकारात्मक परिस्थितियाँ भी आ सकती हैं. जिनसे हमें मुकाबला कर आगे बढ़ना है और विपरीत परिस्थितियों से निपट कर सफलता प्राप्त करनी है. जो खुद में स्थिर होते हैं, वे हर परिस्थितियों से लड़ते हैं, वही अपने जीवन में इतिहास रचते हैं. क्योंकि ज्यों ही हम निर्भीकता से विपत्तियों का मुकाबला करने के लिए कटिबद्ध होंगे त्यों ही विपत्तियाँ दम दबाकर भाग खड़ी होंगी.



अनुकूल परिस्थितियों में तो सभी अपने आप को सुदृढ़ और सुलझा हुआ कहने लगते हैं परंतु असली व्यक्तित्व का पता तब चलता है जब विपरीत परिस्थितियों में भी स्थिरता से मुकाबला कर उन्हें अनुकूल बनाते हैं. असल में हमें विपरीत परिस्थितियों में हिम्मत रखना और जिंदगी में जो भी परिस्थितियाँ हों उनका डटकर सामना करना, हमारी जिंदगी में आने वाली समस्याओं का हल निकालना बेहतर है. किसी भी समस्या से भागना नहीं चाहिए विकट परिस्थितियों में जूझते रहेंगे तो हमारी समस्याओं का हल निकलता रहेगा और आने वाली पीढ़ी के लिए समस्याओं का निराकरण भी लाएँगे और आने वाली पीढ़ी के लिए आदर्श भी बनेंगे. जो लोग समस्याओं से लड़ते हैं और उसका हल निकालते हैं और डरते नहीं हैं, वही लोग महान हैं.

मुश्किल परिस्थितियों से बाहर निकलने के लिए हमें सर्वप्रथम उन वजहों को समझने का प्रयास करना चाहिए जिनके चलते ये परिस्थितियाँ पैदा हुई हैं. सब्र के साथ परिस्थितियों का सामना करने का प्रयास करना चाहिए, जो परिस्थितियाँ हमारे वश में न हों उनके लिए अधिक चिंतित न हों. वे समय के साथ सामान्य हो जाएँगी. हर हालत में धैर्यवान बने रहकर समय पर भरोसा करना चाहिए. समय से बलवान कोई नहीं. चाहे कितनी भी मुश्किल परिस्थिति हो समय बीतने के साथ-साथ मुश्किल से मुश्किल परिस्थितियों को बदलकर सामान्य होते देर नहीं लगती. कितनी भी गहन अंधकार वाली रात्रि हो कुछ पलों में सूर्योदय अवश्यभावी है.

वह नियति हो या फिर परिस्थिति कोई फर्क नहीं पड़ता और जीवन में अच्छे और बुरे दोनों वक्त आते हैं. जिस तरह से हम अच्छे वक्त को सँभालना बचपन से जानते हैं, उसी तरीके से हमें बुरे वक्त को भी



सँभालना सीखना चाहिए किस तरीके से हम इनको सँभाले कि यह कभी हमारे जीवन में ऐसी परिस्थिति ना क्रिएट करें की हम टूट कर बिखर जाएँ. यदि टूट कर बिखर भी जाएँ तो स्वयं को जोड़कर पुनः खड़ा होने की हिम्मत अपने अंदर रखनी चाहिए. जीवन में जीवन से ज्यादा कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं होता परंतु अक्सर देखा जाता है कि इंसान छोटी-छोटी बातों को लेकर भी आत्महत्या तक कर लेता है या फिर कोई ऐसा कदम उठा लेता है जिसकी हम कल्पना भी नहीं करते इन्हीं सब से निपटने के लिए हमें स्वयं को मानसिक रूप से सबल बनाना होता है.

जब भी हम जीवन में कमजोर होते हैं, चाहे वह कमजोरी शारीरिक हो, आर्थिक हो या मानसिक, उस वक्त हमारा मन दुर्बल होता है तथा हम परिस्थितियों से संघर्ष करने में कमजोर होते हैं. अतः ऐसी स्थिति में अपने ऊपर परिस्थितियों को हम हावी होने देते हैं यदि हम चाहते हैं कि हमारे ऊपर परिस्थितियाँ हावी न हों तो हमको अपने आप को मानसिक रूप से सबल बनाए रखना होगा. जिंदगी में कई बार ऐसे पड़ाव आते हैं कि हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं समझ में ही नहीं आता, उन परिस्थितियों में हमको सब्र रखना है, खुद से बात करना है, खुद को एकांत में लाने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि यहीं वह समय है जब हम खुद को समझ सकते हैं, हमारे अंदर के सामर्थ्य को पहचान सकते हैं, हमारी क्षमता को समझ सकते हैं, और जरूरी है सकारात्मक बने रहना. प्रतिकूल परिस्थितियों में अगर हमारा अपने दिल और दिमाग पर काबू है तो हमको किसी की भी आवश्यकता नहीं पड़ेगी तो सबसे पहले हमको अपने दिल और दिमाग को अपने काबू में रखना पड़ेगा अगर वह काबू में आ गए तो हम किसी भी परिस्थिति का सामना कर पाएँगे.

हमें ऐसे व्यक्ति बनना है जो परिस्थितियों के अनुसार खुद नहीं बल्कि खुद के अनुसार परिस्थितियों को बदल डाले इसलिए पुनः प्रयास करें और तब तक करते रहें जब तक हम उस परिस्थिति को बदल न दें. हमें अपनी परिस्थिति को सुधारने का भरसक प्रयत्न करना और उसके मार्ग में आने वाले संकटों का धैर्यपूर्वक मुकाबला करना चाहिए, पर यदि प्रयत्नों के बावजूद हमारी आकाँक्षा और इच्छाओं के अनुसार हमारी परिस्थिति में किसी अज्ञात कारणवश शीघ्र वाँछित परिवर्तन या सुधार नहीं होता है, तो हमें घबराकर प्रयत्नों को नहीं छोड़ देना चाहिए बल्कि उत्साह के साथ अपने उद्देश्य-प्राप्ति में जुटे रहना चाहिए. ऐसे समय में हमें अपने आत्म मित्र एवं हितचिंतकों से इस विषय में परामर्श और मार्गदर्शन प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए संभव है उनकी सूझबूझ और सहायता से हमारे संकट का निवारण हो जाए. समस्या को हम अपने परिवार के सदस्यों के सन्मुख उपस्थित कर उनकी सलाह भी ले सकते हैं. इस प्रकार हमें कहीं न कहीं से ऐसे प्रेरक विचार मिल जायेंगे, जिनके द्वारा हम अपनी परिस्थितियों को बदल सकेंगे.

\*\*\*\*\*



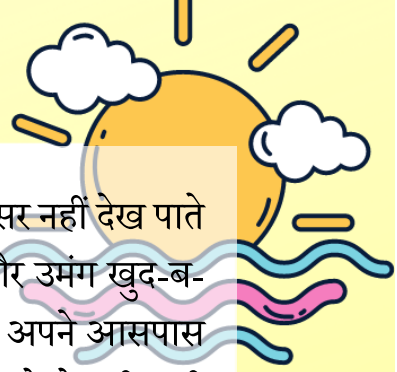
## 20 मार्च: विश्व गौरैया दिवस

रचनाकार- पिकी सिंघल, दिल्ली



जनता में जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से लगभग प्रतिदिन कोई न कोई दिवस मनाया जाता है. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तर पर ही विभिन्न प्रकार के विशेष दिवस मनाए जाते हैं जिनका कोई न कोई मुख्य उद्देश्य होता है. 20 मार्च 2023 विश्व गौरैया दिवस के नाम से प्रतिवर्ष मनाया जाता है. इसका मुख्य उद्देश्य देश विदेश में गौरैया पक्षी के प्रति लोगों में जागरूकता उत्पन्न करना है. विश्व गौरैया दिवस जैसी सुखद पहल की शुरुआत नेचर फॉरएवर सोसायटी ऑफ इंडिया ने की थी जिसकी स्थापना भारतीय संरक्षणवादी मोहम्मद दिलावर जी द्वारा की गई थी.

इस विशेष दिवस का नाम गौरैया दिवस बेशक है, किंतु इस दिवस को मनाए जाने के पीछे केवल गौरैया के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना नहीं है, अपितु हमारे वातावरण में रहने वाले अन्य पक्षियों के प्रति भी जागरूकता लाना इस दिवस का विशेष उद्देश्य समझा जाता है. वैसे तो प्रत्येक दिवस विशेष ही होता है क्योंकि हर दिवस में अपनी कुछ विशेषता अवश्य होती है, परंतु औपचारिक रूप से मनाए जाने के उद्देश्य से दिवसों के नाम भी रख दिए गए हैं और तिथियाँ भी निर्धारित कर दी गई हैं ताकि बाकी दिनों के साथ-साथ उस विशेष दिवस पर उस विशेष दिवस को क्यों मनाया जाता है, के बारे में लोग सोचे समझें, जानकारीयाँ एकत्र करें और अपने जीवन में उस दिवस की महत्ता को उतारे, उसके अनुसार व्यवहार भी करें और अपने आसपास के लोगों को भी उस दिवस विशेष के बारे में बताएँ, उनका ज्ञान बढ़ाएँ और इस प्रकार के विशेष दिवसों के मनाए जाने के उद्देश्यों को सार्थक बनाने में अपना योगदान दें तभी इस प्रकार के दिवसों को मनाए जाने का औचित्य सार्थक सिद्ध होता है.



जैसा कि हम सभी अपने आसपास आजकल गौरैया जैसे अनेक पक्षियों को अक्सर नहीं देख पाते हैं और यदि कभी हम उन्हें देखते भी हैं तो हमारे भीतर एक सुखद उत्सुकता और उमंग खुद-ब-खुद पैदा हो जाती है. इसका कारण यही है कि जिन पक्षियों को हम सालों पहले अपने आसपास चहचहाते हुए, उड़ते हुए और स्वतंत्रता पूर्वक पेड़ों पर घोंसले बनाते हुए देख सकते थे, वही पक्षी हमें आजकल ढूँढ़ने पड़ते हैं और गनीमत तब है जब ढूँढ़ने के बाद भी हमें इक्का-दुक्का कोई पक्षी नज़र आ जाए, अन्यथा पक्षियों की तादाद दिन-ब-दिन कम ही होती जा रही है .

गौरैया की दुर्दशा के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए विश्व गौरैया दिवस मनाया जाता है क्योंकि गौरैया विलुप्त होने के कगार पर है. इस दिवस का उद्देश्य पक्षियों के प्रति लोगों की सहानुभूति में वृद्धि करना भी है ताकि लोगों के दिलों में पक्षियों के प्रति प्रेम भाव उमड़े और वे उनकी देखभाल और रक्षा करें और उनकी देखभाल के लिए जो बन पड़े वह सब करें. यह पक्षी हमसे ज्यादा कुछ नहीं चाहते. वे केवल दिन भर में थोड़ा बहुत खाने के लिए गेहूँ के दाने, थोड़ा सा पीने का पानी, हमारा स्नेह और बस फिर वे आराम से खुले आकाश में उड़ते फिरते हैं. उनकी न किसी से दुश्मनी होती है और न ही वे किसी के बारे में कुछ खराब सोचते हैं क्योंकि वे हम मनुष्यों की भाँति मन में शत्रुता का भाव नहीं रखते हैं.

पहली बार वर्ष 2010 में मनाए गए इस विश्व गौरैया दिवस पर हम सभी को प्रण लेना चाहिए कि हम विलुप्त होने से पहले इनका संरक्षण करेंगे और जिस प्रकार बचपन में हम इनकी चहचहाहट सुनकर आनंदित होते थे वही आनंद हम अपने आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए भी संरक्षित करेंगे. पक्षियों के प्रति खुद के साथ-साथ अपने बच्चों में भी संवेदनशीलता उत्पन्न करना हमारा मानवीय कर्तव्य है. प्रकृति के प्रति प्रेम उत्पन्न करने के लिए हमें अपने बच्चों के भीतर जीव जंतुओं के प्रति प्रेम उत्पन्न करना ही होगा उन्हें समझाना होगा कि प्रकृति है तो हम हैं और इन जीव-जंतुओं का जीवन भी उतना ही कीमती एवं महत्वपूर्ण है जितना कि मनुष्यों का.

अगर पशु पक्षियों, जीव जंतुओं का हमारे जीवन में कोई महत्व ही नहीं होता तो ईश्वर ने मनुष्यों के अलावा किसी और जीव को सृष्टि में उत्पन्न ही न किया होता .परंतु दुखद यह है कि विश्व भर में आज गौरैया ढूँढ़ने से भी नहीं नज़र आती. दिल्ली सरकार ने तो इनकी दुर्लभता को देखते हुए वर्ष 2012 में ही इसे राज्य पक्षी घोषित कर दिया था. यह सोचकर बहुत दुख होता है कि जिन पक्षियों को अपने आसपास देखकर हम बड़े हुए हैं उन्हीं पक्षियों को देखने दिखाने के लिए हमें अपने बच्चों को चिड़ियाघर ले जाना पड़ता है. चिड़ियाघर में भी तो अब ये गिनती में ही पाई जाती है.

गौरैया के इस प्रकार लगभग विलुप्त हो जाने के पीछे अनेक कारण हैं. इस प्रकार दिनोंदिन जंगल कटते जा रहे हैं, पेड़ पौधों में रासायनिक पदार्थों का उपयोग भी बढ़ता जा रहा है और जल का स्तर



गिरता जा रहा है .इन सब का दुष्प्रभाव हमारे पशु पक्षियों पर भी तो पड़ता है, क्योंकि ऐसा होने से पक्षियों की रहने और खाने की समस्याएं बढ़ने लगती हैं.

परंतु कहा जाता है न कि जब जागो तभी सवेरा अर्थात यदि अभी भी हम मनुष्य इस प्रकार की समस्याओं को लेकर संवेदनशील और जागरूक नहीं हुए तो वह दिन दूर नहीं जब गौरैया और इस प्रकार के अन्य पक्षी इतिहास के प्राणी मात्र बनकर रह जाएंगे और हम हाथ मलते रह जाएंगे. प्रकृति के संतुलन के लिए अत्यंत जरूरी है कि मनुष्य के साथ-साथ पशु पक्षी और जीव जंतु भी जीवित रहें.

तो आइए, आज विश्व गौरैया दिवस के इस अवसर पर हम सभी मिलकर प्रण लें कि हम अपने आसपास के जीव जंतु, पशु पक्षियों और प्राकृतिक संपदा का पूरा ध्यान रखेंगे, देखभाल करेंगे और इसके संरक्षण में भी अपना हर संभव योगदान करेंगे.

\*\*\*\*\*



## पेड़

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ



मानव से भी है बड़ा पेड़.  
कबसे धरती पर खड़ा पेड़.

अपना अस्तित्व बचाने को  
तूफानों से भी लड़ा पेड़.

मोहिनी प्रकृति के अंचल पर  
चित्र के सदृश है जड़ा पेड़.

मुल्ला - पंडित सब भूल गए  
पर आदिधर्म पर अड़ा पेड़.

सह कड़ी धूप, दी सुख - छाया  
आई पतझड़ ऋतु, झड़ा पेड़.

देने को प्राणवायु निर्मल  
पी रहा प्रदूषण, सड़ा पेड़.



मेघों से जल बरसाने को  
बन गया प्रेम का धड़ा पेड़.

चिड़ियाँ, गिलहरियाँ शंकित थीं  
जब लकड़हारे ने तड़ा पेड़.

\*\*\*\*\*




## लड़किया लीडर बनेगी तभी उनकी दुनिया बदलेगी

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा



आज दुनिया 900 मिलियन किशोर लड़कियों और युवा महिलाओं की परिवर्तनकारी पीढ़ी का घर है जो काम और विकास के भविष्य को आकार देने के लिए तैयार है। यदि युवा महिलाओं के इस समूह को 21वीं सदी के कौशलों को पोषित करने के लिए सही संसाधनों और अवसरों से सुसज्जित किया जा सका, तो वे इतिहास में महिला नेताओं, बदलाव लाने वालों, उद्यमियों और नवप्रवर्तकों का सबसे बड़ा हिस्सा बन जाएंगी। लड़कियों और युवा महिलाओं की सबसे बड़ी पीढ़ियों में से एक भारत ने महत्वपूर्ण क्षेत्रों में व्यापक पहल की है। भारत शिक्षा, स्वास्थ्य, डिजिटल और वित्तीय समावेशन, नेतृत्व निर्माण प्रदान करता है, और सतत विकास लक्ष्य 5 की उपलब्धि में मदद करने के लिए व्यवहार्य ढाँचे की स्थापना की है, जो 2030 तक दुनिया को और अधिक लिंग समान स्थान बनाने की कल्पना करता है। आज देश में लैंगिक अंतर बढ़ गया है और विशेष रूप से राजनीतिक सशक्तिकरण और आर्थिक भागीदारी और अवसर में लैंगिक समानता कम है।

महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम भुगतान किया जाता है, कुछ शोधों से पता चला है कि समान योग्यता वाली, समान नौकरियों में महिलाओं और पुरुषों के बीच लिंग वेतन अंतर 34% तक है। श्रम बल की भागीदारी देखे तो 2020 तक, भारत में दक्षिण एशियाई देशों में महिला श्रम बल की भागीदारी दर सबसे कम है, पाँच में से चार महिलाएँ न तो काम कर रही हैं और न ही नौकरी की तलाश में हैं। ऑक्सफैम के अनुसार, अप्रैल 2020 में भारत में 17 मिलियन महिलाओं ने अपनी नौकरी खो दी, उनकी बेरोजगारी दर पुरुषों की तुलना में कहीं अधिक बढ़ गई। महिलाओं के लिए आज भी काम के कम अवसर हैं, लॉकडाउन चरणों के दौरान महिलाओं को अपनी नौकरी खोने की संभावना सात गुना अधिक पाई गई। असमान घरेलू जिम्मेदारी, इसके संभावित कारणों में घरेलू जिम्मेदारियों का बढ़ा हुआ बोझ शामिल है, जिसे आमतौर पर भारतीय महिलाओं को उठाना पड़ता है, न केवल घर के काम बल्कि



बुजुर्गों की देखभाल और बच्चों की पढ़ाई के लिए अतिरिक्त समय की जरूरत होती है, जिसके लिए उनके स्कूल बंद होते हैं।

अवैतनिक कार्य को कम करने के लिए अब हमारे लिए अवैतनिक देखभाल और घरेलू कार्य को पहचानना, कम करना और पुनर्वितरित करना महत्वपूर्ण है, ताकि महिलाएँ पुरुषों के समान आर्थिक अवसरों और परिणामों का आनंद उठा सकें। ऐसी नीतियाँ जो सेवाएँ प्रदान करती हैं, सामाजिक सुरक्षा और बुनियादी ढाँचा, पुरुषों और महिलाओं के बीच घरेलू और देखभाल के काम को साझा करने को बढ़ावा देती हैं, और देखभाल अर्थव्यवस्था में अधिक भुगतान वाली नौकरियाँ पैदा करती हैं, महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण पर प्रगति में तेजी लाने की तत्काल आवश्यकता है। निर्णय लेने और शारीरिक स्वायत्तता हेतु महिलाओं को अपने शरीर के बारे में निर्णय लेने के लिए सशक्त होने की आवश्यकता है, जैसे कि यौन संबंध बनाना है या नहीं, यौन संबंध कब शुरू करना है, गर्भ निरोधकों का उपयोग करना है या नहीं, और जरूरत पड़ने पर स्वास्थ्य देखभाल प्राप्त करना है। उन्हें सभी प्रकार की हिंसा और उत्पीड़न से भी मुक्त होने की आवश्यकता है। महिलाओं और युवा लड़कियों को अपने व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन की दिशा तय करने में सक्षम बनाने के लिए ये बुनियादी शर्तें महत्वपूर्ण हैं।

रूढ़िवादि लैंगिक मानदंड जो महिलाओं को असमान रूप से घरेलू और देखभाल की जिम्मेदारियों को बढ़ाते हैं, वित्त और उद्यमशीलता के क्षेत्रों में पुरुषों का प्रतिनिधित्व, और अपर्याप्त मातृत्व अवकाश, कुछ लचीली कार्य व्यवस्था, चाइल्डकैअर सुविधाओं की कमी कार्यस्थल में कुछ ऐसी बाधाएँ हैं जो बताती हैं कि महिलाओं का बढ़ा हुआ प्रतिनिधित्व कार्य भागीदारी में तब्दील क्यों नहीं होता है। सक्रिय रूप से इन रूढ़ियों का मुकाबला करने के लिए लड़कियों के लिए शैक्षिक पाठ्यक्रम में महिला वित्तीय शिक्षा और उद्यमिता पाठ्यक्रम को शामिल करने की आवश्यकता है। ओलंपियाड, इनोवेशन लैब, बूटकैप और प्रतियोगिताओं जैसे तत्वों का परिचय लड़कियों को व्यावहारिक अनुप्रयोगों के लिए उजागर कर सकता है और उन्हें अपने पारिस्थितिकी तंत्र में चुनौतियों का समाधान बनाने के लिए प्रेरित कर सकता है। जैसे-जैसे डिजिटल तकनीक तक पहुँच बच्चों और युवाओं के लिए अवसर और बुनियादी सेवा का एक क्षेत्र बनता जा रहा है, भाषा, साँस्कृतिक बारीकियों, और अलग-अलग समुदायों की इंटरनेट पहुँच के लिए अनुकूलित समाधानों का निर्माण और विस्तार करना लड़कियों को डिजिटल समावेशन के माध्यम से ज्ञान तक समान पहुँच प्रदान कर सकता है।

महिला नेतृत्व के फलने-फूलने के लिए स्थितियाँ बनाने के लिए, समाज के सभी स्तरों पर महिलाओं को सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी), शारीरिक स्वायत्तता और सुरक्षा, घर के भीतर साझा जिम्मेदारी और निर्णय में समान भागीदारी का समावेश होना चाहिए। रोजगार क्षमता बढ़ाने, नेतृत्व के लिए खेल, डिजिटल नवाचार और सीखने के लिए एक बहु-आयामी दृष्टिकोण और शारीरिक स्वायत्तता किशोर लड़कियों और युवा महिलाओं के बीच नेतृत्व क्षमता को मजबूत करने की कुंजी है।

\*\*\*\*\*

## बाल पहेली

रचनाकार- श्रीमती पुष्पा साहू, महासमुंद



बात पते की मैं करती हूँ.  
वन उपवन में मैं रहती हूँ.  
बूँद - बूँद से प्यास बुझाती.  
तिनकों से मैं नीड़ बनाती.  
क्या है मेरा नाम बताओ.

लंबोदर सा मुह है मेरा.  
कंचे जैसा आँखी घेरा.  
टाँगे सुन्दर खंबे जैसा.  
कान हिलाऊँ पंखे जैसा.  
क्या है मेरा नाम बताओ.



जहाँ कहीं भी रह लेता हूँ.  
फल पत्ती ही खा लेता हूँ.  
उछल कूद करते रहता हूँ.  
गाली मार बहुत सहता हूँ.  
क्या है मेरा नाम बताओ.

\*\*\*\*\*



## जनऊला

रचनाकार- रुद्र प्रसाद शर्मा, रायगढ़



1. तात के अगास म उड़य.  
ठंडा होवत खालहे परय.
2. हरियर मैं, लईका मोर करिया आय.  
मोला छोड़के मोर लईका ल खाय.
3. अगास म उड़य, घारा नई बनाय.  
धुका गर्रा के डर म, भुंईया उतर जाय.





4. बिन बीजा, बिन गूदा के,  
बादर ले गिरिस फर.  
छुए म ठंडा - ठंडा बतर.  
एकर नाव ल तँय धर.

5. नाव देईस, गांधी जी के राष्ट्रपिता.  
लिखिस जेन ह राष्ट्रगान के गीता.  
गुरुदेव विश्वकवि जेकर उपाधि आय जी.  
राष्ट्रगान सम्मान म नाव ल जान पाय जी.

6. नोहय हाथी, घोड़ा नोहय, खाय न दुबी घास.  
पीठ बइठारय भुईया रेंगय, चक्का दु ठन खास.

7. लम्बा ढेंठू पेट मोटवार.  
सस्ता दाम म बिसो दार.  
घाम म नल ले भर ले.  
फेर जम्मो ल ठंडा कर ले.

8. बरसात म उड़य सांझ संझोर.  
पूछी म उखर टार्च के अंजोर.

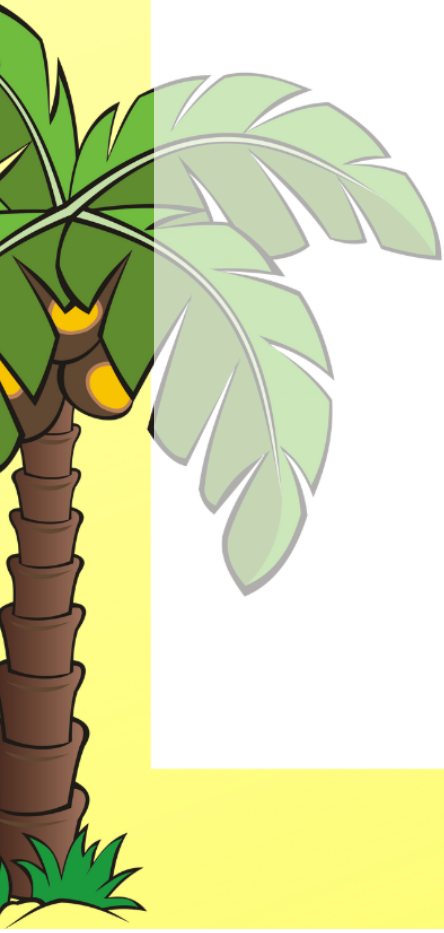


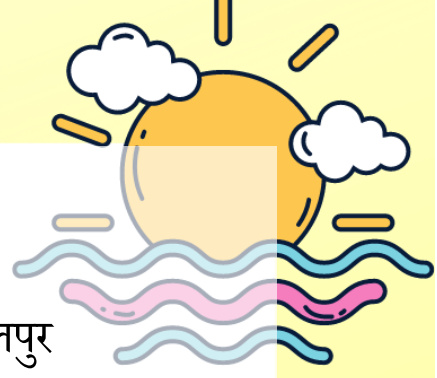


9. बाहिर हरियर भीतर लाल.  
करिया बीजा हेर निकाल.  
नार म फर ह ऐठिस.  
घाम म मोला भेटिस.

उत्तर:- 1. भाप, 2. इलायची, 3. हवाई जहाज, 4. बर्फ (ओला), 5. रविन्द्रनाथ  
टैगोर, 6. साईकिल, 7. सुराही, 8. जुगनू, 9. तरबूज

\*\*\*\*\*





## रंग

रचनाकार- श्रीमती सुचित्रा सामंत सिंह, सेजेस जगदलपुर



रंगों से खेलना बहुत हो सुहावना लगता है  
रंगों के मिश्रण से जीवन चमन सा लगता है,  
शायद विधाता ने यही सोच, धरा को रंगो से रंगा है.  
आसमानी रंगों से आसमान को रंगा.

ऊँचे पर्वतों को स्वेत हिम खण्डों से ढका.  
नीचे धरा हरे रंगो से रंगा  
चहुओर हरियाली है, जीवन में खुशहाली हम अपनी खुशहाली बनाए रखे  
इस हरे रंग को हृदय में बसाए रखे

चमचमाती चाँदी की परत से निर बह रही हैं.  
शांत सरल सादगी भरी, जीवन की राह दिखा रही है चलो शांत भाव से जीवन  
व्यतित करें.  
इस स्वेत रंग को हृदय में बसाए रखे.



नीले, पीले, हरे, गुलाबी रंगों से सजे वन उपवन.  
धरा के हर कोनों को विधाता ने निखारा, सजाया है.



रंगों में निहित हैं खुशियों का भण्डार,  
चलो समेटे सारे रंगों को, बिखेरे खुशियाँ अपार.

\*\*\*\*\*



## कभी न छोड़े काम अधूरे

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू, दुर्ग



उत्तम साँचे में ही ढलना  
सच्ची राह पकड़कर चलना.

आपस में हो नहीं लड़ाई  
परहित श्रेष्ठ धर्म है भाई.

मन लगाकर काम जो करता  
वही निरंतर आगे बढ़ता.

करना सबकी सदा भलाई  
लेकिन कभी न करें बुराई.

कभी न छोड़े काम अधूरे  
करना अपना सपने पूरे.

द्वेष न रखना मन में अपने  
वरना खंडित होंगे सपने.

लालच में जो फँस जाता है  
जीवन भर वह पछताता है.

\*\*\*\*\*



## घर

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू, दुर्ग



छोटा-सा प्यारा मेरा घर  
रोप रखें हैं पौधे छत पर.

जिस पर भौरें आते हैं  
गुनगुन-गुन गीत सुनाते हैं.

सुबह-सुबह तितली आती है  
फूलों के सँग बतियाती है.

है वहाँ एक छोटा आँगन  
प्यारा है लगता मनभावन.

दादा - दादी जहाँ बैठकर  
प्यार लुटाते हैं हम सब पर.



मम्मी-पापा भी आते है  
हँसते हैं, सब मुस्काते हैं.

\*\*\*\*\*



## विचार

रचनाकार- हिमकल्याणी सिन्हा, बेमेतरा



विचार मन का भोजन है, हमारा विचार ही हमारे अच्छा और बुरा होने का प्रमाण देता है, प्रतिदिन एक नया विचार ताजा भोजन के समान होता है,

वास्तव में विचार हमारे मन को स्वास्थ्य रखता है तथा जीवन को उत्साह पूर्ण बनाये रखने में हमारी मदद करता है, कुछ अच्छे विचार जो हमारी जिन्दगी की सोच को बदल देती है तय हमें करना होता है कि हम किस विचार को अपनाकर चले, हमारे विचार हमें सुखी और दुःखी दोनों कर देते हैं, इसलिए कहते हैं कि जैसा हम सोचते हैं वैसा बन जाते हैं, आज के समय जबकि विघटन व अव्यवस्था जोरो पर है अच्छे विचार की बहुत आवश्यकता है जो हमारे मस्तिष्क को पोषण और प्रेरणा प्रदान करें!

\*\*\*\*\*

## पानी का मूल्य और मानव को समझना है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



पानी बचाने की ज़वाबदेही निभाना है  
पानी का मूल्य हर मानव को समझाना है  
पानी को अहम दुर्लभ मानकर  
अपव्यय करने से बचाना है

पानी के स्रोतों की सुरक्षा स्वच्छता अपनाने  
के लिए जी जान से ध्यान लगाना है  
पानी बचाओ जीवन बचाओ  
यह फॉर्मूला मूल मंत्र के रूप में अपनाना है

पानी बचाने की ज़वाबदेही निभाना है  
हर मानव को जल संरक्षण संचयन अपनाकर  
पानी बचाकर जनजागृति लाना है  
अगली पीढ़ियों के प्रति ज़वाबदारी निभाना है



बिना पानी ज़िन्दगी का दर्द क्या होता है  
पानी अपव्यय वालों तक पहुंचाना है  
पानी का उपयोग अब हमें  
प्रसाद की तरह करना है.

\*\*\*\*\*



## भूकंप की तैयारी

रचनाकार- डॉ० सत्यवान 'सौरभ', हरियाणा



भारतीय भूभाग का लगभग 58% भूकंप की चपेट में है। भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा तैयार किए गए भारत के भूकंपीय मानचित्र के अनुसार, भारत को चार जोन - II, III, IV और V में विभाजित किया गया है। वैज्ञानिकों ने हिमालयी राज्य में संभावित बड़े भूकंप की चेतावनी दी है। भारत का भू-भाग बड़े भूकंपीय तथ्य/ प्रतिक्रिया व्यक्त करता है, विशेष रूप से हिमालयी प्लेट सीमा, जिसमें बड़ी भूकंपीय घटना (7 और अधिक परिमाण) की क्षमता है। भारत में भूकंप मुख्यतः इंडियन प्लेट के यूरेशियन प्लेट से टकराने के कारण होते हैं। इस अभिसरण के परिणामस्वरूप हिमालय पर्वत का निर्माण हुआ है, साथ ही इस क्षेत्र में लगातार भूकंप आ रहे हैं।

भूकंप की तैयारी पर भारत की नीति मुख्य रूप से संरचनात्मक विवरण के पैमाने पर संचालित होती है। यह नेशनल बिल्डिंग कोड द्वारा निर्देशित है। इसमें स्तंभों, बीमों के आयामों को निर्दिष्ट करना और इन तत्वों को एक साथ जोड़ने वाले सुदृढीकरण के विवरण शामिल हैं। यह उन भवनों की उपेक्षा करता है जिनका निर्माण 1962 में ऐसे कोड प्रकाशित होने से पहले किया गया था। ऐसी इमारतें हमारे शहरों का एक बड़ा हिस्सा हैं। यह प्रवर्तन की प्रक्रियाओं में अचूकता मानता है। यह केवल दंड और अवैधताओं पर निर्भर करता है। यह भूकंप को व्यक्तिगत इमारतों की समस्या के रूप में मानता है। यह मानता है कि इमारतें मौजूद हैं और उनके शहरी संदर्भ से पूर्ण अलगाव में व्यवहार करती हैं। मौजूदा ढाँचों की रेट्रोफिटिंग और अधिक दक्षता के साथ भूकंपीय कोड लागू



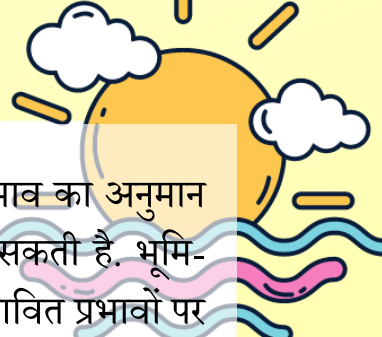
करने के लिए कर-आधारित प्रोत्साहनों की एक प्रणाली बनाने की आवश्यकता है. यह अच्छी तरह से प्रशिक्षित पेशेवरों और सक्षम संगठनों का एक निकाय तैयार करेगा.

सोशल मीडिया, टीवी चैनलों और अखबारों के जरिए आम लोगों के जान-माल को भूकंप से बचने के लिए सतर्क और सजग किया जा सकता है. भूकंप से जान-माल से बचाव न हो पाने की वजह यह भी है कि भूकंप आने का वक्त और अंतराल के बारे में वैज्ञानिक कुछ बता पाने की हालात में नहीं हैं. भूकंप आता है, तो लोग मनाते हैं कि वे बचे रहें, लेकिन कुछ साल गुजरता है और फिर भूल जाते हैं कि भूकंप फिर आ सकता है और उससे उनकी जान जा सकती है या गंभीर रूप से घायल हो सकते हैं. इसलिए मानसिक और आर्थिक दोनों तरह से भूकंप से बचने के लिए तैयार रहना जरूरी है. यह सोच कर हम नहीं बच सकते हैं कि जैसा होना होगा वैसा ही होगा. यह सोच बनाना ठीक नहीं है कि इंसान के हाथ में कुछ भी नहीं है. प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए सजगता और छद्म अभ्यास के जरिए बेहतर बचाव का उपाय हो सकता है.

जापान इस मामले में एक अच्छा उदाहरण है. इसने अक्सर होने वाले भूकंपों से होने वाले नुकसान को कम करने के लिए तकनीकी उपायों में भारी निवेश किया है. भूकंप के प्रभाव को कम करने के लिए गगनचुंबी इमारतों को काउंटरवेट और अन्य उच्च तकनीक प्रावधानों के साथ बनाया गया है. छोटे घर लचीली नींव पर बनाए जाते हैं, और सार्वजनिक बुनियादी ढाँचे को स्वचालित ट्रिगर के साथ एकीकृत किया जाता है जो भूकंप के दौरान बिजली, गैस और पानी की लाइनों को काट देते हैं. नीति को सर्वेक्षणों और लेखा चित्रकार से शुरू होना चाहिए जो भूकंप संवेदी मानचित्र तैयार कर सकते हैं. ऐसे नक्शे का उपयोग करके, प्रवर्तन, प्रोत्साहन और प्रतिक्रिया केंद्रों को शहरी इलाकों में आनुपातिक रूप से वितरित किया जा सकता है. भूकंप की तैयारी पर एक नीति के लिए दूरदर्शी, क्रांतिकारी और परिवर्तनकारी दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी. भूकंप के विभिन्न खतरों के प्रति भारत की भेद्यता के लिए स्मार्ट हैंडलिंग और दीर्घकालिक योजना की आवश्यकता है. भारत ने भूकंप प्रतिरोधी निर्माण के लिये बिल्डिंग कोड और मानक स्थापित किये हैं. यह सुनिश्चित करने के लिये इन कोड और मानकों को सख्ती से लागू करना महत्वपूर्ण है कि भूकंप का सामना करने हेतु नई इमारतों का निर्माण किया जाए. इसके लिये नियमित निरीक्षण एवं मौजूदा बिल्डिंग कोड के प्रवर्तन की भी आवश्यकता होगी.

पुरानी इमारतें वर्तमान भूकंप प्रतिरोधी मानकों को पूरा नहीं करती हैं और उनमें से कई को उनके भूकंपीय प्रदर्शन में सुधार के लिये पुनः संयोजन या सुदृढीकरण किया जा सकता है. भूकंप के प्रभाव को कम करने के लिये आपातकालीन प्रतिक्रिया योजना महत्वपूर्ण है. इसमें निकासी योजना विकसित करना, आपातकालीन आश्रयों की स्थापना और भूकंप का सामना करने के तरीके पर कर्मियों को प्रशिक्षित करना शामिल है. अनुसंधान एवं निगरानी में निवेश किये जाने से भूकंप तथा





उसके कारणों की हमारी समझ में सुधार करने में मदद मिल सकती है और प्रभाव का अनुमान लगाने एवं उसे कम करने हेतु बेहतर तरीके विकसित करने में भी मदद मिल सकती है. भूमि-उपयोग नीतियों की योजना बनाने और उन्हें विकसित करते समय भूकंप के संभावित प्रभावों पर विचार करना महत्वपूर्ण है. इसमें भूकंप की संभावना वाले क्षेत्रों में विकास को सीमित करना शामिल है तथा यह सुनिश्चित किया जाना चाहिये कि नए विकास को इस तरह से डिज़ाइन एवं निर्मित किया जाए जो क्षति के जोखिम को कम करता हो.

\*\*\*\*\*



## गौरैया

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर, दुर्ग



नन्ही गौरैया कहाँ चली.  
उड़ती फिरती हो गली गली.

मेरे आँगन में आओ ना.  
इधर उधर मत जाओ ना.

भूख लगी तो मुझे बताओ.  
पीयो पानी दाना खाओ.

चिड़िया रानी आओ ना.  
चीं चीं चीं चीं गाओ ना.

\*\*\*\*\*



## छत्तीसगढ़ी बाल कविता

रचनाकार- दीपक कंवर, कोरबा



बदख, कुकरी के चिंया,  
दुनो बदीन सँग म गिया.

घूमे ल जाय सँगै सँग,  
रेंगे - दउड़े चंग - चंग.

बदख तरिया म घुमाय,  
कुकरी बारी म खवाय.

एक इन बैरी कुकुर पिला,  
सोचे राँध के खाहूँ चीला.

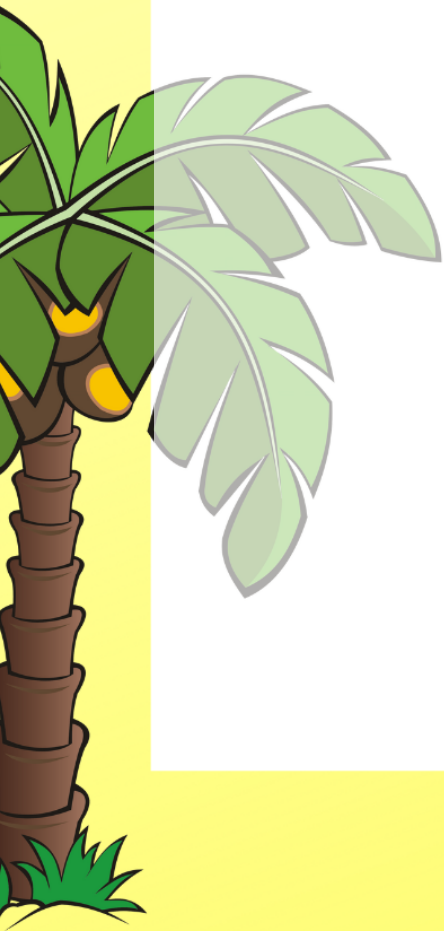
कुकुर ह मारे बर कुदाय,  
एक दूसर ल दुनो बचाय.



पानी कोती बदक भगाय,  
बारी म कुकरी लुकाय.

कुकुर कभु नइ पाइस पार  
मितानी के इही हे सार.

\*\*\*\*\*



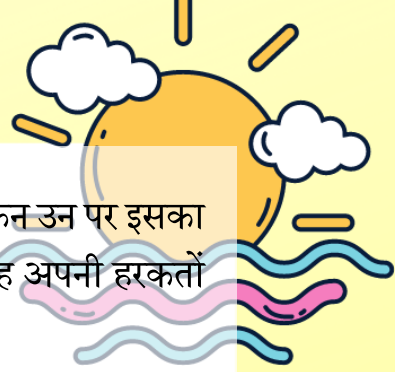


## सबक

रचनाकार- खेमराज साहू 'राजन', दुर्ग



वनांचल क्षेत्र के एक गाँव में कुमार और सूरज दो लड़के रहते थे. दोनो अच्छे मित्र थे. वह बहुत ही शरारती थे. शरारत के साथ ही साथ नशा पान करना शुरू कर दिया था.स्कूल में आ कर छुप कर बीड़ी,सिकरेट, गाँजा आदि का सेवन करते थे. पहले पहले बिगड़े हुए दोस्तों के द्वारा नशा के लिये सहयोग करते थे बाद में सहयोग देने से मना कर दिया. अब तक नशा की लत पड़ गयी थी. अब घर में माता पिता को स्कूल जाने के बहाने रुपये माँगना शुरू कर दिया.घर वाले भी स्कूल भेजने के लिए रुपये दे देता था. उसके माता पिता रोजी मजदूरी कर परिवार का भरण पोषण करते थे,रोज रोज पैसे की मांग करने पर परेशान हो गये और अन्त में रुपये पैसे देने से मना कर दिये. अब नशा करने के लिए अब पैसा घर से चोरी करना प्रारम्भ कर दिया. घर वालों को पता चल गया कि घर में राशन के लिये रखा रुपये गायब है. घर वालों को आखिर में पता चल गया कि कुमार ही चोरी किया है गाँव के बड़े बुजुर्ग को बुलाकर इन दोनो बच्चों को समझाने के लिए कहा. गाँव के मुख्या द्वारा खूब समझाया गया तब उन दोनो ने चोरी नहीं करने की वचन दिये. कुछ दिन लगातार स्कूल जाने लगा. एक दिन पता चला कि थाने से सिपाहियों ने कुमार और सूरज को खोजते खोजते घर तक पहुँच गये. गाँव के बड़े दुकान में पैसा चोरी करते देखा गया है दुकान मालिक लाला जी द्वारा पकड़ने की प्रयास करने पर पास रखे लाठी से हमलाकर लहू-लुहान कर दिया. पुलिस द्वारा स्कूल में पता करने पर जानकारी हुई कि कभी समय से स्कूल नहीं जाते थे. दोनों हमेशा खेलते और घूमते रहते थे. स्कूल में भी वे दोनों पूरे समय नहीं रहते थे. प्रायः वह स्कूल से किसी न किसी बहाने निकल जाया करते थे और दिनभर इधर-उधर घूमते रहते. उनसे स्कूल के



बड़े गुरुजी भी परेशान रहते थे. उन्होंने कई बार उन्हें समझाने की कोशिश की लेकिन उन पर इसका कोई असर नहीं हुआ. स्कूल में शिक्षकों ने भी उन्हें कई बार समझाया लेकिन वह अपनी हरकतों से बाज नहीं आये.

वह दोनों पुलिस से बचने जंगल की ओर भाग गये. वहाँ वह जंगली जानवरों के बच्चों के साथ छेड़छाड़ करने लगे. उसी समय अचानक उन बच्चों के माता-पिता आ पहुँचे. उन्हें आया देखकर नशा में मस्त होने के कारण उन दोनों पर कोई असर नहीं हुआ. तभी वे जानवर उन दोनों पर झपटे. उन्हें अपनी ओर झपटता देखकर दोनों डरकर भागे. जानवरों ने उन दोनों का पीछा किया. भालुओं के हमला करने से कुमार के पैर को फाड़ दिये एवं सूरज के आँख को गंभीर चोटें आयी जिससे दोनों बेहोश हो कर गिर गये. भालुओं के द्वारा मरा समझ कर छोड़ दिये. बाद में वन विभाग के कर्मचारियों के द्वारा अस्पताल में भर्ती कराया गया.

उन लोगो की हालत देखकर एवं बचपन की गलती समझ कर दुकान मलिक लाला जी द्वारा पुलिस रिपोर्ट वापस ले लिया.

इस घटना का उन दोनों पर ऐसा असर हुआ और समय पर स्कूल जाकर पढ़ाई करने लगे. तथा नशा को पूर्ण रूप से छोड़ चुके थे सभी को उन दोनों में हुए अनायास परिवर्तन पर बहुत ही आश्चर्य हुआ.

कहानी से सीख- बच्चों! कभी भी अपने कर्तव्य के प्रति लापरवाह नहीं होना चाहिए अन्यथा परिणाम बुरा होता है.

\*\*\*\*\*





## पतंग

रचनाकार- धारणी, पहंडोर



भर दे जो मन में खुशियां  
करे बच्चो से प्यार  
प्यारी सी चीज है वो  
गगन में पतंगों की बहार

जिन्हे देख के मन में  
उठ जाए ये विचार  
काश उनके जैसे  
लेले रंगो का आकार

कितने प्यारे लगते  
जब उड़ते ये आकाश में  
तरह तरह के मुंह ये बनाते  
कितने रंगो के साथ में





न जाने क्यों बच्चो के ये  
मन को है भा जाते  
रंग बिरंगे रंगो से  
बच्चो संग उड़ जाते

सारे गलियों में जा करके  
खुब उधम है मचाते हम  
सब संग हम तो पेंच लड़कर  
दिखा देते न किसी से कम

\*\*\*\*\*



## गुमशुदा रोहित और उसकी टोपी

रचनाकार- उपासना बेहार, भोपाल



रोहित के घर के ठीक पीछे घने जंगल की तरफ जाने का रास्ता था, पहले पास के गाँव के लोग उस रास्ते से जंगल जाकर लकड़ियाँ लाते थे. लेकिन जंगल में बाघ, भालू, जंगली सूअर जैसे खतरनाक जानवर भी थे. कई बार लोगों का सामना इन जानवरों से हुआ. कुछ लोग जानवरों के आक्रमण से घायल भी हुये. इस कारण वनविभाग ने वहाँ गेट लगवा कर ताला लगा दिया. कभी जरूरत पड़ने पर वन के कर्मचारियों द्वारा इस रास्ते का उपयोग किया जाता था.

रोहित का परिवार इस मकान में कुछ महीने पहले ही रहने आये थे. रोहित का मन हमेशा हरे भरे जंगल में जाने का करता रहता था. कई बार उसने माँ से वहाँ जाने की इच्छा जताई, पर माँ ने कहा -“जंगल में खतरनाक जंगली जानवर रहते हैं और वो लोगों को मार कर खा जाते हैं. तुम कभी भी उधर जाने की मत सोचना.” रोहित सोचता कि इतने महीनों से वो यहाँ रह रहा है परन्तु इतने दिनों में उसने कभी भी किसी भी जानवर की आवाज नहीं सुनी. उसके मन में जंगल को देखने की बड़ी ललक थी पर गेट पर ताला होने के कारण जा नहीं पाता था.

एक दिन रोहित पास के पार्क में खेलने के लिए घर से निकला तभी उसने जंगल का गेट खुला हुआ देखा, उसने सोचा-“यही मौका है चलो आज जंगल चलते हैं, ज्यादा दूर नहीं जाऊँगा और बस कुछ ही मिनिट में वापस आ जाऊँगा, किसी को पता भी नहीं चलेगा.” यह सोचते हुये वो गेट के अंदर घुस गया. जंगल में चारों तरफ हरियाली ही हरियाली थी. बड़े-बड़े पेड़ थे. उसने इतने बड़े और मोटे तने वाले पेड़ कभी नहीं देखे थे. तरह-तरह के पक्षियों की आवाजें आ रही थी. एक पतली सी पगडंडी बनी हुयी थी. रोहित उसी के सहारे आगे बढ़ने लगा. थोड़ी दूर में जा कर पगडंडी खत्म



हो गयी.आगे जमीन पर कई तरह के लम्बे लम्बे घास उगे थे.रोहित ने सोचा "इससे आगे जाना ठीक नहीं होगा. अब मुझे वापस जाना चाहिए."

वो अभी वापस जाने की सोच ही रहा था कि अचानक कहीं से बहुत सारे बंदर आ गए. रोहित उन्हें देख कर घबरा गया और तेजी से भागने लगा. उसकी टोपी भी जमीन पर गिर गयी. वो एक मोटे घने पेड़ पर चढ़ कर छुप गया.थोड़ी देर तक वह पेड़ पर ही रहा.जब बंदरों की आवाज सुनाई देनी बंद हो गयी तब जाकर पेड़ से नीचे उतरा पर उसे समझ नहीं आया कि वो कहाँ हैं और उसके घर जाने का रास्ता कहाँ हैं?रोहित समझ गया कि वो जंगल में भटक गया हैं. वो रोने लगा. तभी उसे एक झोपड़ी नजर आई.वह उसी तरफ तेजी से बढ़ चला,लेकिन झोपड़ी में कोई नहीं था. झोपड़ी की मिटटी की बनी दीवालें टूट गयी थी, केवल छत ही बची थी, रोहित झोपड़ी में बैठ गया. तभी उसे याद आया कि उसके पास मोबाइल हैं,घबराहट में ये भूल ही गया था.उसने अपनी पेंट की जेब से मोबाइल निकाला लेकिन जंगल में नेटवर्क नहीं था, धीरे-धीरे अँधेरा घिरता जा रहा था.उसने मोबाइल का टार्च जला लिया.उसके दोस्तों ने इस जंगल के खतरे के बारे में उसे पहले ही बताया था, वो सब बातें याद आ रही थी.अगर अभी कोई जंगली जानवर यहाँ आ गया तो वो अपनी जान कैसे बचाएगा. उसे बहुत डर लग रहा था.वो लगातार रोये जा रहा था.

उधर रोहित की मां सोच रही थी कि रोहित अपने दोस्तों के साथ खेल रहा है.जब शाम हो गयी और वो घर नहीं पहुँचा तो मां को चिंता होने लगी.उन्होंने उसके मोबाइल पर फ़ोन लगाया लेकिन मोबाइल नेटवर्क क्षेत्र से बाहर है ये बता रहा था.मां ने रोहित के पापा को फ़ोन पर सारी बात बताई, वो भी तुरंत घर पहुँच गए. दोनों ने रोहित के दोस्तों को फ़ोन लगाया पर दोस्तों ने बताया कि आज तो वो पार्क खेलने आया ही नहीं. आसपड़ोस के लोग भी रोहित के घर आ गए.सब सोच रहे थे कि रोहित कहाँ चला गया.

तभी मां को जंगल का गेट खुला हुआ दिखा.उन्होंने कहा,"रोहित जरूर से जंगल गया होगा.वो मुझसे कई बार वहाँ जाने का कह चुका है." बिना देरी किये सभी लोग हाथ में मशाल लिए जंगल की तरफ चल पड़े और रोहित को आवाज देने लगे.जंगल में थोड़ी दूर जाने पर उन्हें रोहित की टोपी मिली, सब उसी दिशा में बढ़ने लगे. तभी उन्हें दूर से हल्की रौशनी दिखाई दी जो रोहित के मोबाइल के टार्च की थी.मां रौशनी की तरफ दौड़ पड़ी. रोहित ने भी देखा कि दूर में कुछ रौशनी दिख रही है, वो मदद के लिए जोर-जोर से चिल्लाने लगा.झोपड़ी में पहुँच कर माँ ने रोहित को गले से लगा लिया.रोहित ने सबसे माफ़ी मांगी और आगे से जंगल में न आने का वादा किया.सभी लोग घर की ओर चल पड़े.

\*\*\*\*\*





## साठ की उम्र में भी फिट

रचनाकार- स्नेहा सिंह, नोएडा



'अभी तो मैं जवान हूँ...' यह गाना आते-जाते उन महिलाओं के मुँह से सुनने को मिल जाता है, जो रिटायर्मेंट के बाद भी सक्रिय रहती हैं और फिटनेस के मामले में युवा वर्ग को भी टक्कर देती हैं. साठ की उम्र आते-आते लोग नौकरी से रिटायर हो ही जाते हैं, इसी के साथ उनकी सक्रियता में भी विराम लग जाता है.

ऐसे समय में सब से बड़ा सवाल यह होता है कि, शरीर को लंबे समय तक चुस्त और फुर्तीला बनाए रखने के लिए क्या करें? मात्र व्यायाम ही नहीं, आप की अपने खुद के प्रति सोच भी आप को जवान रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है.

0 नियमित दिनचर्या बनाना जरूरी है

आपका आफिस जाना बंद हो जाने से आप की पूरी दिनचर्या बदल जाना स्वाभाविक है. अब आप एक नई दिनचर्या बनाएँ. अधिकतर महिलाएँ अचानक आए बदलाव के लिए मानसिक और शारीरिक तौर पर तैयार नहीं होतीं और अवसाद का शिकार हो जाती हैं. इसलिए खुद को व्यस्त रखने और रचनात्मक कार्यों में लगाए रखना बहुत आवश्यक है.

0 खानपान का ध्यान रखें

उम्र के साथ-साथ शरीर में अनेक बदलाव आते हैं. अपने शरीर को समझें और बदलाव को सकारात्मकता से स्वीकार करें. अपने खानपान का विशेष ध्यान रखें.



### 0 समय समय पर चिकित्सा जाँच कराएँ

साल में दो बार स्वास्थ्य की जाँच अवश्य कराएँ. हेल्थ इज वेल्थ इस कहावत का महत्व इस उम्र में आप के लिए अधिक है. अपने स्वास्थ्य के साथ कभी भी किसी तरह का समझौता न करें.

### 0 जॉगिंग करें

कसरत का इससे अच्छा विकल्प कोई नहीं है. नियमित रूप से 20-30 मिनट लगातार चलती रहें. डाक्टर से सलाह ले कर वाँक-जाँग का भी प्रयोग कर सकती हैं. इसमें एक मिनट वाँक करना और एक मिनट जॉगिंग करना होता है. इससे आप की कार्डियोवेस्कुलर सिस्टम और स्नायु मजबूत रहेंगे.

### 0 हल्का व्यायाम करें

वाल पुशअप से छाती और कंधे मजबूत रहते हैं. इसे दीवाल के सामने खड़ी होकर कर सकती हैं. पर एक बात का ध्यान रखें कि जितना आप से हो सके उतना ही करें.

### 0 कंधों की स्ट्रेचिंग

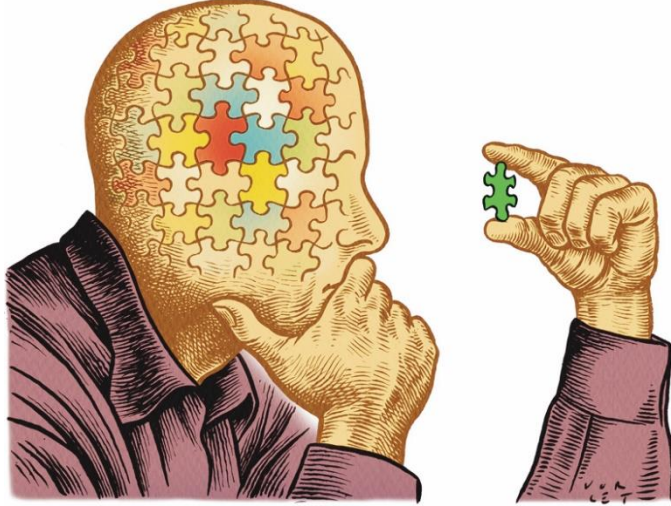
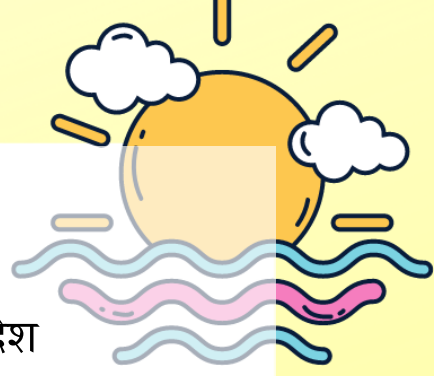
कंधे आगे की ओर झुक न जाएँ, इसके लिए कंधे को स्ट्रेच करें. ऐसा करने से शरीर को भी आराम मिलेगा और कंधे भी नहीं झुकेँगे.

\*\*\*\*\*



## बाल पहेलियाँ

रचनाकार- डॉ० कमलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, उत्तर प्रदेश



1. चार पैर है जिसके बच्चों  
फिर भी चल ना पाए.  
लोग बैठते जिस पर बच्चों,  
बोलो क्या कहलाए?

2. प्रथम हटे तो "कू" कहलाऊँ,  
दो अक्षर का नाम.  
अंत हटे तो 'चा' कहलाऊँ,  
अजब अनूठे काम.

3. दो अक्षर का नाम है मेरा,  
बात सुनो तुम पूरी.  
इक्कीस जून को याद करें सब,  
रखो न मुझसे दूरी



4. घर की मैं रखवाली करता,  
ऐसा अजब निराला हूँ.  
कुत्ता मुझको समझ ना लेना,  
'की" से खुलने वाला हूँ.

5. घर खोलूँ, अलमारी खोलूँ,  
खोलूँ फाटक द्वार.  
भरी तिजोरी को भी खोलूँ  
बोलो सोच विचार

उत्तर 1 कुर्सी, 2 चाकू, 3 योग, 4 ताला, 5 चाबी

\*\*\*\*\*



## शिक्षा का महत्व

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



कक्षा में मास्टर साहब के आते ही सभी बच्चे अपनी अपनी सीट पर जा कर बैठ गए.

तभी मास्टर साहब ने मोनू का नाम ले कर बोले

मोनू कल जो होमवर्क घर से पुरा कर के लाने को कहा था वह हमें दिखाओ.

इतना सुनते ही मोनू डर के मारे थर थर कांपने लगा

आज भी उसने होम वर्क पुरा कर के नहीं लाया था.

बताओ मोनू तुम होम वर्क पुरा कर के लाए हो या नहीं? "

सर मेरा होमवर्क नहीं पुरा हुआ है. आज हमें माफ कर दीजिए कल होमवर्क पुरा कर के दिखाऊंगा.

तभी मास्टर साहब अपनी आंखें लाल लाल कर के बोले आज तो तुमको फिर मुर्गा बना कर ही छोड़ूंगा.

इतना कह कर मास्टर साहब बोले चलो मुर्गा बन कर दिखाओ नही तो मार भी पड़ेगी और मुर्गा भी बनना पड़ेगा.

मैनु को रोज मानों मुर्गा बनने की आदद ही पड़ गई थी. उसे मास्टर साहब समझा कर हार चुके थे.

वह खेलने टीवी मोबाइल देखने के आगे शिक्षा का कोई महत्व नहीं समझ रहा था.



मोनू के दोस्त ओम यीशु रुद्राक्ष समझा कर थक चुके थे. उसपर किसी के बात का कोई असर नहीं पड़ रहा था.

उस दिन मोनू स्कूल में तीन घंटा तक मुर्गा बना कान पकड़े झुका रहा. मुर्गा बनने में उसे बहुत दर्द हो रहा था. आज उसने मन ही मन निश्चय कर लिया कि अब वह टी वी मोबाइल नहीं देखेगा बल्की शिक्षा के महत्व पर ध्यान देगा और मन लगा कर पढ़ेगा. अपना रोज का होमवर्क पुरा कर के स्कूल जाएगा ताकी बार बार उसे मुर्गा बनने से छुटकारा मिल जाए.

शाम को स्कूल के हेडमास्टर साहब कक्षा में आए और मोनू से बोले "मोनू तुम कल से स्कूल मत आना हमने तुम्हारा नाम स्कूल से काट दिया है.

तुम पढ़ने लिखने में जीरो हो तुम्हारे कारण हमारे स्कूल की बहुत बदनामी हो रही है.

हेडमास्टर साहब की बात सुनकर मोनू हेडमास्टर साहब के पैर पकड़ कर बोला सर हमें माफ कर दीजिए अब मैं कोई शिकायत का मौका नहीं दूंगा.

मोनू को रोते देख कर उसके दोस्त ओम यीशु और रुद्राक्ष हेडमास्टर साहब से बोले सर इस बार मोनू को

माफ कर दीजिए आइंदा इसने फिर होमवर्क पुरा कर के घर से नहीं लाया तो इसे स्कूल से निकाल दीजिएगा फिर हम कोई सिफारिश नहीं करेंगे.

उस दिन हेडमास्टर साहब मोनू के दोस्तों की बात मान कर मोनू को जीवन दान दे दी.

अगले दिन से मोनू शिक्षा का महत्व समझ कर पढ़ने लिखने में पुरा ध्यान लगाने लगा. उस दिन के बाद मोनू कभी मुर्गा नहीं बना.

\*\*\*\*\*



## शादी का विज्ञापन

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



हरी वन में हर तरह के जानवर और पक्षी रहते थे. उन्हीं में डब्बू बंदर अपनी पत्नी लीली और बेटे चंपू के साथ रहता था.

चंपू जवान हो गया था, मगर उसकी शादी नहीं हो पायी थी.

डब्बू बंदर बेटे चंपू की शादी को लेकर बहुत परेशान था और उसकी पत्नी लीली भी बहुत परेशान थी.

एक रोज डब्बू बंदर का दोस्त कालू भालू डब्बू को परेशान देख कर डब्बू बंदर से पूछ पड़ा, डब्बू मैं तुमको कई महीने से बहुत परेशान देख रहा हूं. क्या मैं तुम्हारी परेशानी का कारण जान सकता हूं?

डब्बू बोला कालू भाई मेरा बेटा चंपू जवान हो गया है मगर अभी तक उसके शादी के लिए कोई रिश्ता नहीं आया. मैं चंपू की शादी की बात को लेकर बहुत चिन्तित हूं. क्या तुम हमारी कोई मदद कर सकते हो? "डब्बू बंदर कालू भालू से पूछ पड़ा!"हां क्यों नहीं. आज तो घर बैठे शादी



का रिश्ता मिल जा रहा है . वो भी बस अखबार में शादी का विज्ञापन दे कर. मेरी मानों तो तुम दैनिक चंपक अखबार में अपने बेटे चंपू की शादी का विज्ञापन दे दो. फिर देखना विज्ञापन छपते ही शादी के रिश्ते आने लगेंगे.

कालू भालू की बात सुनकर डब्बू बंदर उसी दिन दैनिक चंपक अखबार में जा कर शादी का विज्ञापन दे आया. विज्ञापन छपने के एक सप्ताह के अन्दर शादी के रिश्ते आने शुरू हो गए. डब्बू की तो खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा.

एक दिन पड़ोसी वन चंपक वन से छोटू बंदर अपनी पत्नी के साथ डब्बू के घर आया और बोला, मैं अपनी बेटी सुन्दरी की शादी आप के बेटे के साथ करना चाहता हूं. मैं अपनी बेटी की फोटो भी साथ लाया हूं. यह फोटो देख लीजिए और लड़की पसंद है तो शादी की बात पक्की कर लीजिए.

सुन्दरी की फोटो डब्बू बंदर, उसकी पत्नी लीली और बेटे चंपू को पसंद आ गई. शादी की सारी बात पक्की हो गई और शादी का दिन भी अगले महीने पड़ गया .

चंपू की शादी होते ही डब्बू की सारी चिन्ता दूर हो गई और सभी मिल कर सुख से रहने लगे.

\*\*\*\*\*



## बिटिया रानी जिज्ञासा

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"



कोहिनूर और रूपलता को, प्राणों से भी प्यारी है.  
जिज्ञासा बिटिया ही अपने, घर की राज दुलारी है.

घर में बड़े सयानों जैसे, गहरी बातें करती हो.  
अपनी तुतली प्रिय बोली से, हम सबका मन हरती हो.

इस बिटिया के ही कारण तो, सुख का परम विधान है.  
रोज चहकना बुलबुल-सी, जिज्ञासा की पहचान है.

पुण्य तुम्हारा जन्मदिवस यह, खुशियाँ लेकर आई है.  
सदा सुखी रहना बिटिया तुम, तुमको बहुत बधाई है.

बिटिया का जीवन खुशियों के धन से मालामाल रहे.  
सुख से बीते जन्म तुम्हारा, उम्र हजारों साल रहे.



जिनके घर बिटिया होती है, जग में वही महान है.  
रोज चहकना बुलबुल-सी, जिज्ञासा की पहचान है.

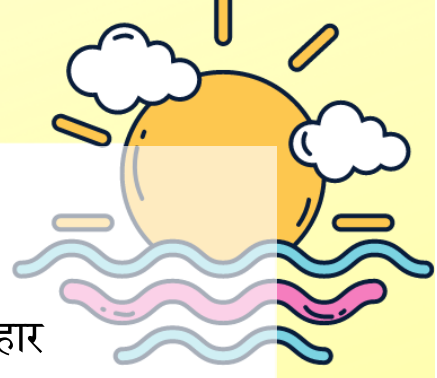
परियों सी सुंदर मुखड़े पर, मधुरिम-सी मुस्कान है.  
रोज चहकना बुलबुल-सी, जिज्ञासा की पहचान है.

\*\*\*\*\*



## स्कूली यादें

रचनाकार- सागर कुशवाहा, स्वामी आत्मानंद तारबहार



माला से सजी मोतियों की तरह,  
सज गई है यादें सभी कि,  
बस गई है यादें सभी की,  
संगीत के स्वरों की तरह,  
शुर फिरौती हैं यादें सभी की,  
कक्षा की वह मीठी सी यादें,  
मस्ती में घूली सी है यादें,  
दोस्तों के साथ बिताए हुए पल,  
खट्टी मीठी सी बातें,  
एक दूसरों की नोकझोंक की यादें,  
दोस्ती और दुश्मनी की यादें,  
फूलों की गुंजन सी सजी,  
सुंदर से फूल जैसी यादें,  
पलकों के सितारों में सजा कर  
ले जाएंगे सभी की यादें,

बढ़ेंगे जिंदगी में आगे,  
करेंगे स्कूल की ही बातें,  
मिलना बिछड़ना लगा रहेगा,  
फिर भी मुस्कुराएंगे यारों,  
बंद करके खुशियों का पिटारा,  
रख लेंगे यादें सभी की,  
गुनगुनाती है जैसे हवाएं,  
गुनगुन आएं दोस्तों यादें तुम्हारी.

\*\*\*\*\*



## माँ

रचनाकार- गरिमा बरेठ, सातवीं, स्वामी आत्मानंद तारबहार



एक माँ ही ऐसा शब्द है,  
जो पूरी दुनिया में अजेय है.  
सारे दुखों को, हर लेती है माँ,  
मेरी संसार है माँ.  
मेरी शक्ति है माँ,  
मेरी भगवान है माँ.  
सारे दुखों को सहती है माँ,  
पर भी कुछ ना कहती है माँ.  
बच्चों की देख-रेख करती है माँ,  
पर खुद को भूल जाती है माँ.  
माँ शब्द सत्य हैं ,माँ शब्द अनंत है.  
माँ अनादि है, माँ ही भगवंत है.  
माँ ही ममता माई , माँ ही भगवान है.

मैं कहती माँ जब होगा सर पर तेरा साया,  
दुख भी सुख सा ही बीतेगा.  
माँ से बड़ा ना कोई इस दुनिया में,  
माँ देख नहीं सकती बच्चों की दुख इस दुनिया में.

\*\*\*\*\*



## पढ़ई तुंहर दुआर

रचनाकार- शांति लाल कश्यप, कोरबा



सुनव गुरुजी सुन लईका, बंद हे स्कूल के फईका.  
नई होवन दन पढ़ई खईता, आनलाईन जुड़ के सब बईठा. सुन भईया.

नवा छत्तीसगढ़ गढ़ना हे अऊ, आनलाईन सब ल पढ़ना हे.  
सी.जी.स्कूल डाट इन म जाके, सब ल इही म जुडना हे. सुन भईया.

एमा सबके सुविधा हे अऊ, कोई नहीं एमा दुविधा हे.  
सब कक्षा के पुस्तक ले ले, सब ल इही म पढ़ना हे. सुन भईया.

तुंहर पारा जाना हे अऊ, मोहल्ला क्लास पढ़ाना हे.  
सोशल डिस्टेंसिंग अऊ भईया, चेहरा म मास्क लगाना हे. सुन भईया.

स्वेच्छा से जो पढ़ावत हे ओ, शिक्षा सारथी कहावत हे.  
ए बिषम स्थिति म भईया, ज्ञान के अलख जगावत हे. सुन भईया.

जागौ लईका जागौ सियान, मिल जुल के हमन पढ़ान.  
बुलटू के बोल ले भईया, हो ही हमर पढ़ई आसान. सुन भईया.



कोनो बात के दुविधा हे, मिसकॉल गुरुजी सुविधा हे.  
नम्बर म मिसकॉल करौ जी, टरही सब असुविधा हे. सुन भईया.

\*\*\*\*\*



## बंदर करने चला शादी

रचनाकार- बंद्री प्रसाद वर्मा अनजान



बंदर करने चला शादी  
धूमधाम से भाई.  
एक बंदरिया से उसको  
प्रेम हो गया भाई.

बन कर दुल्हा बंदर देखो  
बग्गी पर बैठ कर आया.  
जंगल के सभी जानवरों को  
अपने बारात में लाया.

बन ठन कर बंदरिया  
बंदर के सामने आई.  
बंदर राजा को उसने  
जयमाला देखो पहनाई.



पंडित बन कर भालू ने  
बंदर का शादी करवाया.  
बंदर और बंदरिया से  
सात फेरे लगवाया.

बन कर दुल्हन बंदरिया  
बंदर के घर आई.  
बंदर और बंदरिया को  
सबने दी खूब बधाई.

\*\*\*\*\*



## हमको बस पढ़ना है

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान



जीवन में कुछ बनना है तो  
हमको बस पढ़ना है.  
अपने लक्ष्य की ओर  
आगे बस बढ़ना है.

शिक्षा का जीवन में  
महत्व हमें समझना है.  
कुछ भी हो जाए  
हमको बस पढ़ना है.

पढ़ लिख कर हमको  
जीवन में कुछ करना है.  
बन कर बड़ा अधिकारी  
अपना नाम करना है.

शिक्षा से जीवन की  
हर अभिलाषा पूरी करना है.  
पढ़ लिख कर हमको भी  
अपना नाम रौशन करना है.

\*\*\*\*\*



## पुरस्कारों का बाजार

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा



आजकल सोशल मीडिया प्लेटफार्म ऐसी पोस्ट से भरे पड़े हैं जिनमें लिखा होता है कि किसी को कोई पुरस्कार मिला है. ऐसा पुरस्कार मिलने पर पुरस्कार प्राप्त करने वाले और पुरस्कार देने वाले दोनों बड़-चढ़कर अपना प्रचार करना शुरू कर देते हैं. आये दिन सुर्खियों में रहने वाले इन पुरस्कारों कि सच्चाई बेहद निंदनीय है और इनमे से ज्यादातर पुरस्कार (सभी नहीं) पैसे देकर खरीदे जाते हैं. होता यूँ है कि हमारे देश में आज गैर सरकारी संगठन (NGO) की बाढ़ सी आ गयी है जो समाज सेवा के नाम पर सरकार से पैसा प्राप्त करते हैं. इनमे से बहुत से एनजीओ समाज में काम करने वाले या किसी क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति से सम्पर्क करते हैं. उस व्यक्ति को प्रलोभन देते हैं कि आपकी सेवा काबिल-ए- तारीफ़ है. और हमारा एनजीओ आपको सम्मानित करेगा. ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन से शुरू होने वाली यह प्रक्रिया उक्त एनजीओ द्वारा पुरस्कार की एवज में लूट का पहला कदम होती है जब किसी व्यक्ति से पुरस्कार रजिस्ट्रेशन के लिए शुल्क ऐंठा जाता है.

किसी एनजीओ या संस्था से पुरस्कार प्राप्त करने की इच्छा अब उक्त व्यक्ति को अपने मोह में फंसा लेती है और चरण दर चरण लूट के रास्ते खुलते जाते हैं. पहले रजिस्ट्रेशन शुल्क, फिर जिला स्तर के विजेता और फिर राज्य स्तर के अवार्डी और अंत में ये प्रक्रिया राष्ट्रीय स्तर पर रहने और खाने के इंतज़ाम के खर्च के साथ खत्म होती है.

पुरस्कारों की दौड़ में खोकर,  
भूल बैठे हैं सच्चा सृजन.



लिख के वरिष्ठ रचनाकार,  
करते है वो झूठा अर्जन.  
मस्तक तिलक लग जाए,  
और चाहे गले मे हार.  
बड़े बने ये साहित्यकार.

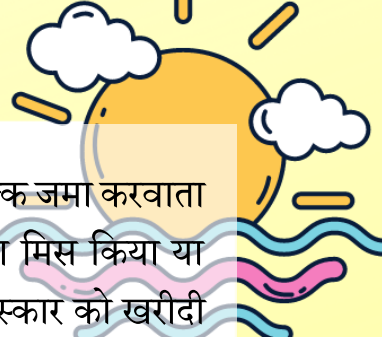
ये बात तो हुई खरीदे गए पुरस्कारों की. अब बात करते है एग्रीमेंट संस्थाओं की. आज साहित्य जगत में बहुत सी संस्थाएँ काम कर रही है. जब मैं इन संस्थाओं की कार्यशैली देखती हूँ या इनके समारोहों से जुडी कोई रिपोर्ट पढ़ती हूँ तो सामने आता है एक ही सच. और वो सच यह है कि किसी क्षेत्र विशेष या एक विचाधारा वाली संस्थाएँ आपस में एग्रीमेंट करके आगे बढ़ रही है. ये एग्रीमेंट यूँ होता है कि आप हमें सम्मानित करेंगे और हम आपको. और ये सिलसिला लगातार अखबारों और सोशल मीडिया पर सुर्खियाँ बटोरता है. ये ऐसी खबर खुद ही आपस में शेयर करते है. आम पाठक को इससे कोई ज्यादा लेना देना नहीं होता.

अब बात करते है सरकारी संस्थाओं और पुरस्कारों की. इनकी सच्चाई किसी से छुपी नहीं. जिसकी जितनी मजबूत लाठी, उतना बड़ा तमगा. सिफारिशों के चौराहों से गुजरते ये पुरस्कार पता नहीं, कब किसको मिल जाये. किसी आवेदक को पता नहीं होता. इनकी बन्दर बाँट तो पहले से ही जगजाहिर है.

मैंने पुरस्कारों की विश्वसनीयता पर सवाल उठाया है. क्योंकि हाल ही में मुझसे कुछ ऐसे लोगों ने सम्पर्क किया है जिन्होंने ये पुरस्कार जीते हैं और वो ऐसे पुरस्कारों की विश्वसनीयता को लेकर गंभीर आरोप लगा रहे हैं. कुछ ने तो यहाँ तक कहा कि पुरस्कार वितरण समारोह के आखिरी चरण में आवेदक को महँगे-महँगे स्टॉल खरीदकर विज्ञापन देना पड़ा था. जो जितना अधिक पैसा खर्च करेगा, उतना बड़ा पुरस्कार मिलेगा.

अब चला हाशिये पे गया,  
सच्चा कर्मठ रचनाकार.  
राजनीति के रंग जमाते,  
साहित्य के ये ठेकेदार.  
बेचे कौड़ी में कलम,  
हो कैसे साहित्यिक उद्धार.  
बड़े बने ये साहित्यकार.





सबसे बड़ी बात यह है कि ऐसे एनजीओ के कारनामों में जो भी चरण दर चरण शुल्क जमा करवाता जाता है. वो उतना ही चमकती ट्रॉफी के नजदीक होता है जिसने भी एक चरण मिस किया या शुल्क नहीं दिया वो इनाम की दौड़ से बाहर हो जाता है. अब ऐसी ट्रॉफी या पुरस्कार को खरीदी कहें या न कहें आप बताइये. कुछ को तो डोनेशन राशि जमा करवाने के बाद ही सम्मानित किया गया था. जबकि किसी ने स्टाल खरीदा और सिल्वर अवार्ड या स्कॉच ऑर्डर ऑफ मेरिट प्राप्त किया. ये प्रमाण “बिक्री के लिए” पुरस्कार विजेताओं की प्रामाणिकता पर सवाल उठाते हैं. ऐसे पुरस्कारों के बढ़ते बाजार में देने और लेने वाले दोनों की भूमिका है. देने वाले अपने आप खत्म हो जायेंगे. अगर लेने वाले न बने. किसी भी पुरस्कार के लिए पैसा देना पड़े तो समझ लीजिये वो पुरस्कार नहीं खरीद है. बात इतनी सी है. फिर हम और आगे क्यों बढ़ें? एनजीओ रजिस्ट्रेशन के जरिये कई चरणों में राशि ऐंठते है या फिर डोनेशन लेते है. संस्थाएँ एक दूजे की हो गयी हैं. एक दूसरे को सम्मानित करने और शॉल ओढ़ाने में लगी हैं. सरकारी पुरस्कार बन्दर बाँट कहे या लाठी का दम. जितनी जान-पहचान उतना बड़ा तमगा. ये प्रमाण “बिक्री के लिए” पुरस्कार विजेताओं की प्रामाणिकता पर सवाल उठाते हैं.

देव-पूजन के संग जरूरी,  
मन की निश्छल आराधना.  
बिना दर्द का स्वाद चखे,  
न होती पल्लवित साधना.  
बिना साधना नहीं साहित्य,  
झूठा है वो रचनाकार.  
बड़े बने ये साहित्यकार.

\*\*\*\*\*

## पापा

रचनाकार- प्रियांशिका महंत, कक्षा – 7, सेजेस तारबहर बिलासपुर



मैं मेरे पापा की आंखों का तारा थी. मेरे पापा मेरे जीवन के सहारा थे. हर रोज मुझे स्कूल छोड़ने जाते थे जब मैं थक जाती तो मुझे झट से गोद में उठा लेते. हर रोज यह निगाँहे ताकती रहती की कब आएँगे पापा और जब फिर पापा घर आते तो ढेर सारा प्यार बरसाते मुझपे और अपनी सारी थकान भूलकर सीने से लगाते मुझको. जब मुझे थोड़ी सी भी छीक आती तो सारा घर सर पर उठा लेते थे पापा मेरे हर दुःख को पापा हँसकर सह लेते थे. जब-जब मैं रात को रोती थी तो गोद में उठा के घुमाया मुझको लोरी गाकर सुलाया मुझको जब से आप मिले मुझको तो जीवन की हर खुशी मिल गई मुझको. पापा! इस छोटे से शब्द में पूरा संसार बसा है. खुद धूप में जलकर अपने बच्चों को छांव देते हैं, पापा आप न होते तो मार डालती ये दुनिया, लेकिन आपके प्यार में असर बहुत है. बिना पिता के जिन्दगी अधूरी होती है. ये उनसे पुछो जिनके पिता नहीं होते. बहुत सोच समझकर परमेश्वर ने पापा को बनाया है. उस परमेश्वर की जीवित प्रतिमा को हम पापा कहते हैं. मैंने देखा है एक फरिश्ता पापा के रूप में. आप मुझे इतना प्यार करते थे पापा फिर आप मुझे छोड़कर क्यों चले गए. आज भी ये निगाँहे दरवाजे पर लगी रहती हैं कि कब आओगे और मुझे सीने से लगाओगे पापा.

लौट आओ पापा!

\*\*\*\*\*

## जीत-जीत सोच

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली



जीत-जीत सोच तू जीत जायेगा.  
हार से कभी न फिर घबरायेगा.  
अकेला चल राह में कदमों को बढ़ा,  
एक दिन तेरा ये मेहनत रंग लायेगा.

कुरुक्षेत्र के मैदान में जंग है जारी.  
जी जान लगा अपनी कर तैयारी.  
धनुर्धारी अर्जुन बन संशय में न घिर,  
कृष्ण की तरह दिखा विराट अवतारी.

मंजिल की आंखों में पहले आंखें तो मिला.  
लक्ष्य पाने मनबाग में कुसुम तो खिला.  
नित कर्म ही तेरा भाग्य है वीर मनुज,  
रुकना नहीं चाहिए अभ्यास का सिलसिला.



आयेंगी चुनौतियां तेरी लेने परीक्षा.  
दृढ़ पर्वत के समान खड़ा कर प्रतीक्षा.  
साहस भरके मन में सामना तो कर,  
मिलेगी सफलता पूरी होगी हर इच्छा.

\*\*\*\*\*



## सब विषयों में मेरिट पाई

रचनाकार- राजेंद्र श्रीवास्तव, विदिशा



लेकर कलम और कम्पास  
मन में उमंग और विश्वास.  
नहीं परीक्षा का कोई भय  
रुचिता पहुँची विद्यालय.

पढ़ने में है उसे लगन  
करती वह नियमित अध्ययन.  
प्रश्नपत्र लगे उसे सरल  
किया सभी प्रश्नों को हल.



पेपर सभी बनाये ठीक  
उत्तर लिखे सही-सटीक.  
लेखन भी उसका सुंदर  
मोती जैसे चमकें अक्षर.

मिला परीक्षा का परिणाम  
सबसे आगे उसका नाम.  
सब बिषयों में मेरिट पाई  
देते उसको सभी बधाई

\*\*\*\*\*



## पर्यावरण

रचनाकार- श्रेया गुप्ता, रायपुर



पर्यावरण एक साझी संपदा है  
अब पूरे विश्व ने ठाना है.

हमारी इस पृथ्वी में  
अनेकों प्रकार के  
वन वायु जल  
रंग-बिरंगे पशु पक्षी  
लेकिन अपने  
स्वार्थ के लिए  
इन पेड़ों को  
करते जा रहे हैं नष्ट.

इसे रोकना हर मनुष्य की  
जिम्मेदारी है  
नहीं तो पीढ़ी दर पीढ़ी की  
होनी निश्चित बर्बादी है.



यदि आप करते हो पेड़ों पर नष्ट  
तो सांस लेने में होगा आपको कष्ट.

हरा भरा वातावरण हर व्यक्ति को बनाना है,  
चलो फिर नियमित रूप से इसे आकार देने के लिए थोड़ा सा कष्ट उठाना है.

\*\*\*\*\*



## पोखर सा रहना सीखें

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", राजिम



मनमोहक है ताल तलैया,  
नाचे मेंढक ताता थैया.  
साँप केचुआ मछली रानी,  
साथ सभी रहते हैं पानी.

बीच ताल में कमल विराजे,  
पंखुड़ियों से पोखर साजे.  
पात-पात जल बूँदें ठहरे.  
मोती बन कर देते पहरे.

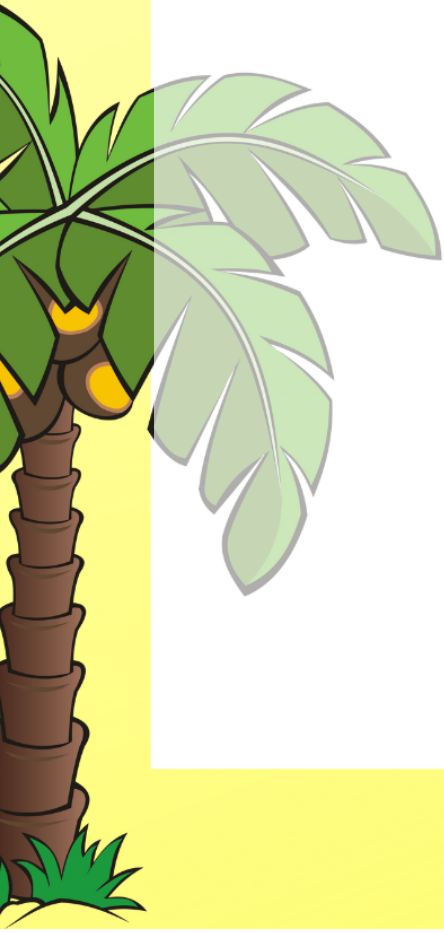
बच्चे बूढ़े सभी नहाते,  
तैर-तैर आनंद उठाते.  
सूर्य किरण की पड़ती लाली,  
लगे स्वर्ण की है ये प्याली.



वृक्ष लगाते यहाँ किनारे,  
उनमें बैठे पक्षी सारे.  
चींव-चींव कर शोर मचाते,  
पीकर जल को प्यास बुझाते.

पोखर सा तुम रहना सीखो,  
मीठी बातें कहना सीखो.  
बढ़े एकता भाईचारा,  
एक रहे परिवार हमारा.

\*\*\*\*\*



## नन्हीं सी आशा

रचनाकार- सीमा यादव



जब मन में छा जाते हैं उदासी के बादल,  
तब अंतःपुर से आती है नन्हीं सी आशा.

मन के हजारों सवालों को पढ़कर,  
सही राह दिखाती है नन्हीं सी आशा.

मन के गहन भीतर में जाकर,  
सारी वेदना पढ़ जाती है नन्हीं सी आशा.

मन को टूटा हुआ जानकर,  
अंतर से तीव्र वेदना पाती है नन्हीं सी आशा.

तब मन को अनेकों तर्क -वितर्क से,  
सच्चा साथी बन समझाती है नन्हीं सी आशा.



मन के सारे दुःख, संताप व कष्टों का,  
क्षण भर में निदान समझाती है नन्हीं सी आशा.

आखिर में मन के सारे अँधियारे कोने में,  
उजाले की जगमगाहट पाती है नन्हीं सी आशा.

\*\*\*\*\*



## मैं मैं का विकार अज्ञान का ढारा है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



नम्रता गहना ज्ञान का सहारा है  
ज्ञानी को अज्ञानी से भी ज्ञान का  
गुण लेना गुणवत्ता का सहारा है  
मैं मैं का विकार अज्ञान का ढारा है.

बुजुर्गों ने कहा यह जीवन का सहारा है  
सामने वाले से कहो तुम अज्ञानी नहीं हो  
मैं ज्ञानी नहीं हूँ जीत पल तुम्हारा है  
नम्र बनके रहो खुशहाल पल तुम्हारा है.

बड़े बुजुर्गों के जीवन का हमें अटूट सहारा है  
बड़े बुजुर्गों ने अहंकार पर तीर मारा है  
कहावतों में ज्ञान बहुत सारा है  
नीवां होके ग्रहण करो ज्ञान तुम्हारा है.

\*\*\*\*\*





## नाव

रचनाकार- नरेश अग्रवाल, झारखंड



पेड़ को काटकर  
नाव बनाई गयी  
उसी से हम नदी पार कर रहे

अब इसे कोई पेड़ नहीं कहता  
डाल भी नहीं कहता  
न जड़, न पत्तियां  
सभी केवल नाव को पहचानते हैं  
जो पानी में डूबी रहती हर पल  
लेकिन किसी को डूबने नहीं देती

रात होते ही  
गुलामी की रस्सी से बांध दी जाती  
पड़ी रहती है किनारे पर





सितारे हंसते हैं इस पर  
चिड़िया चोंच मारती है  
पूछती है कहां है जगह  
घोसला बनाने के लिए

निरुत्तर नाव सुबह फिर चल पड़ती है  
अपनी सूनी देह लिए  
फिर से अपने काम पर  
भले इस पर पत्ते नहीं  
लेकिन यह पेड़ ही तो है!

\*\*\*\*\*





## मेरी मृत्यु के बाद

रचनाकार- नरेश अग्रवाल, झारखंड



हजारों सालों से  
हमारा कब्जा इस जमीन पर  
पुरखे दर पुरखे  
अनाज उपजाते रहे, भूख मिटाते रहे  
हर पीढ़ी ने चखा इसका स्वाद  
इसके स्वाद में कभी कोई कमी नहीं आई.

अब पढ़ा-लिखा बेटा थक चुका  
कहता है बहुत हुआ  
अब यह किसानि बंद करो  
इस जमीन पर विशाल इमारत बनाएंगे  
जिसे बेच देंगे शहरियों को  
अब यहां धूल नहीं उड़ेगी, गड्ढे नहीं दिखेंगे  
सबकुछ सुंदर हो जाएगा.

इस बीमार अवस्था में  
कैसे उसका प्रतिरोध करूं  
हार कर हां कह देता हूं  
एक वसीयत लिखता हूं  
यह सब होगा मेरी मृत्यु के बाद!

\*\*\*\*\*





## याचना

रचनाकार- नरेश अग्रवाल, झारखंड



आप बुद्ध हैं  
इसलिए आपके सीने में  
बड़ा सा दिल है  
सभी से प्यार करने वाला.

कल जब आपके पास था  
मैंने महसूस किया  
लौटने पर भी लगा  
जैसे अभी भी आपके साथ हूं.

हर आदमी जो आपसे मिलता होगा  
साथ ले जाता होगा आपका दिल  
फिर भी यह दिल छोटा नहीं होता  
विस्तार लेता रहता है हर दिन.



मैं आज फिर आया हूँ  
इस बार थोड़ा सा बड़ा दिल मांगने  
कि इस प्रेममय दिल से  
हर किसी का दिल जीत सकूँ .

\*\*\*\*\*





## कहां कोई रोक पाता

रचनाकार- नरेश अग्रवाल, झारखंड



पेड़ से बहुत सारे पत्ते टूटे  
टूट कर सूख गए  
अब हवा की तरह उड़ रहे  
धूल की तरह बैठ रहे  
जूते उन्हें कुचल रहे  
चूर चूर कर रहे  
अब इतना छोटा आकार  
मिट्टी और इनमें कोई फर्क नहीं

देखता हूं पेड़ की ओर  
अभी भी बहुत सारे पत्ते हरे-भरे  
पतंग की तरह उड़ते  
मौसम के गीत गाते हुए

जो पत्ते दब चुके पांव से





कुचले जा चुके लोगों की तरह  
कभी सिर नहीं उठाएंगे  
सब कुछ बिना चाहे हो रहा  
झड़ना, गिरना, मिट जाना  
कहां कोई रोक पाता

हां कहां कोई रोक पाता  
पेड़ों में नए पत्ते आना भी!

\*\*\*\*\*





## सील अऊ लोढ़ा

रचनाकार- शांति लाल कश्यप, कोरबा

तईहा के बात आय. जंगल भीतर एक ठन गाँव राहय घिवरा.  
गाँव म एक झन कुदन नाव के मनखे राहय. ओहर निचट  
सिधवा राहय. ओहर सबे के सुख-दुःख म काम आवय.  
अपन पराया के भेद नी करय. ओखर घर के अंगना म दू ठन  
पखना राहय. ओमन बड़ उदास राहय.



एक बिहनिया ओकर उदासी ल देख के कुदन हर पथरा मन  
ले पूछथे. तुमन कईसे उदास दिखत हावा. काय बात ए. महुँ  
ल बतावव. पथरा मन कहिथे- तंय हर सबे के काम आथस  
अऊ हमन खचवा- डिपरा पथरा कभू काकरो काम नी आ  
सकबो का. ओखर बात ल सुनके कुदन हर दूनों पथरा ल अपन घर भीतरी लाथे अऊ ओखर  
खचवा- डिपरा ल छिनी हठौरी म छिन के बरोबर करथे. अपन सुघर रुप ल देख के दूनों पथरा  
मन खुश हो जाथें. कुदन हर बड़े पथरा के नाव धरथे "सील" अऊ छोटे पथरा के नाव धरथे  
"लोढ़ा". कुदन हर कथे आज ले तुमन दूनों संगे म रईहा अऊ जेहर तुमन करा आही ओला मिलाए  
के काम करिहा. "सील अऊ लोढ़ा" तियार हो जाथे. फेर ओमन ला समझ नी आवत राहय कि  
हमन कईसे कहूँ ल मिलाबो. त कुदन हर अपन बारी ले पताल, मिच्चा अऊ घर ले नमक ल लान  
के सील के ऊपर म मढ़ा के लोढ़ा ले पीसथे. ओहर पताल के चटनी बन जाते. "सील अऊ लोढ़ा"  
खुश हो जाथें. बस ओही बेरा ले "सील अऊ लोढ़ा" पीसे के काम आथे.

ए कहानी ले हमन ल ए शिक्षा मिलथे कि हमन ल हमेशा दूसर के हित म काम करते रहना चाही.

\*\*\*\*\*



## अक्षर ज्ञान

रचनाकार- श्रीमती रजनी शर्मा बस्तरिया रायपुर



तोर मोर नाव ला संगी  
लिखे बर जल्दी सीखबो रे

अ आ इ ई के संगे- संगे  
पढ़े-लिखे बर सीखबो रे

चिखला माटी रेती खेत में  
काड़ी के कलम बनाबो रे

ओमा उकेर के अक्षर ला  
भारत ला साक्षर बनाबो रे



पट्टी बस्ताआऊ कागद के संगे  
लईका ला स्कूल पठोबो रे.

अक्षर ज्ञान ला सीख के भईया  
साक्षर हमहू कहिलाबो रे.

\*\*\*\*\*



## एकता अखंडता भाईचारा दिखाना है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



एकता अखंडता भाईचारा दिखाना है  
यह जरूर होगा पर  
इसकी पहली सीढ़ी  
अपराध को हृदय से निकालना है

इसानियत को जाहिर कर  
स्वार्थ को मिटाना है  
बस यह बातें दिल में धर  
एक नया भारत बनाना है

सरकार कानून सब साथ देंगे  
बस हमें कदम बढ़ाना है  
हम जनता सबके मालिक हैं  
यह करके दिखाना है

कलयुग से अब सतयुग हो  
ऐसी चाहना है



हम सब एक हो ऐसा ठाने  
तो ऐसा युग जरूर आना है-3

पूरी तरह अपराध मुक्त भारत बने  
ऐसी चाहना है  
भारत फिर सोने की चिड़िया हो  
ऐसी भावना है

सबसे पहले खुद को  
इस सोच में ढलाना हैं  
फिर दूसरों को प्रेरित कर  
जिम्मेदारी उठाना है

ठान ले अगर मन में  
फिर सब कुछ वैसा ही होना है  
हर नागरिक को परिवार समझ  
दुख दर्द में हाथ बटाना है

इस सोच में सफल हों  
यह जवाबदारी उठाना है  
मन में संकल्प कर  
इस दिशा में कदम बढ़ाना है

पूरी तरह अपराध मुक्त भारत बने  
ऐसी चाहना है  
भारत फिर सोने की चिड़िया हो  
ऐसी भावना है

\*\*\*\*\*



## मनखे के जिनगी मा सिक्का

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", राजिम

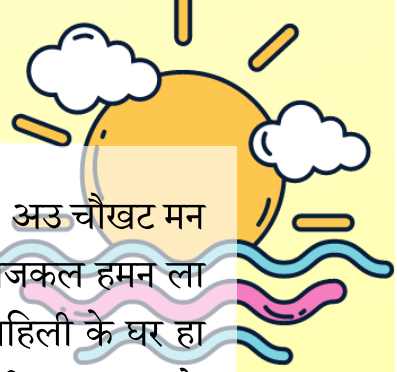


एक हाना हवै कि बखत परे मा खोटा सिक्का ही काम आथे. खोटा सिक्का चलगे; माने बिगड़त काम बनगे. अइसना सियान मन कहिथें. खोटा सिक्का के चरचा के आगू बढ़े ले अब बात आथे कि सिक्का हरै का चीज.

अब जइसे आम मनखे के जिनगी म धन-सम्पत्ति के अंतरगत कोनो जिनीस के खरीदी-बेचई होथे त एक खास जिनीस के जरूरत परथे, जेन ला मुद्रा कहे जाथे. इही मुद्रा के उपयोग एक माध्यम ले करे जाथे- रुपिया-पइसा. अब रुपिया-पइसा ल फेर दो तरीका ले बउरे (उपयोग) जाथे- एक नोट अउ दूसर सिक्का. पहिली के सियान मन सिक्का ला जादा बउरत राहय. हमर बबा के जमाना मा एक पइसा-दू पइसा.... एक आना-दू आना.... चवन्नी-अठन्नी अउ एक रुपिया. येंखर सिक्का आवय. हमन हर तो छुटपन ले सिरिफ पचीस-पचास पइसा अउ एक रुपिया सिक्का ला ही देखे रेहेन. अब के लइका मन हर एक, रुपिया, दू रुपिया, पाँच, दस अउ बीस रुपिया के सिक्का ला ही जानथें.

सिक्का काय जिनीस ले बनथे :-

सिक्का के जरूरत जतका पहिली रिहिसे, वतके आज तको हे. खऊ-खजानी या फेर छोटे-छोटे जिनीस बर सिक्का के ही जरूरत परथे. सिक्का जरमन (एल्युमिनियम), लेड सीसा, ताम्बा, ले बनथे. जेन एकदम मजबूत रहिथे. पहिली जेन सिक्का एल्युमिनियम के रहय तेला कतको टोरे के कोशिश करे तभो नइ टूटे भले फइल जावे.



एक यहू बात ला जानना जरूरी हे कि पहिली के जमाना मा घरो-घर चौखट रहय. अउ चौखट मन मा एक सिक्का ठेसाय (गड़ाय) रहय. अब के जमाना मा काबर नइ ठेसय ? आजकल हमन ला देखे ला तो नइ मिलय; फेर गाँव के सियान मन ला पुछबे त पता चलथे कि पहिली के घर हा छानही , खपरा के बने रहय. जम्मो कपाट (दरवाजा) मन लकड़ी के बनावय त कुरिया (कमरा) के भीतर मा जाये ले पहिली एक चौखट बनावय अउ ओला पार कर के मनखे मन भीतरी मा जावय. चौखट ला डेहरी घलो कहे जाथे. हाना हे कि मोर डेहरी ला पार कर के देखा. अब तो आधा फैशन के मारे डेहरी देखे ला नइ मिलय.

सिक्का काबर ठेसय :-

कहे जाथे कि जेकर पास धन -सम्पदा, माता लक्ष्मी के बरकत जादा रहय त ओखर घर के चौखट मा सिक्का गड़े रहय.कोनो सियान हर "कनवी आँखी मा काजर नइ आँजत रहै" मानो जेन गौटिया रहय तेखरे घर मा सिक्का गड़े रहय. अउ बात आथे की ये सिक्का हर चौखट के सुंदरता ला बढ़ावै. सिक्का ला लगावय त चौखट ह चमकत रहय. पहिली तो बिजली हर कभू रहय कभू नइ रहय. बिजली बूता जावय त इही सिक्का हर अँजोर देवय. चमकय त मनखे मन जान डरय की अब ये मेर चौखट हे. त हपटे (गिरे) के डर घलो नइ रहय. सिक्का ला नानकुन खिला जेला मोची खिला कहिथे तेला बीच मा लगा के चिपकावय. हमर बबा मन कहाँ के फेविकोल,अउ गोंद ला पातीस! चौखट तो लकड़ी के रहय त सिक्का के बीच मा खिला ल ठेसय. अउ भले चौखट टूट-फुट जावय फेर वो सिक्का हर नइ निकलय. अइसन मजबूत घर के डेहरी, लकड़ी अउ कपाट बने रहय.

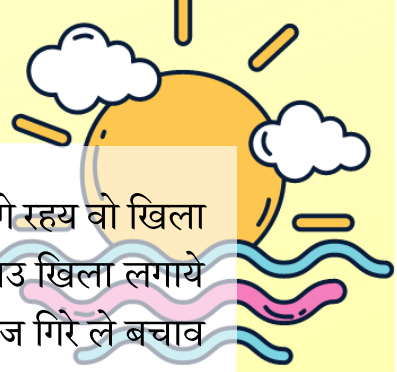
कोनो-कोनो बताथे की अइसने सिक्का जेला घर मा रखे जाथे तेला चौखट म नइ लगावय. अइसे सिक्का जइसे कोनो आदमी सरग सिधार देहे अउ मृत देह ला मुक्तिधाम लेगे के बेरा जे पइसा, सिक्का फेंके जाथे उही सिक्का ला बिन (उठा) के घर के चौखट मा लगाये. जेकर ले घर मा बुरी आत्मा ले बचाव होय.

अब ये बात कतेक सच हे अउ नहीं तेन ला सियान मन जानही अउ मोर ले बड़े जानकार मन जानही. मोर लइका बुद्धि मा जतेक सुने हँव, अउ जानथँव तेन ला लिखे के प्रयास करे हवँ.

बउरे के वैज्ञानिक कारन :-

चौखट मा सिक्का लगाये के पाछू मा वैज्ञानिक कारन तको हे. कुछू जिनीस के हमन प्रयोग करत हन त ओखर आध्यात्मिक कारन के संगे-सँग वैज्ञानिक कारन जरूर रहिथे. सिक्का के पाछू आध्यात्मिक कारन हे कि धन-सम्पदा बने रहिथे, बुरी शक्ति ले बचाव होथे. वैज्ञानिक कारन हे कि येमा सुंदरता तो दिखथे ही साथ ही साथ घर मा चौखट बने ले बरसात के मौसम मा पानी भीतर





नइ जा सकय चौखट तक ही सीमित रहय. अउ सिक्का के बीच मा जेन खिला लगे रहय वो खिला हर बिजली चमकय, गाज गिरय ओखर ले बचाव करे. ओखर कारन सिक्का अउ खिला लगाये रहय. आजकल सोलर पैनल , विद्युतीकरण जिनिंस निकल गेहे. बिजली अउ गाज गिरे ले बचाव करथे.

अब के मनखे मन फैशन म उतरत जात हे. आजकल के लइका मन चौखट ला नइ जानय, त सिक्का लगावय तेला कहाँ जानही; घर मा चौखट ही नइ बने त सिक्का ला कामा लगाही. बिन चौखट के घर बनाथे. घर मा एक हर कमरा के पहिली चौखट रखना चाही. अइसन सियान मन कहे. चौखट ले सुंदरता घलो बाढ़थे. आजकल रुपिया-पइसा के बड़ महत्व हे. एक-एक रुपिया मिलना मुश्किल होथे. एक रुपिया गवांँ जाथे त अइसे लगथे जानो-मानो परान निकलगे. मनखे मन डेहरी घलो बनाही त सिक्का ला नइ ठेसय. जेकर सिक्का रही तेकर परान तो उही म अटके रही. मोर एक रुपिया के सिक्का ला ठेस परेंव. लइका बर चॉकलेट आ जातिस ते.

पुरखा मन के बात ला जानना तको जरूरी हे. का करत रिहिन का नहीं. हमन वइसने कुछू जिनीस ला उपयोग मा ला सकथन के नहीं. पुरखा के बात ला सुने मा अब्बड़ निक लागथे. प्रयोग करन या झन करन हमन ला सुने मा ही आनंद आथे.

आखिर मा एक बात कहना चाहत हँव कि हमला हमेशा सिक्का के सम्मान करना चाही. ये देश के मुद्रा आय, जेन हर हमर देश आर्थिक बेवस्था के संचालन मा महत्वपूर्ण भूमिका निभाथे. यहू बात के ध्यान रखना चाही कि जुन्ना ले जुन्ना सिक्का ल सकेल-संजोके रखना चाही, जेखर ले पीढ़ी अवगत होवत रह ही.

\*\*\*\*\*



## बाल पहेलियाँ

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा " गब्दीवाला ", बालोद



1. बड़ी-ऊँची दीवारें मेरी,  
एक जगह मैं रहता मौन.  
रोकूँ नदियों की रवानी,  
बताओ बच्चों मैं कौन ?

2. एक पेड़ का अंग्रेजी नाम,  
वह है हथेली मेरी  
शिखा रानी मनु प्रिया,  
अरे बूझ पहेली मेरी.





3. चुटकी भर डाल रानी,  
बढ़िया सोच विचार.  
कितनी स्वादिष्ट सब्जी !  
मुझ बिन बेकार.

4. कई रंगों में मेरा परिधान,  
मैं कलगी से सर सजाऊँ.  
बादल गरजे पानी बरसे,  
मैं परिन्दा नाचू गाऊँ.

5. बालक में मैं एक बार,  
बलशाली में आऊँ दुबारा.  
नहीं मिलूँगा तुम्हें बजट में,  
बताओ मैं कौन हूँ यारा?

उत्तर : (1) बांध (2) पाम (palm)(3) नमक (4) मोर (5) ल.

\*\*\*\*\*





## हाइकु

रचनाकार- प्रदीप कुमार दाश 'दीपक', SARANGARH



दहक रहे  
कुसुमित पलाश  
मुस्करा रहे.

गुच्छे में सजे  
टप टप महुआ  
टपक रहे.

खड़े सेमल  
आगंतुक बने हैं  
स्वागत करे.

अधर चूमे  
फूलों को फुसलाने  
भँवरा आये.



फ़ाग जो आये  
कोयल कूक रही  
आम बौराये.

वसंतोत्सव  
गोरी खेलती होरी  
उल्लास छाये.

झूठा जगत  
मिलते कहाँ अब  
सच्चे ग्राहक.

युद्ध रुकेगा  
शिकार कर देखो  
महत्वाकांक्षा.

विक्षिप्त मन  
युद्ध की जरूरत  
पागलपन.

रुकेगा युद्ध  
आसान नहीं होता  
बनना बुद्ध.

\*\*\*\*\*



## दस्तक गर्मी की

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर



गर्मी ने दी दस्तक  
जाड़े ने दौड़ लगाई  
झटपट अंदर चल दी  
ये ऊनी शाल रजाई.

पसीने से हुए तर  
दिनकर जब दिखाएँ रंग  
पादप पंछी नदिया  
गर्मी से सभी हैं तंग.

छुट्टियाँ बिताएँगे  
ननिहाल में हरेक साल  
जब खेलेंगे हिम से  
दिखेंगे तभी श्वेत बाल.

ना टीवी मोबाइल  
खेलते हम डिब्बा-डोल  
दौड़, खो-खो, घुमंतू  
ये दुनिया है गोल-गोल.

\*\*\*\*\*





## सेहत का राजा टमाटर

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर



खाते जो हैं टमाटर लाल  
हो जाते उनके लाल गाल  
और मसालों के लज्जत से  
बन जाती तड़का संग दाल.

है विटामिन इसमें भरपूर  
और कैल्शियम भी बहुत प्रचुर  
तन को ये बलवान बनाएँ  
निर्बलता करें हमसे दूर.

बच्चे-बूढ़े सबको भाएँ  
इम्युनिटी को बहुत बढ़ाएँ  
पाचन शक्ति को ये सुधारे  
सेहत का राजा कहलाएँ.





विविध ब्यंजन इसके बनाएँ  
राजा-रंक सब इसे खाएँ  
सेव टमाटर सब्जी खा कर  
चेहरे सबके खिल-खिल जाएँ.

है सर पर इसके हरा ताज  
गृहिणी के दिल पर करें राज  
और इसके बिना न चलें हैं  
रसोई का कोई भी काज.

\*\*\*\*\*



## क्यों ना आती चिड़िया

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर



दूर गगन से आती चिड़िया,  
कौन वतन को जाती चिड़िया.

आँधी, तूफ़ाँ या हो बारिश,  
मुश्किल से ना डरती चिड़िया.

जल में छप-छप खेले चिड़िया,  
जल जीवन बतलाती चिड़िया.

नीम तले जब चूँ-चूँ करती,  
मीठे गीत सुनाती चिड़िया.

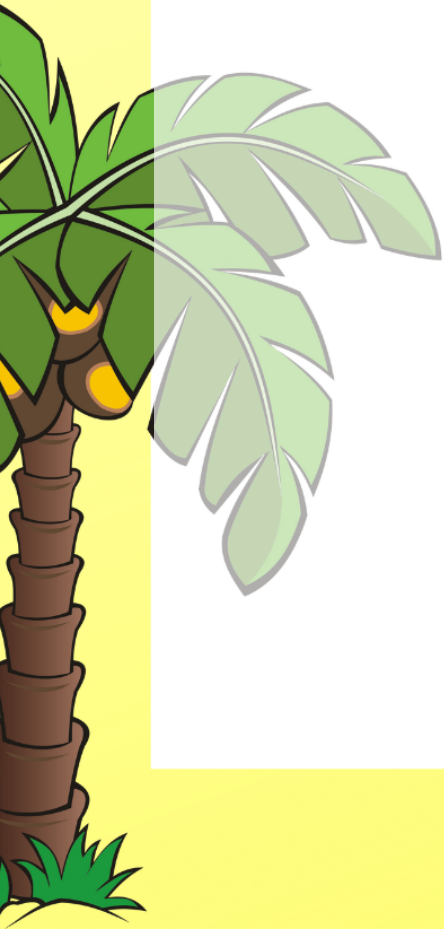
अनुपम , सपनिल नन्ही-नन्ही,  
कितनी प्यारी लगती चिड़िया.



सूना-सूना है घर-आँगन,  
अब घर क्यों ना आती चिड़िया.

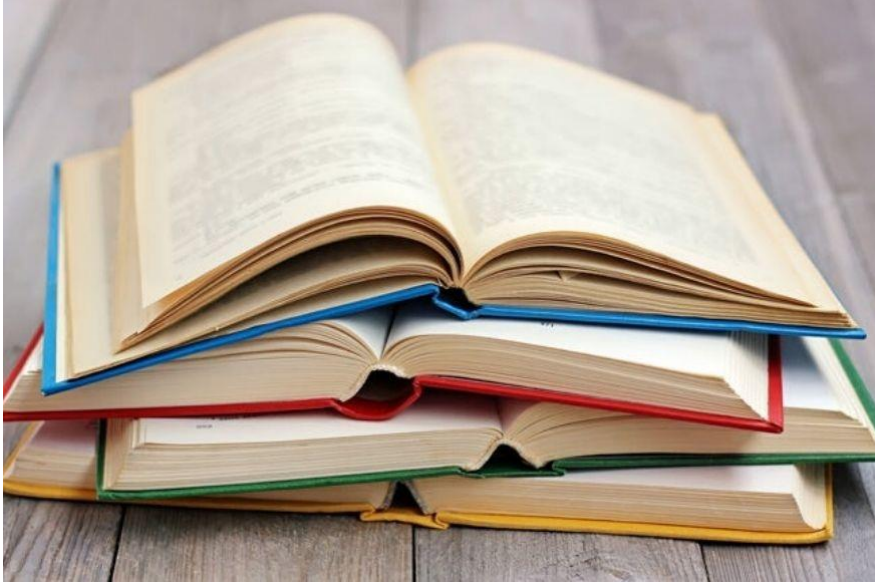
कब से नजरें ढूँढ रही है,  
देख नलिन वो आती चिड़िया.

\*\*\*\*\*



## किताबें हैं वरदान

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर



पुस्तक में ज्ञान-विज्ञान  
इनसे बनते सब विधान.  
पुस्तक से मिलें हैं ज्ञान  
पुस्तक में सारा जहान.

पढ़-लिखकर बढ़े हैं मान  
बढ़ती है जगत में शान.  
बांटने से बढ़ता ज्ञान  
विद्या सबसे बड़ा दान.

पुस्तक से मिलें सम्मान  
बनाती अच्छा इंसान.  
हर एक रोग का निदान  
हर मुश्किल का समाधान.



पुस्तकें हैं सर का ताज  
दुनिया पर करें हैं राज.  
दूर करें हैं हर मुश्किल  
निश्चित मिलती हैं मंजिल.

सपनों का यह आसमान  
पूरे करें सब अरमान.  
बहुत रखें हमारा ध्यान  
किताबें तो हैं वरदान.

राह हमारी तकती है  
अपनी कुछ ना कहती है.  
बीज अमन के बोती है  
पर तन्हा ये रोती है.

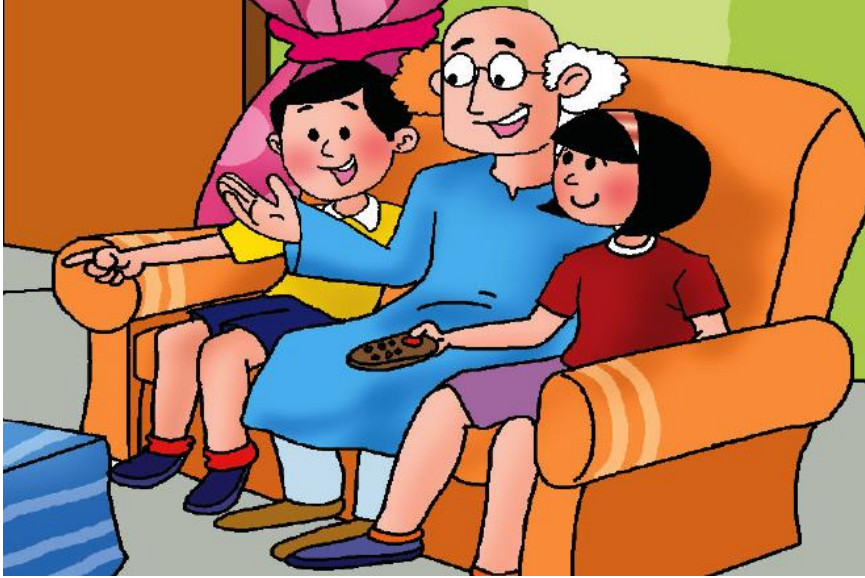
समझो इनकी लाचारी  
कैद रहती उम्र सारी  
एटम बम पर है भारी  
पुस्तकें दोस्त हमारी.

\*\*\*\*\*



## हमर बबा

रचनाकार- श्रीमती योगेश्वरी साहू, बलौदा बाजार



हमर बबा के अड़बड़ खरखर,  
लकड़ी चिरय ओहा फरफर.

हमर गांव के बड़का सियान,  
हमर बबा हर गजब सुजान.

हाथ म धरे एक गोटानी,  
पाका चुंदी ओकर निशानी.

चक ले पहिरे रहिथे धोती,  
नइ जावय वो कोनो कोती.

घर के बरवट ओकर डेरा,  
खावय बासी तीनों बेरा.

गांव के जुन्ना बात बताथे,  
हमर बबा ल सब डरथे.

जब होथें बड़का नियाय,  
हमर बबा ल तभे सोरियाय.

\*\*\*\*\*



## पनही

रचनाकार- श्रीमती योगेश्वरी साहू, बलौदा बाजार



पाँव म सुग्घर फबथे पनही,  
नइ पहिरबे त काँटा गढ़ही.

साँप बिच्छी ले परान बचाथे  
काँटा खुटी ले घलो बचाथे.

पाँव जरथे जब चट चट चट,  
पहिरव पनही तुमन झटपट.

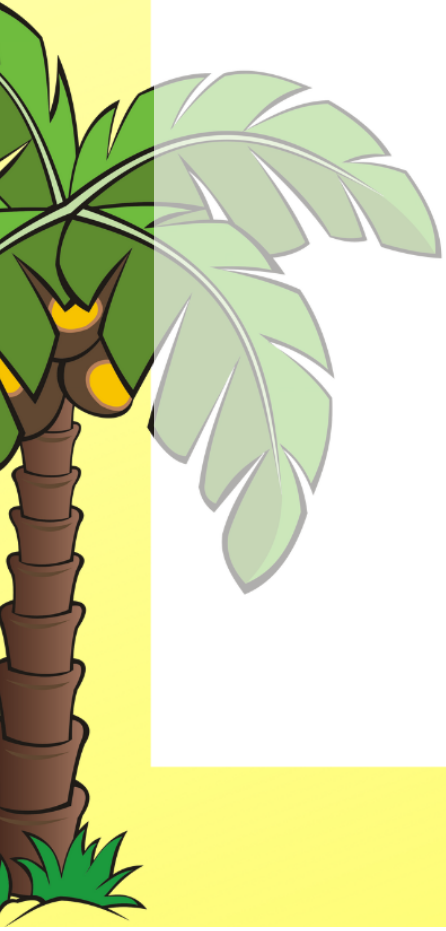
धुरा-माटी ल राखथे दुरिहा,  
पनही राखव बाहिर कुरिया.

जावव जब भी बाहिर-बट्टा,  
पहिनव पनही नोहय ठट्टा.



बीमारी ल दुरिहा भगाथे,  
पनही घलो मान ल पाथे.

\*\*\*\*\*





## नरवा

रचनाकार- श्रीमती योगेश्वरी साहू, बलौदा बाजार



हमर गाँव म बड़का नरवा  
पानी पीये जेमा गरवा.

पानी सुग्घर फरियर-फरियर  
खेती-खार सब हरियर-हरियर.

लइका लोग तउरे बर जाथे  
कूद-कूद के गजब नहाय.

\*\*\*\*\*



## चिरईजाम के रूख

रचनाकार- श्रीमती योगेश्वरी साहू, बलौदा बाजार



एक ठन जंगल रिहिस. उहा के राजा बघवा अउ भलवा दुनो मितान बदे राहय. दुनो जन संघरा किंजरे बर जाय. एक दिन दूनो झन अपने जंगल म किंजरे बर गिस. भलवा ह सब्बो रूख मन ल निटोर- निटोर के देखत रहिस त बघवा ह पूछथे-- ते का देखत हस मितान .

भलवा ह कइथे--हमर जंगल म किसम-किसम के रूख राई हे फेर एको ठन चिरईजाम के रूख नइये. इहां एको ठन रूख चिरईजाम के रहितीच त हमू मन पोछु चिरईजाम खातेन.

बघवा ह कइथे -- सिरतोन केहेच मितान, अतका दिन ले नइ रिहिस ! फेर अब हमन दुनो मिलके चिरईजाम के बीजा बोंबो. मे ह अबड़ अकन बीजा सकेल के राखे हव जेला अषाढ़ म लगातेव. फेर कोनो बात नइये अब हमन कालीचें तरिया के तीरे तीर बीजा ल बोंबो. दूसरे दिन होत बिहनिया बघवा अउ भलवा चल दिस तरिया तीर. भलवा ह कुदारी ल धरके ८\_१० गड्डा कोड़िस अउ बघवा ह बीजा मन ल बोवत गिस. तहां दुनो झन मिलके ओमन म पानी डारिन.

अब रोजे संझा बघवा अउ भलवा ओमा पानी डालें बर जाय. १२-१४ दिन के गे ले ओमन ल ओ जगा नान नान कोवर पाना दिखिस. दुनो झन बिकट खुश हगे. बघवा अउ भलवा दुनो झन चिरईजाम के अड़बड़ सेवा करिन. १ बछर के बाद चिरईजाम म फूल मातिस अउ झोत्था -झोत्था चिरईजाम फरिस. बघवा अउ भलवा दुनो झन छकत ले चिरईजाम खईन.

\*\*\*\*\*

## मेरा गाँव सबसे प्यारा है

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण



मेरा गाँव सबसे प्यारा है  
जहाँ सुकून भरा नजारा है.

यहाँ चौक और चौपालें हैं  
जहाँ बरगद, वृक्षों की डंगालें हैं.

यहाँ सुंदर हवाएँ बहती है  
जहाँ पंछियाँ खूब चहकती हैं.

यहाँ नित हरियाली रहती है  
जहाँ लोगों में खुशहाली होती है.

यहाँ खेतों में फसल लहराते हैं  
जहाँ माटी पुत्र हल को चलाते हैं.

यहाँ स्वच्छ सरोवर दिखते हैं  
जहाँ सुंदर फुल कमल खिलते हैं.

यहाँ सुर-सरिता भी बहती है  
जहाँ हम सबकी प्यास बुझती है.

\*\*\*\*\*



## आओ-आओ प्यारे बच्चों

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण



आओ-आओ प्यारे बच्चों  
चलो घूमने-फिरने जाएंगे  
छुटियाँ अब तो शुरु हुई  
चलों आनंद खूब मनायेंगे.

छुट्टी के संग-संग गर्मी आई  
आइसक्रीम भी खूब खाएंगे  
चौक-चौपाटी गार्डन जाकर  
झुला खूब हम झूल आएंगे.

रंग-बिरंगे ठंडे बर्फ के गोले  
चलो चुस्कियाँ खूब लगाएंगे  
फिर खाएंगे चाट-कचौड़ियाँ  
फुलकियाँ भी खूब खाएंगे.

\*\*\*\*\*

## ग्रीष्म ऋतू आई है

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण



ग्रीष्म ऋतू देखो आई है  
गर्मी उमस बहुत छाई है  
सूरज ने अगन बरसाई है  
धूप ने भी जलन बढ़ाई है.

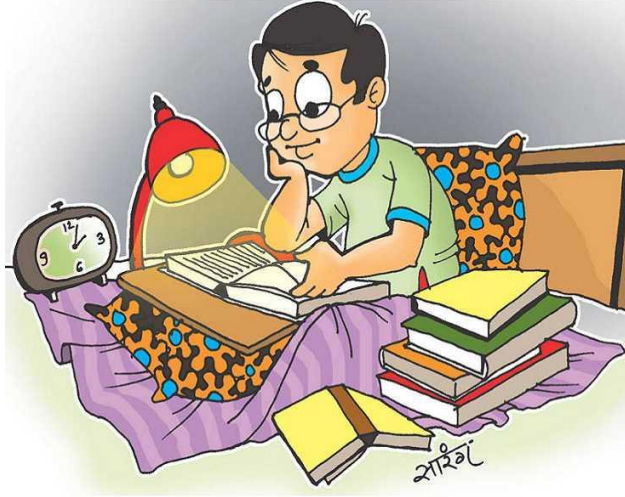
गर्मी से सब हलाक़ान हैं  
जीव जन्तु सब परेशान हैं  
पेड़-पौधे लगते बेजान हैं  
तपने लगा सारा जहान है.

ताल-तलैया रेगिस्थान है  
पनघट नदियाँ सुनसान है  
पगडंडियाँ सारी विरान है  
तपने लगा धरा आसमाँ है.

\*\*\*\*\*

## चलो करें पढ़ाई अब

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण



चलो करें पढ़ाई अब तो  
परीक्षा हमारी आई है  
घूमना अब तो बंद करें  
समय सारिणी आई है.

ध्यान लगाके करें पढ़ाई  
फैसले की बारी आई है  
चुनौती अब स्वीकार करो  
लड़ने की बारी आई है.

न डरेंगे हम, न हटेंगे हम  
डटकर मुकाबला करेंगे  
चाहे जैसा भी प्रश्न आए  
उत्तर लिखकर ही मानेंगे.

\*\*\*\*\*

## मैं परिंदा हूँ

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण



मैं परिंदा हूँ  
उड़ता हूँ स्वच्छंद.  
निर्भय होकर  
उड़ता हूँ आसमान  
मेरे मन में नहीं  
कोई अंतरद्वंद्व.  
मेरी कोई सिमाएं नहीं  
सिमाएं, हैं मेरी अनंत.  
ये आसमान ये धरती  
और सारे क्षिति दीगंत.  
ये चमन और हरियाली  
जो लगाती है बड़ी निराली.  
ये इठलाते फुल-कलियाँ  
और झूमते तरु की डालियाँ.  
इन सब में है मेरा बसेरा  
बेझिझक लगाता हूँ मैं फेरा.  
सिमाओं का नहीं बंटवारा

नफरतों का नहीं कोई मारा.  
यहाँ अमन है, चैन है, प्यार है  
इंसानों से जुदा परिंदा है प्यारा.

\*\*\*\*\*





## छत्तीसगढ़ के बासी

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण



छत्तीसगढ़ के पेजहा-बासी  
अमसूरहा आमा-अथान हे,  
छप्पन भोग हर बिरथा लागे  
जइसे इही म बसे परान हे.

छत्तीसगढ़ के चटनी-भाजी  
जेमा छत्तीस ठन मिठास हे,  
तरकारी हर सिद्धा कस लागे  
इहिच मा गजब के सुवाद हे.

छत्तीसगढ़ के बरी-बिजौरी  
चेंच-भाजी के अउ साग हे,  
डुबकी-घारी, निचट मिठाथे  
लागेथे छप्पन भोग सुवाद हे.



छत्तीसगढ़ के नान्हे-लइका  
राम-कृष्ण , अउ बलराम हे,  
इहाँ के सियान बाबू-भईया  
अउ वसुदेव-दसरथ समान हे.

छत्तीसगढ़ के मोर गँवई-गाँव  
लागे अयोध्या-गोकुल-धाम हे,  
इहाँ के मंदिर देव-देवाला  
जइसे लागथे चारो-धाम हे.

छत्तीसगढ़ के नदिया-नरवा  
गंगा-जमना कस पावन-धार हे,  
इहाँ के तरिया घाट-घठोंधा  
देवता के चरण-कुंड दुवार हे.

छत्तीसगढ़ के तुलसी-चौरा  
सालिग देव ह विराजमान हे,  
बिहना-संझा होवय आरती  
लागय अंगना तीरथ-समान हे.

\*\*\*\*\*



## गांव ला झन भुलाबे

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, धमतरी



सहर म जाके तै गांव ल झन भुलाबे,  
बर पिपर के तै छाव ल झन भुलाबे.  
लिम बमबूर के मुखारी करे ल झन भुलाबे  
दाई ददा के पाव परे ल झन भुलाबे.

सहर म जाके गांव के माटी ल झन भुलाबे,  
नान्हेपन के खेल भाउरा बाटी ल झन भुलाबे.  
सिलबत्ता के पताल चटनी ल झन भुलाबे,  
चीला, अंगाकर रोटी ल खाय ल झन भुलाबे.

अपन भाखा म गोठियाय ल झन भुलाबे,  
सहर म जाके तै गांव ला झन भुलाबे.  
तरिया म चिभोर के नहाय ल झन भुलाबे,  
अमली के लाटा ल खाय बर झन भुलाबे.

गवई गांव के तै बेटा गांव ल झन भुलाबे,  
संगी संगवारी के तै नाव ल झन भुलाबे.  
अनपढ़ दाई ददा ला गवार झन समझबे.  
अपन भाखा अउ संस्कार ल झन भुलाबे,  
सहर म जाके तै गांव ला झन भुलाबे.

\*\*\*\*\*





## पेड़

रचनाकार- आशा उमेश पांडेय, सरगुजा



पेड़ों का रखना सब ध्यान,  
देना सबको तुम यह ज्ञान.  
पेड़ हमारे जीवन दाता,  
तभी तो सबके मन को भाता.

शुद्ध हवा जब इनसे मिलती,  
सांसें तभी तो है खिलती.  
जन्मदिवस पर लेना संकल्प,  
'पौध लगाओ'का रखो विकल्प.

नित्य सुबह तुम पानी देना,  
उनकी सेवा खुद ही करना.  
पेड़ बड़े जब हो जायेंगे,  
फल उसका हम मिल खायेंगे.

\*\*\*\*\*





## तितली

रचनाकार- डॉ अमृता शुक्ला



तितली रानी तितली रानी,  
बगिया की तुम हो महरानी.  
रंग-बिरंगे पंख तुम्हारे,  
देख उन्हें होती हैरानी.

पवन संग उडती फिरती हो,  
फूल-फूल का रस पीती हो.  
अगर पकड़ना चाहे तुमको,  
झट से नभ में जा छिपती हो.

छोटी हो पर बडी सयानी .  
ईश्वर की तुम सुंदर रचना,  
अपने पंख बचा कर रखना.  
भंवरा काला गुन-गुन करता,

तुम को तो चुप रह कर उड़ना.  
देख तुम्हें सब खुश हो जाते,  
जैसे हो बारिश का पानी.

\*\*\*\*\*





## सवेरा

रचनाकार- डॉ अमृता शुक्ला



पूरब की खिड़की से झांका,  
लाल लाल सूरज का गोला.  
हुआ सवेरा आंखे खोलो,  
चिड़िया बोली मुर्गा बोला.

सवेरा हुआ अब तुम जागो,  
बिस्तर छोडो आलस त्यागो.  
मुंह धोकर स्नान करो,  
भगवान का ध्यान करो.

दूध पियो करो जलपान,  
पढ़ाई में लगाओ ध्यान.  
सही समय पर आना जाना,  
कभी न व्यर्थ समय गंवाना.

\*\*\*\*\*





## देश का तिरंगा तुझे सलाम

रचनाकार- कु मीना साहू, धमतरी



ऐ मेरे देश के तिरंगे तुझे सलाम  
तेरी आन, बान, शान को सलाम  
तुझमें बसी १४० करोड़ जनता को सलाम  
तेरे 28 राज्य की हर भाषा को सलाम  
तेरी दया, धर्म और उदारता को सलाम.

आज़ादी में कुर्बान भगत सिंह को सलाम  
चंद्रशेखर आजाद, मंगल पांडे को सलाम  
बॉर्डर पर शहीद हुए वीर जवानों को सलाम  
सीना तान खड़े हुए सैनिकों को सलाम  
जल, थल, वायु सेना को सलाम.

तेरी मिट्टी की खुशबू को सलाम  
तेरी फसलों की हरियाली को सलाम  
तेरे वनों की गहनता को सलाम

हिमालय पर्वत की सुंदरता को सलाम  
तेरी नदियों की पवित्रता को सलाम



तेरे साथ अजूबों को सलाम  
अलग-अलग धर्म के पुजारियों को सलाम  
तेरे आंचल में जन्में राम सीता को सलाम  
तेरी गोद में खेलने वाले राधा-कृष्ण को सलाम  
ऐ मेरे देश का तिरंगा तुझे सलाम.

\*\*\*\*\*



## क्यों नहीं जला करते चिराग अंधेरो में

रचनाकार- रेश्मा साहू 'झाँसी', कक्षा 12 वीं शास  
उच्च.माध्य.विद्यालय करेली, धमतरी



क्यों नहीं जला करते चिराग अंधेरो में  
चिराग अंधेरो में जलाया जाए तो अच्छा है  
बेघर सा उड़ रहें ये मायूस पंछियाँ  
इसके लिए घोंसला बनाया जाए तो अच्छा है

मुस्कुराते फूल भी मुरझाने लगें हैं  
ये नन्ही कलियों को हँसाया जाए तो अच्छा है  
मुसाफ़िरों को डराती है राहें अंधेरी  
सभी बेखौफ हो राह से गुजर जाए तो अच्छा है

कदम जलने लगे हैं धूप की दहशत से  
इन राहों में दरख्त लगाया जाए तो अच्छा है

\*\*\*\*\*



## बाबू जी

रचनाकार- जितेन्द्र सुकुमार 'साहिर'



सब पर अपना प्यार लुटाते बाबू जी  
घर का सारा बोझ उठाते बाबू जी  
माँ तो कभी बन भाई, बहना औ दीदी  
कितने ही किरदार निभाते बाबू जी

हम तक कोई ऑँच नहीं आने देते  
हर उलझन से, खुद लड़ जाते बाबू जी  
पूरा करने अपने बच्चों के सपने  
दिन रात अपना खून जलाते बाबू जी

बचपन में जीत सके सारे खेलों में  
अपनी जीत को हार बनाते बाबू जी  
जब भी लौट आते दफ़्तर से घर 'साहिर'  
पहला निवाला हमको खिलाते बाबू जी

\*\*\*\*\*



## नाना जी

रचनाकार- जितेन्द्र सुकुमार 'साहिर'



मुझसे जब भी मिलने आते नाना जी  
अपने साथ खिलौने लाते नाना जी

चलते-चलते जब भी मैं थक जाता हूँ  
कंधों पे मुझे बिठाते नाना जी

खेला करते साथ सदा साथी बनकर  
मैं रूठा तो मुझे मनाते नाना जी

नींद नहीं आती है आंखों को अक्सर  
लोरी गाकर रोज सुलाते नाना जी

कहते मुझसे अब्बल आना कक्षा में  
बैठाकर हर शाम पढ़ाते नाना जी

\*\*\*\*\*

## निंदिया रानी आओ न

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण



निंदिया रानी आओ ना  
लल्ले को सुला जाओ ना  
मीठी नींद दे जाओ ना  
प्यारा सपना दिखलाओ ना  
निंदिया रानी आओ ना.

परी बनके तुम आओ ना  
आसमां की सैर कराओ ना  
चाँद- तारों से मिलाओ ना  
मामा-मौसी है ये बताओ ना  
निंदिया रानी आओ ना.

स्वप्न लोक तुम ले जाओ ना  
देव-अप्सरा से मिलाओ ना  
सारी इच्छाएँ पूरी कराओ ना  
सुंदर लोरी गीत सुनाओ ना  
निंदिया रानी आओ ना.

\*\*\*\*\*



## 1 मई मजदूर दिवस

रचनाकार- श्रीमती युगेश्वरी साहू, बिलाईगढ़



मैं एक मजदूर हूँ  
मेहनत करने पर मजबूर हूँ  
अपना खून पसीना खूब बहाता हूँ  
कभी वक्त की मार पड़े तो  
भूखा ही सो जाता हूँ.  
कठिन समय में भी मैं  
अपना ईमान नहीं खोता हूँ  
भले ही सपनों के  
आसमान में जीता हूँ.  
अंधियारा है जीवन मेरा  
उजाले से बहुत दूर हूँ.  
मैं एक मजदूर हूँ  
मेहनत करने पर मजबूर हूँ.  
है मेरे भी ख़्वाब बहुत

मैं भी सपने सजाता हूँ  
पर हालात के आगे बेबस होकर  
कुछ कर नहीं पाता हूँ.  
अमीर लोग कद्र नहीं करते  
हम मजदूरों की  
हमारी मेहनत से ही बन रहे  
महल अमीरों की.  
पक्का छत नहीं मेरा  
झोपड़ी में रहने पर मजबूर हूँ.  
मैं एक मजदूर हूँ  
मेहनत करने पर मजबूर हूँ.

\*\*\*\*\*



## चिड़िया रानी

रचनाकार- श्रीमती युगेश्वरी साहू, बिलाईगढ़



चिड़िया रानी चिड़िया रानी  
लगती हो तुम बड़ी सयानी  
कोमल कोमल पंख तुम्हारे  
लगते हैं सबको प्यारे  
सुबह सुबह तुम आती हो  
चूँ चूँ करके हमे जगाती हो  
नील गगन में तुम उड़ती  
उड़ानों से कभी न डरती  
चुन चुन कर दाना लाती  
अपने बच्चों को तुम खिलाती  
जब भी कोई संकट आती  
ची ची करके शोर मचाती  
चिड़िया रानी चिड़िया रानी  
लगती हो तुम बड़ी सयानी.

\*\*\*\*\*



## मीठा आम

रचनाकार- अनिता मंदिलवार 'सपना', सरगुजा



देखो कितना  
सुंदर आम  
फलों का राजा  
मीठा आम  
पीला पीला  
रसीला आम  
बच्चों को बहुत  
भाता आम  
पेड़ों में ये जब  
लगा है रहता  
दिखता कितना  
मनभावन आम  
दशहरी, लंगड़ा  
मालदा, बीजू





आम्रपाली, चौसा  
तोतापरी, बैंगनफली  
जाने कितने  
इसके नाम  
सब का स्वाद  
अलग-अलग  
ऐसा निराला है आम  
पेड़ों पर पक्षी मंडराते  
उनको भी है  
भाता आम  
सब है मिलकर  
खाते आम  
सबको बहुत पसंद  
है ये आम !

\*\*\*\*\*



## चिड़िया रानी

रचनाकार- अनिता मंदिलवार 'सपना', सरगुजा



हर आँगन में  
फुदकती रहती  
चीं-चीं की आवाज  
करती रहती  
आपस में  
बतियाती रहती  
कभी इस डाल  
कभी उस डाल पर  
कभी मुनगे पर  
कभी अमरूद पर  
डाल-डाल  
इतराती रहती  
खग जाने  
खग की ही भाषा  
सच्ची है ये बात  
जब इसको देखो तो  
चलो उससे कुछ



दोस्ती कर लें  
उसके लिए  
आँगन में  
पानी रख दें  
कुछ भोजन के  
दाने रख दें  
चीं-चीं कर वह  
आभार करेगी  
अपनी खुशियाँ  
व्यक्त करेगी  
समझ लेना  
उसने दोस्ती  
कबूल कर ली.

\*\*\*\*\*



## भारत और भूटान

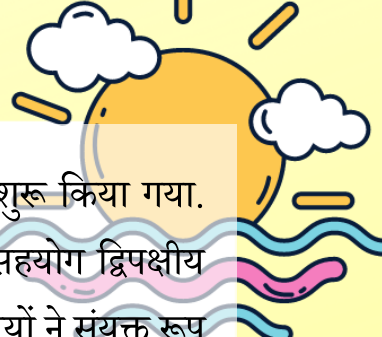
रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा



भारत और भूटान के बीच संबंध विश्वास, सद्भावना और आपसी समझ के स्तंभों पर आधारित हैं। दोनों पड़ोसियों के बीच सदियों पुराने घनिष्ठ सभ्यतागत, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंध हैं। भारत-भूटान संबंधों का मूल आधार दोनों देशों के बीच 1949 में हस्ताक्षरित मित्रता और सहयोग की संधि है, जिसे 2007 में नवीनीकृत किया गया था। भारत और भूटान के बीच बहु-क्षेत्रीय सहयोग है, व्यापार और आर्थिक संबंध में भारत भूटान का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है और भूटान में निवेश का प्रमुख स्रोत बना हुआ है। 2021 में, भारत ने भूटान के साथ द्विपक्षीय और पारगमन व्यापार के लिए सात नए व्यापार मार्गों को खोलने को औपचारिक रूप दिया।

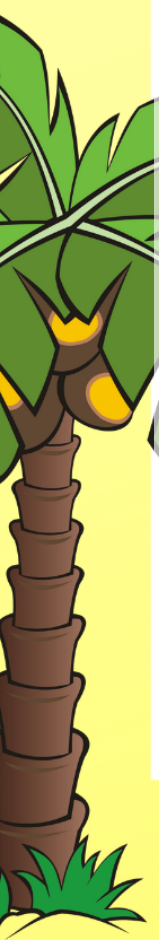
भूटान से भारत में 12 कृषि-उत्पादों के औपचारिक निर्यात की अनुमति देने के लिए नई बाजार पहुँच भी प्रदान की गई। डिजिटल सहयोग के लिए हाल के दिनों में, सहयोग के पारंपरिक दायरे से परे नए क्षेत्रों में सहयोग हुआ है। उदाहरण के लिए: तीसरे अंतर्राष्ट्रीय इंटरनेट गेटवे जैसे डिजिटल बुनियादी ढाँचे की स्थापना। इसके अलावा, भारत के राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क के साथ भूटान का एकीकरण ई-लर्निंग के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण सहयोग है।

भारत न केवल भूटान का सबसे बड़ा विकास भागीदार है बल्कि माल और सेवाओं में इसके व्यापार के स्रोत और बाजार दोनों के रूप में सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक भागीदार भी है। भारत भू-आबद्ध भूटान को न केवल पारगमन मार्ग प्रदान करता है, बल्कि जलविद्युत, अर्ध-तैयार उत्पाद, फेरोसिलिकॉन और डोलोमाइट सहित भूटान के कई निर्यातों के लिए सबसे बड़ा बाजार भी है।

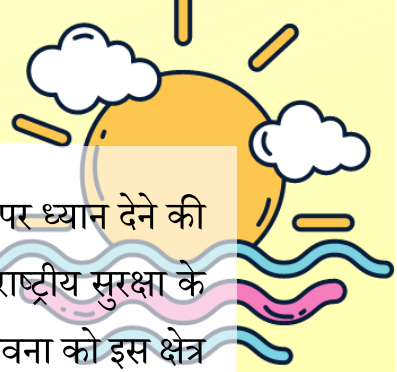


वित्तीय सहयोग/एकीकरण के तहत रुपये परियोजना का पहला चरण भूटान में शुरू किया गया. 2021 में भारत का भारत इंटरफेस फॉर मनी भी लॉन्च किया गया. अंतरिक्ष सहयोग द्विपक्षीय सहयोग का एक नया और संभावना-युक्त क्षेत्र है. भारत और भूटान के प्रधानमंत्रियों ने संयुक्त रूप से 2019 में थिम्फू में दक्षिण एशिया उपग्रह के ग्राउंड अर्थ स्टेशन का उद्घाटन किया, जो इसरो के सहयोग से बनाया गया था. इसके अलावा, भारत-भूटान सैट को 2022 में इसरो के पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल द्वारा अंतरिक्ष में लॉन्च किया गया था.

भूटान के साथ पारस्परिक रूप से लाभकारी पनबिजली सहयोग द्विपक्षीय आर्थिक सहयोग का मूल है. मांगदेछु सहित 4 पनबिजली परियोजनाएँ (HEP) पहले से ही भूटान में चालू हैं और भारत को बिजली की आपूर्ति कर रही हैं. शैक्षिक, सांस्कृतिक सहयोग और लोगों के बीच आदान-प्रदान हेतु भारत और भूटान के बीच शैक्षिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में घनिष्ठ द्विपक्षीय सहयोग है. चिकित्सा, इंजीनियरिंग आदि सहित विभिन्न विषयों में भारत में अध्ययन करने के लिए भूटानी छात्रों के लिए भारत सरकार द्वारा सालाना 950 से अधिक छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जाती हैं. कई भूटानी तीर्थयात्री बोधगया, राजगीर, नालंदा, सिक्किम, उदयगिरि और अन्य बौद्ध स्थलों की भारत में यात्रा करते हैं.



रणनीतिक संबंधों को मजबूत करते हुए, भारत ने 1961 में भूटानी सुरक्षा बलों को प्रशिक्षित करने के लिए भूटान में अपनी सैन्य प्रशिक्षण टीम तैनात की और तब से भूटानी सुरक्षा के लिए जिम्मेदार है. सुरक्षा और सीमा प्रबंधन के मुद्दों, खतरे की धारणा, भारत-भूटान सीमा प्रवेश निकास बिंदुओं के समन्वय, और अन्य पहलुओं के बीच वास्तविक समय की जानकारी साझा करने से संबंधित कई कार्य नियमित रूप से दोनों देशों द्वारा किए जा रहे हैं. समय के साथ भारत और भूटान के बीच संबंध ऊर्जा सुरक्षा, व्यापार और व्यापार, सुरक्षा और खुफिया जानकारी साझा करने, डिजिटलीकरण, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और संरक्षण जीव विज्ञान क्षेत्रों सहित व्यापक मुद्दों पर व्यापक साझेदारी और सहयोग में परिपक्व हो गए हैं. अतीत में विपरीत परिस्थितियों और चुनौतीपूर्ण समय में भारत हमेशा भूटान के साथ खड़ा रहा और भूटान ने इसे स्वीकार किया. एक मित्रवत और सहायक पड़ोसी के रूप में, भारत भूटान की जरूरतों के प्रति उत्तरदायी रहा है, जो समय-समय पर आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं और जो भी आवश्यक हो, की आपूर्ति करने वाले भूटान को दिए गए समर्थन से उदाहरण बन गया है.



भारत और भूटान के बीच सामंजस्यपूर्ण और टिकाऊ संबंधों के लिए कुछ मुद्दों पर ध्यान देने की आवश्यकता है जैसे चाइना फैक्टर. भू-रणनीतिक स्थिति, भूटान को भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण बनाती है. चीन और भूटान के बीच सीमा समझौते की संभावना को इस क्षेत्र में भारत के सामरिक हितों पर इसके प्रभाव के परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए. विशेषज्ञों द्वारा बताए गए मुद्दों में से एक भूटान के प्रति भारत का पैतृक रवैया है. भारत-भूटान संबंधों में संकट 2013 में स्पष्ट रूप से अपनी विदेश नीति में विविधता लाने के लिए भूटानी बोली को विफल करने के भारत के कथित प्रयास पर फूट पड़ा. आंतरिक राजनीति में दखल पर आलोचकों का तर्क है कि भूटान की आंतरिक राजनीति में कई बार भारत की ओर से हस्तक्षेप होता रहा है. जलविद्युत परियोजनाओं के संबंध में उठाए गए मुद्दों पर विशेषज्ञों का तर्क है कि जलविद्युत परियोजनाओं पर सहयोग करने के आर्थिक लाभों में कमी आई है. ब्याज दरें बढ़ गई हैं और बिजली की प्रति यूनिट पर मुनाफा कम हो गया है, जिससे भूटान के कर्ज में बड़ी वृद्धि हुई है.

भूटान भारत को ग्यागर यानी पवित्र भूमि मानता है, क्योंकि बौद्ध धर्म की उत्पत्ति भारत में हुई थी, जो कि बहुसंख्यक भूटानी लोगों द्वारा पालन किया जाने वाला धर्म है. एक मित्रवत् और मददगार पड़ोसी के रूप में भारत भूटान की जरूरतों के प्रति उत्तरदायी रहा है. भूटान भारत की विदेश नीति में एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और भारत के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है. इसलिए, उपरोक्त मुद्दों को संबोधित करते हुए स्थायी संबंध बनाए रखने के लिए और कदम उठाए जाने चाहिए.

\*\*\*\*\*





## रसीले आम

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, धमतरी

पीले पीले रसीले आम  
सबके मन को भाये आम.

बिन खाए कोई रह न पाए  
सबका जी ललचाये आम.

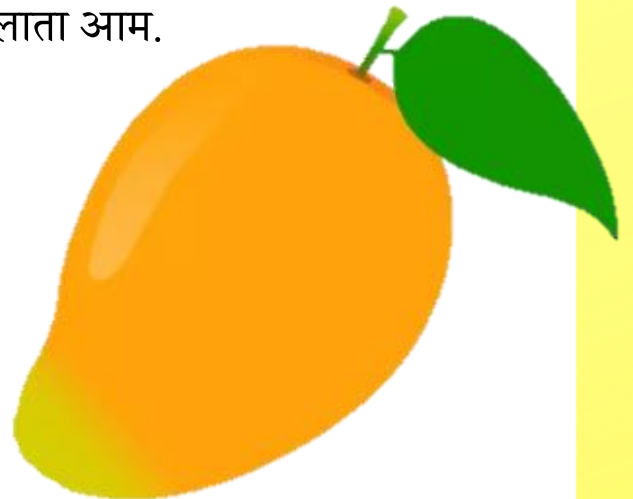
चौसा, दशहरी, लंगड़ा आम  
तरह तरह के हैं इनके नाम.

कुश, परी, प्रकाश, गीताली  
सब मिले चूसे मीठे आम.

कच्चा आम पक्का आम  
सबको खूब भाता आम.

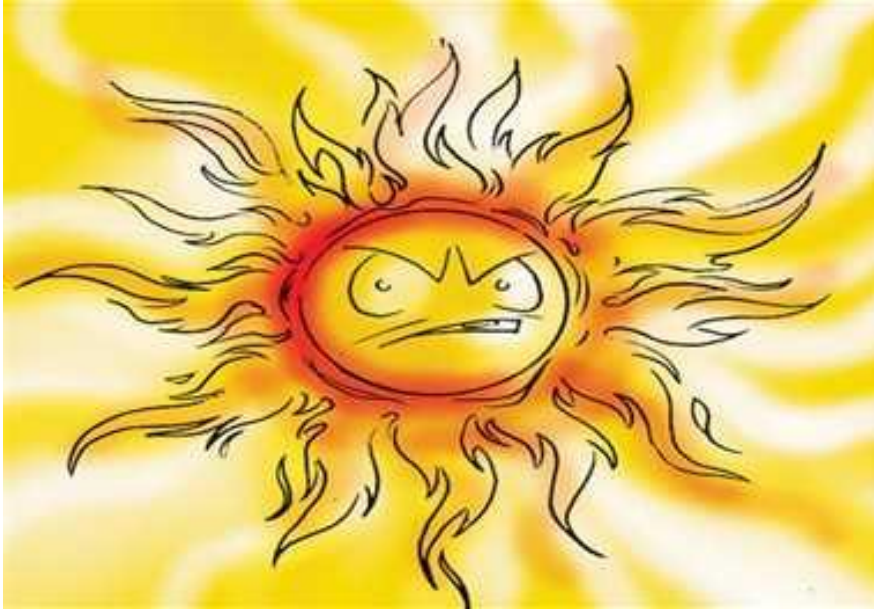
जो खायेगा वो गायेगा  
फलों का राजा कहलाता आम.

\*\*\*\*\*



## गर्मी आई

रचनाकार- सुश्री मंजूलता प्रधान, कोरबा



गर्मी आई गर्मी आई  
तेज धूप का गोला लाई  
संदूक में डाले सबने गरम कपड़े  
सूती कपड़े की अब बारी आई  
गर्मी आई गर्मी आई  
तेज धूप का गोला लाई

माँ बाजार से तरबूज लाई  
मीठी कुल्फी मन को भाई  
हाल सबकी बेहाल हो गयी  
जूस लस्सी छाछ सबकी ढाल हो गयी  
गर्मी आई गर्मी आई  
तेज धूप का गोला लाई

गर्मी में कड़क धूप हैं छाँव नहीं  
घर से निकले पाँव नहीं  
पंखे कूलर बिना चैन नहीं  
बिन बिजली के अब नींद नहीं.

\*\*\*\*\*



## आखिर क्यों

रचनाकार- सृष्टी प्रजापति, सातवी, स्वामी आत्मानंद तारबहार बिलासपुर



रात होते ही नींद क्यों आ जाती है?  
सुबह होते ही नींद क्यों नहीं खुल पाती है?  
स्वादिष्ट व्यंजन देख के झटपट भूख लग जाती है.  
किताबों को देख कर पढ़ने कि याद क्यों नहीं आती है?  
धूप देखते ही झटपट छाँव ढूँढते है.  
अपने सपनों को पूरा करने के रास्तों को देखकर क्यों पीछे मुड़ जाते है?  
मोबाईल किसी भी समय मिल जाए एक बार खोलकर जरूर देखते है.  
किताबों को क्यों दूर से ही प्रणाम कर लेते है?  
दोस्त खेलने बुलाए झटपट चले जाते है.  
पढ़ाई की बात सुनकर वहाँ से क्यों आ जाते है?  
अपनी जिन्दगी को एक मकसद बना लो.  
जो तुम करना चाहते हो वो पूरी दुनिया को कर के दिखा दो.  
पढ़ाई को बोझ नहीं मित्र बना लो.  
क्योंकि जिन्दगी आप की है ,जो चाहे वो कर के बिता दो या कर के दिखा दो.

\*\*\*\*\*

## भोर

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे, कोरबा



भोर का सुंदर नजारा है कितना प्यारा,  
भोर के सुंदर नजारा है कितना प्यारा.  
लगते सुंदर मनमोहन प्यारा,  
भोर होते मुर्गा देने लगा बाँग  
और चांद- तारे भी लगते छिपने  
पेड़-पौधे सभी झूमे धरती पर  
ठंडी सुरीली चली पवन भोर के  
भोर का सुंदर नजारा है कितना प्यारा,  
भोर के सुंदर नजारा है कितना प्यारा.  
सूरज की किरणें भी लालिमा बिखेर रही,  
चिड़िया चहचहाने लगी चहुँओर,  
और सभी जीव जंतु हो गए सचेत,  
करना है विचरण उन्हें हो गई अब भोर,  
भोर के सुंदर नजारा है कितना प्यारा,  
भोर के सुंदर नजारा है कितना प्यारा.

भोर होते ही सभी करो सैर  
और रखो स्वच्छ तन मन और निरोगी काया  
तभी दिखेगा सभी मोह माया  
भोर के सुंदर नजारा है कितना प्यारा,  
भोर के सुंदर नजारा है कितना प्यारा.

\*\*\*\*\*





## काला ताजमहल

रचनाकार- उपासना बेहार, भोपाल



हम सभी सफ़ेद ताजमहल के बारे में तो जानते ही हैं और उसकी खूबसूरती के दीवाने भी होंगे लेकिन क्या आपको पता है कि हमारे देश में एक काला ताजमहल भी है। यह काला ताजमहल मध्यप्रदेश के बुरहानपुर रेलवे स्टेशन से लगभग आठ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। बुरहानपुर एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक शहर है, जो खानदेश की राजधानी रहा है। इसे मुगलों की दूसरी राजधानी भी माना जाता है क्योंकि कई मुगल बादशाह जैसे अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ, औरंगजेब आदि यहाँ सूबेदार के रूप में पदस्थ रहे हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि आगरा के ताजमहल से पहले ही इस काले ताजमहल का निर्माण हो चुका था। ऐसा माना जाता है कि बादशाह शाहजहाँ ने काले ताजमहल को देखने के बाद ही आगरा में ताजमहल बनाने का फैसला लिया है।

काला ताजमहल अब्दुल रहीम खानखाना के बड़े बेटे शाहनवाज खान का मकबरा है। शाहनवाज खान बहुत बहादुर था जिसके कारण उसे मुगल फौज का सेनापति नियुक्त किया गया था लेकिन बेहद कम आयु में उसकी मौत हो गयी। उसे बुरहानपुर की उतावली नदी के किनारे दफनाया गया। इसके थोड़े समय बाद ही शाहनवाज की पत्नी की भी मौत हो गई, उसे भी शाहनवाज की कब्र के बगल में दफनाया गया। फिर जहाँगीर द्वारा 1622 से 1623 ईस्वी के बीच यहाँ काला ताजमहल बनवाया गया जो काले पत्थरों से बना है। इसका निर्माण ईरानी कला के अनुसार हुआ है जिसमें

अंदर सुंदर नक्काशी की गई है. इसकी आकृति चौकौर है, मकबरे के चारों तरफ छोटी-छोटी मीनारें हैं, बरामदा धनुष के आकार का है. बीच में एक विशाल गुम्बद है. महल के आगे एक बाग है.

अगर कभी आपको मौका मिले तो इस काले ताजमहल को देखने जरूर जाना.

\*\*\*\*\*



## डॉ. बाबासाहब अंबेडकर

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली



मन-ही-मन सोच रहा नन्हा भीम,  
भेदभाव, छुआ-छूत क्यों हावी है?  
कुआँ से पानी पी नहीं सकते हम,  
मानव-ही-मानव पर कुप्रभावी है.

मुक बधिर बनकर जीना पड़ रहा है,  
शिक्षा ग्रहण करना क्यों मनाही है?  
जिंदगी बीत रही है कुंठा, अवसाद में,  
मैं भुक्तभोगी, रोम-रोम अनुभवी है.

सामाजिक कुरीतियाँ देख संकल्पित,  
चुनौतियों का सामना कर आगे बढ़ूँगा.  
छठा प्रहर तक विद्या ग्रहण करना है,  
दुनिया की सारी ज्ञान पुस्तकें पढ़ूँगा.

लिखूँगा एक दिन भारत का संविधान,  
सबको स्वतंत्रता और अधिकार मिलेगा.  
एकता,अखंडता और भाईचारे का संदेश,  
समानता का सुवासित कुसुम खिलेगा.

\*\*\*\*\*



## बेंदरा पिला

रचनाकार- गुलज़ार बरेठ, जांजगीर चाम्पा



एक घ का होइस, एक ठन बेंदरा पिला ह आमा रुख के तरी म बईठ के रोवत रथे.

ओकर रोअइ ल सुन के भलूआ ह आथे, अउ कथे - का होगे रे बेंदरा, तै काबर रोअत हस ग. बेंदरा पिला ह अऊ किल्ला किल्ला के रोय लागथे.

ओकर रोवइ-गवइ ल सुनके हिरन आथे, अउ पूछथे- का जात बर रोत हस ग बेंदरा?

ओला भुलवारे बर हिरन ह कथे, चुप हो जा रे बेंदरा. तोर दाई ह तोर बर केरा लानत होही.

बेंदरा पिला ह रोत रोत, आमा कोती अंगठी बताके कथे- मोला केरा नई, मोला ओ पक्का आमा चाही.

तहा के भलूआ ह पक्का आमा ल टोरे बर कूदथे, फेर ओ ह नई अमरावय. काबर के ओ पक्का आमा ह अत्ति ऊपर म फरे रथे. तहा के हिरन ह कूदथे फेर उहूँ ह नई अमरावय.

ओकर रोअइ ल सुनके लोमड़ी अइस, उहूँ कूद देखथे, फेर उहूँ नई पइस. एति बेंदरा पिला ह चुपे नई होत रहय. ओकर रोअइ ल सुनके बघवा ह घलो आ जाथे. बेंदरा ल चुप कराय बर उहूँ कुद देखथे, फेर उहूँच ह नई हबराय. तहा के हाथी आथे, उहूँ अमर देखथे फेर उहूँ ह नई पाय.



ओ करा के हल्ला गुल्ला ल सुनके उल्लू ह लेंगडावत आथे. भलूआ ह उल्लू ल जम्मे बात ल बताथे. अब तै ह एकर उपाय बता ग सियनहा बबा. का करिन हमन?

उल्लू बबा ह थोर कन सोंचथे तहा के कथे- एक काम करा. हाथी ह पहिली खड़ा हो जाय. ओकर ऊपर म भलूआ ह, ओकर ऊपर म बघवा ह, अउ ओकर ऊपर म लोमड़ी ह, तहा के हिरन ह खड़ा होके छलांग लगाही त ओ आमा ल हबरा जाही.

सबे झन उसनेच करथे. पहिली हाथी ल खड़ा करिन, ओकर उपर म भलूआ ल, भलूआ के उपर बघवा ल, बघवा के उपर लोमड़ी ल.. तहा के लोमड़ी के उपर हिरन ह खड़े हो जाथे अउ आमा ल टोरे बर जोर से छलांग लगाके कुद देथे. हिरन ह आमा ल हबरा जाथे और टोर डारथे. फेर ए का ! हिरन ह छलांग लगाथे त लोमड़ी ह एति डबरा के चिखला म मुड़भर्रा गिर जाथे अउ चिखला म फेदफेदा जाथे. ओला चिखला म फेदफेदाय देख के बेंदरा पिला ह जोर से हास डारथे. बेंदरा पिला ल हासत देखके कोन्हो अपन हासी ल रोके नई पावय अउ सबे झन खलखला-खलखला के हाँसे लागथे.

तहा के हिरन ह बेंदरा पिला ल आमा ल दे देथे, अउ बेंदरा पिला ह आमा ल चूहक चूहक के मजा ले ले के खाथे.

\*\*\*\*\*



## नवा जतन

रचनाकार- योगेश्वरी तंबोली जांजगीर



21वीं सदी का कौशल लाना है,  
सीखने को कैसे सीखना है,  
यह शिक्षण शास्त्र बताना है,  
तो नवा जतन अपनाना है.

बच्चों को तेज गति से सीखाना है,  
तार्किक, चिंतनशील बच्चे बनाना है,  
अधिक आत्म विश्वास लाना है,  
तो नवा जतन अपनाना है.

पहले इस्तेमाल किया फिर जाना है,  
नवा जतन का 6 नुस्खा जादू का खजाना है,  
मैंने परिणाम देखा तो माना है,  
नवा जतन अपनाना है.

बच्चों को स्वयं सीखने के लिए प्रेरित करते जाना है,

स्वयं से अधिक सीखने के लिए चुनौती आजमाना है.  
विषय मित्र, गली मित्र, पियर लर्निंग कराना है,  
नवा जतन अपनाना है.



जिज्ञासा का सम्मान कर, जिज्ञासु बनाना है.  
सीखने में टेक्नोलॉजी का उपयोग बढ़ाना है.  
सेल्फीविथ सक्सेज लेकर आत्मविश्वास जगाना है.  
नवा जतन अपनाना है.

\*\*\*\*\*



## मोटर गाड़ी मेरे यार

रचनाकार- गुलज़ार बरेठ, जांजगीर चाम्पा



मोटर गाड़ी मेरे यार  
खिलौनो से है मुझको प्यार  
साइकिल बाईक में है बड़ा दम  
चलाऊ इसको मैं हरदम

कार बस की बात निराली  
मैं तो करता इनकी सवारी  
जेसीबी से गड्ढा करता  
ट्रेक्टर से मैं रेत को भरता

छप छप करके नाव चलाता  
छुक छुक करके रेल चलाता  
हेलीकाप्टर में उड़ता मैं



हवाई जहाज में सैर करता मै

ट्रक में डीजे बजाता मै  
बंदर भालू को नचाता मै  
चोरी लड़ाई जब हो जाए  
पुलिस गाडी तुरंत आ जाए

हो जाए जब कोई टक्कर  
एम्बुलेंस मारे फिर चक्कर  
तुम भी आओ गाड़ी चलालो  
मस्ती करो और धूम मचालो

\*\*\*\*\*



## अब मेहनत की बारी है

रचनाकार- सृष्टी प्रजापति, कक्षा -सातवी, स्वामी आत्मानंद तारबहार



सपना है तो सच भी होगा.  
आज नहीं तो कल भी होगा.  
रात के बाद ही सबेरा आता है.  
कड़ी मेहनत के बाद व्यक्ति फल पाता है.

मेहनत कर तू अब तेरी बारी है.  
कब से माता-पिता पर बोझ - सा भारी है.  
दुनिया आवाज दे रही है, जा तू.  
दुनिया को देखने की, अब तेरी बारी है.

गुरुओ का ज्ञान साथ लेकर ही जाना.  
उनका ऋण सभी पर भारी है.  
बिना गुरुओ के ज्ञान के तु .  
बिना आत्मा के शरीर के भाँती है.



चल अब सपनों को सच करने के रास्ते पे.  
फूलों के जगह काँटों को स्वीकार करते हुऐ रास्ते पे .  
दुनिया की सौ पहेली सुलझा ले तु मिल जाएगी कामयाबी.  
विश्वास नहीं है तो, करके आजमा ले तु.

\*\*\*\*\*





## मुस्कान

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र



मुस्कान में पराए भी अपने होते हैं  
अटके काम पल भर में पूरे होते हैं  
सुखी काया की नींव होते हैं  
मानवता का प्रतीक होते हैं

स्वभाव की यह सच्ची कमाई है  
इस कला में अंधकारों में भी  
भरपूर खुशहाली छाई है  
मुस्कान में मिठास की परछाई है

मुस्कान उस कला का नाम है  
भरपूर खुशबू फैलाना उसका काम है  
अपने स्वभाव में ढाल के देखो  
फिर तुम्हारा नाम ही नाम है



मीठी जुबान का ऐसा कमाल है  
कड़वा बोलने वाले का शहद भी नहीं बिकता  
मीठा बोलने वाले की  
मिर्ची भी बिक जाती है

\*\*\*\*\*



## गरमी काबर आथे

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा



दाई काबर आथे गरमी?  
बरतै एक न येहा नरमी.  
सूरुज तातेतात उछरथे,  
धरती चटचट नँगते जरथे.

काबर झरफर झाँझे झोला?  
चिटिक सुहावय नइ तो मोला.  
काबर ये नौटप्पा आथे?  
अगिन बरोबर देह जराथे.

घाम सहय तब आमा पाकय,  
मीठ कलिंदर तात म पागय.  
रुखराई नइ धीरज खोवय,  
सहिके नवा पान उलहोवय.

बात सुजानिक दाई कहिथे,  
जौन पोठ गरमी ला सहिथे.

उही सरी सुख, जिनगी पाथे,  
छँइया बइठे बड़ पछताथे.

\*\*\*\*\*



## मेहनत की कमाई

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी



सिविल कोर्ट के बाहरी अहाते में बहुत सारे दस्तावेज लेखक टेबल में टाइपराइटर रख कर बैठे थे. वे सभी किसी ना किसी दस्तावेज को टाइप करने में व्यस्त थे.

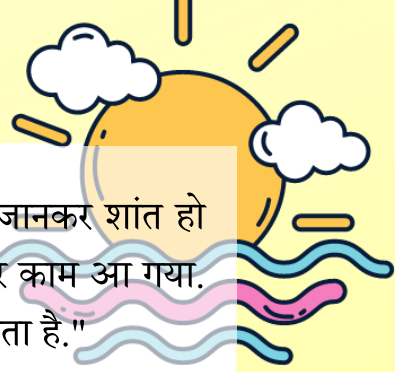
बंशीलाल जी की जमीन के कुछ भाग पर किसी व्यक्ति ने अवैध निर्माण कर लिया था. अपनी अपील टाइप करवाने के लिए किसी दस्तावेज लेखक की तलाश करने लगे. तभी एक 65 वर्षीय बूढ़ी महिला हाथ हिला कर उन्हें अपने पास बुलाने लगी. वह बहुत स्पीड के साथ उनके दस्तावेज टाइप करती जा रही थी.

बंशीलाल ने कहा-" अम्मा !मुझे आपको देखकर ऐसा लगा कि यह दस्तावेज आप नहीं लिख पाओगी लेकिन आपकी स्पीड देख कर मैं बहुत आश्चर्य चकित हूँ."

अम्मा -"सभी ऐसा ही समझते हैं और मुझसे टाइप कराने में संकोच करते हैं."वह मुस्कराते हुये बोली.

बंशीलाल-" आपकी उम्र घर में रहकर आराम करने की है. आप इस जगह पर कैसे काम कर रही हैं?"

अम्मा-"कभी कभी वक्त की मार बड़ी जबरदस्त होती है.जब इकलौते बेटे ने अपने साथ रखने से मना कर दिया, तब मैंने एक टाइपराइटर बचत के पैसे से खरीद लिया और यहाँ आकर बैठने



लगी.कुछ लोगों ने यहाँ बैठने पर विरोध भी किया किंतु बाद में मेरी मजबूरी जानकर शांत हो गये.मैं अपने समय की मैट्रिक पास हूँ.टाइप राइटिंग भी सीखी थी बस वही हुनर काम आ गया. यहाँ बैठने से इतनी आय हो जाती है कि बूढ़ा- बूढ़ी का खर्चा आराम से चल जाता है."

उसने अपनी जीवन व्यथा सुनाकर एक ठंडी आह भरी.

बंशीलाल ने उसकी तरफ 500 रुपये का नोट बढ़ा दिया.

अम्मा ने बाकि चार सौ रुपये लौटा दिये.

बंशीलाल- "इसे रखो अम्मा!"

अम्मा- "नहीं बेटा! तुम भगवान स्वरूप सुबह सुबह मुझसे टाइप करवाने आये.यही मेरे लिये बहुत बड़ा उपहार है.जब तक शरीर में जान है ,मैं मेहनत की कमाई खाती रहूंगी."

बूढ़ी माँ ने हँसते हुये जवाब दिया.

बंशीलाल ने देखा उसके चेहरे पर स्वाभिमान की अद्भुत कांति थी.

\*\*\*\*\*





## मन को सदा लुभाती तितली

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत



जब बागों में आती तितली,  
मन को खुश कर जाती तितली.

रंग- बिरंगे पंखों से वह,  
मन को सदा लुभाती तितली.

पल- पल जब मुस्काते फूल,  
चुपके पंख रंगवाती तितली .

फूलों से क्या- क्या बतियाती,  
लगता है प्रेम जताती तितली.

इधर- उधर उड़ जाती तितली,  
नहीं पकड़ में आती तितली.

देखो तो खिल जाता है मन,  
लगता प्रीत जगाती तितली.

\*\*\*\*\*





## गुडहरिया अउ सांप

रचनाकार- श्रीमती नंदिनी राजपूत



एक ठन झोपड़ी मा एक ठन खोंदरा रहीस जी. ओमा दु ठन गुडहरिया चिरई अउ ओखर चार ठन पिला मन रहत रईस. उ मन अब्बड़ खुशी-खुशी-खुशी रहत रहिन जी.

एक दिन के बात आए जी चिरई के पीला ल भूख लगिस, तो ओखर बर दाना लए बर ओखर ददा ह बाहेर तिर चल दिस.

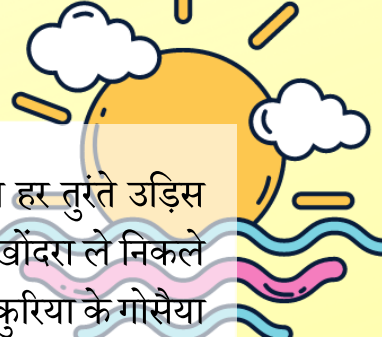
जब दाना लेके वापस आइस त देखिश कि पिला के दाई ह झोपड़ी के चारों तिर तिलमिलात उड़त हे. ओला तिलमिलात उड़त देख के पिला के ददा ह कहिथे - तै काबर तिलमिलात बाहेर तिर उड़त हस. त पिला के दाई ह कहिथे - एक ठन सांप ह हमर पिला ल खा ले हे अउ अब खोंदरा म पलथियाए हे.

पिला के ददा ह रोअत कहिथे - तै हर काबर कुछू नई करे.

पिला के दाई ह कहिथे - मैं हर सांप ल अब्बड़ चेताए रहे हव. पर ओ हर कह दिस,, मैं हर कोखरो से नई डरव.

पिला के ददा ह कहिथे - अब तै कुछू चिंता झन कर, मैं हर कुछु करत हव.





कुछ बछर बाद पिला के ददा ह झोपड़ी के गोसैया ला दिया जलात देखिस ओ हर तुरंते उड़िस अउ दिया ला छिन के खोंदरा मा डाल दिस. खोंदरा मा आग लग गईस. सांप हर खोंदरा ले निकले के अब्बड़ कोशिश करिस पर नई निकल सकिस. अपन झोपड़ी ला जलत देखके कुरिया के गोसैया ह खोंदरा ला नीचे तिर दिस अउ सांप ला देखते ही लाठी मा पिट पिटके मार डालिस.

ये किस्सा से हमन ला यही सीख मिलथे कि हमेशा बुद्धि से काम लेना चाही.

\*\*\*\*\*





## भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 ए		2			3 प		4		5 ख
		6 रा	7				8 त		
9		10 र		11				12 बो	
		13			14		15 र		
	16 सु			17 लु					18 ग
19 दु						20 प			
21				22 हा					
		23 का				24 न			
25 सु					26 गु				

## बाएँ से दाएँ

1. इतना 3. जूता 6. थप्पड़
8. खीर 9. त्यौहार 11. ढँक
12. जिसका दांत टुटा हो
13. अहाता 14. जिद्धी 16. तोता
17. छूपा 19. दरवाजा
20. पान दुकान वाला 21. लकड़ी काटने का औजार
- हड्डी 23. किसलिये 24. रम्भाना
25. सुखी इन्सान
26. गुड़ से बना

## पिछले भाखा जनऊला के उत्तर

1 भो	भ	ला		2 आ	खु	र		3 फ	रा
ज			4 आ	घु				ई	
5 ली	मा	6 न		पा		7 भ	8 भ	का	
		9 क	र	छू	10 ल		लु		11 बा
12 च	रों	टा			13 ग	लु	वा	14 मा	य
न			15 घु	घ	वा			16 खु	र
वा			र		17 र	18 ख	वा	र	
19 री	20 सा	य		21 घुं		वा			22 स
	क		23 बा	च	24 ल			25 गु	र
26 गु	र	मे	ट		27 घे	न	घे	न	हा

## ऊपर से नीचे

1. एक ही जाति वर्ग का 2. केला
3. कुश्ती, उठा पटक
4. हितैषी 5. पशुओं का झुण्ड
7. हाँ 10. रखवाली, 12. उठाने में सहयोग
15. रतनपुर का रहने वाला 16. पत्नी
17. ललचाना 18. गुस्से में कहना
19. पासा में दो अंक आना 23. शरीर
24. मादा का विलोम